श्रीकृष्णकर्णामृतम्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सेवामें,

संपादकमहोदय,

'वाणीसरोवर',

भुवनवाणी ट्रस्ट,

लखनऊ।

अभिप्रायार्थं सादरं —

प्रमोद [illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लीलाशुकविरचितं

श्रीकृष्णकर्णामृतम्

★

अनुवादक :—

डा. प्रमोद गणेश लाले

एम. ए. (संस्कृत), एम. ए. (हिन्दी), पी. एच्. डी. (संस्कृत)

रीडर, संस्कृत विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद.

★

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ

नवंबर १९७१

मूल्य–तीन रुपये पचास पैसे

मुद्रण : दक्षिण भारत प्रेस,

खैरताबाद, हैदराबाद-४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

भारतीय आर्ष परंपरा में चतुर्विध पुरुषार्थ की परम सीमा है मोक्ष और इसके आश्रय है, स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण । वे विश्वात्मा हैं, सब प्राणिमात्रों के अंतर्यामी हैं । उनका साक्षात्कार करने के लिए विविध पद्धतियों का प्रणयन भारतीय चिंतन ने किया था । यज्ञ मार्ग, ध्यान मार्ग, कर्म मार्ग, इत्यादि अनेक मोक्षोपायों की चर्चा तथा अनुशीलन भारत वर्ष में एक अरसे से चला आ रहा था । फिर भी कई चिंतकों को एक कमी खटक रही थी । वह थी उस विश्वात्मा के साक्षात् दर्शन के सुलभ उपाय । वे ऐसे कोई उपाय ढूँढ निकालना चाहते थे, जिनके द्वारा असीम अगोचर सत्ता का इसी जीवन में दर्शन किया जा सके । इस लिए अनेक प्रयत्न शुरू हुए और उनके फलस्वरूप 'भक्ति' का उद्भव हुआ ।

यद्यपि भक्ति तत्त्व वेदों, उपनिषदों तथा महाकाव्यों में उपलब्ध होता है, उसका पल्लवन पुराणों में ही हुआ । फलस्वरूप निर्गुण ब्रह्म की उपासना कुछ व्यक्तियों और साधकों तक सीमित रह गयी, और जनसामान्य का मानस सगुण, साकार, लीलारूपधारी भगवान् की ओर आकृष्ट हुआ । यद्यपि यह परमैश्वर्यशाली भगवान् विविध लीलारूपों में गोचर होते हैं (जैसे कि राम, शिव विष्णु), उनका 'विष्णु' रूप ही अधिक लोकप्रिय हुआ । भारतीय भक्तिभावना एवं भक्ति साहित्य का विकास विष्णु के पूर्णावतार, कृष्ण के आश्रय से हुआ है । महाभारत के नारायणीय आख्यान तथा समकालीन पांचरात्रसिद्धान्त को, कृष्ण भक्ति का मूलकंद समझा जा सकता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है । इस पांचरात्र संप्रदाय में विष्णु की कृष्ण, नारायण या वासुदेव के रूप में भक्ति करने की परंपरा का उदय हुआ । यह भक्तिपादप पुराणों में फलने फूलने लगा और उसका अत्यंत मधुर फल सिद्ध हुआ भागवत पुराण ।

महाभारतादि ग्रंथों में जो भक्ति का सूत्रपात हुआ था उसी को भागवत ने आख्यानों और उपाख्यानों द्वारा गुणरूप प्राप्त करा दिया । दर्शन, भक्ति एवं कथा— इन तीनों का दिव्य संगम भागवत पुराण में हुआ है । बारहवी सदी से भारत में जो भक्ति साहित्य की बाढ़ सी आ गई, उसका मूलस्थान निःसंदेह भागवत ही है । प्रह्लाद, नारद, ध्रुव, अजामिल, गजेंद्र, सुदामा आदि भक्तों के उपाख्यान भगवद्भक्ति की महिमा को बताते हैं । उधर नारद-ब्रह्मा, विदुर-उद्धव, बिदुर-मैत्रेय, कपिल-देवहुति, कृष्ण-उद्धव आदि संवादों के द्वारा भक्ति के दार्शनिक पक्ष का सुंदर विवेचन किया गया है ।

परन्तु भागवत में भक्ति की और एक विशेपता दृष्टिगोचर होती है, जिसका पूर्ववर्ती पुराणों में अभाव सा ही है । विद्वानों ने उसको 'मधुरा भक्ति' कहा है । पत्नी अपने पति से या प्रेयसी अपने प्रियतम से जिस तन्मयता से प्रेम करती है, वह तन्मयता यदि भगवद-भिमुख हो जाय, तो उसे 'मधुरा-भक्ति' कहा जा सकता है । इसी का वर्णन कुछ भक्तिसूत्रों एवं परवर्ती भक्तिशास्त्रीय ग्रंथों में किया गया है ।

नारद भक्तिसूत्र में गोपीप्रेम का आदर्श बताया गया है । भक्ति के स्वरूप का विवेचन करते हुए नारद कहते हैं—

सा त्वस्मिन् परममेमस्वरूपा ।

अमृतस्वरूपा च ।

यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति भवत्यमृतो भवति तृप्तो भवति । यत्प्राप्य न किञ्चिद् वाच्छति न शोचति न द्वेष्टि न रमते नोत्साही भवति ।

यज्ज्ञात्वा मत्तो भवति स्तब्धो भवति आत्मारामो भवति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इनमें भक्ति की चरम अवस्था में भक्त की मनःस्थिति किस किस तरह आनंदमयी बनती है, इसका वर्णन किया गया है ।

इस भक्तिभाव के लिए नारद ने गोपियों का ही उदाहरण दे कर यह बतलाया है कि गोपियों की अनन्यमनस्कता, और उनकी विरह व्याकुलता भक्ति के उच्च आदर्श हैं ।

नारदस्तु तदर्पिताखिलाचारता तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति । अस्त्येवमेव । यथा व्रजगोपिकानाम् ।

गोपियों का कृष्ण से जो अनुराग था, उसकी चार विशेषताएँ इन सूत्रों में स्पष्ट होती हैं—

१) तदर्पिताखिलाचारता—गोपियों ने विवाहित होने पर भी अपना सर्वस्व श्रीकृष्ण को अर्पण किया था । इसलिए उनकी वृत्ति तदाकार अर्थात् कृष्णमय बन गयी थी ।

२) तद्विस्मरणे परमव्याकुलता—कृष्णविरह से गोपियाँ बहुत व्यथित हुआ करती थीं । भागवत की रासपंचाध्यायी इसका उदाहरण है ।

३) माहात्म्यज्ञान—गोपियाँ यद्यपि श्रीकृष्ण के साथ प्रणय करती थीं, वे इस बात को कभी नहीं भूलती थीं, कि श्रीकृष्ण एक अलौकिक अवतार धारण करने वाला परमात्मा ही है ।

४) तत्सुखसुखित्वम्—गोपियों ने अपनी सब वृत्तियाँ श्रीकृष्ण को ही समर्पित की थीं । अतः उसके भौतिक सुख से वे सुखी होती थीं, और उसके भौतिक दुःख से वे दुःखी होती थीं ।

इन सबका विस्तृत परिपोष भागवत में, विशेषत भागवत के दशमस्कन्ध में हुआ है ।

गोपियाँ जिन विविध पद्धतियों से कृष्ण की भक्ति करती थीं, उनको भागवतकार ने नौ नाम दिये हैं । ये बाद में 'नवधा भक्ति' नाम से विख्यात हुए । वे नौ नाम इस प्रकार हैं—

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भागवतोत्तर काल में भक्ति का आन्दोलन पूरे भारतवर्ष में व्याप्त हुआ, और संस्कृत एवं अन्य देशी भाषाओं में भक्तिपरक सैकड़ों नहीं हज़ारों ग्रंथ लिखे गये। यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए कि भक्ति आंदोलन के लिए जिस दार्शनिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता थी, उसकी पूर्ति अनेक वेदांती आचार्यों ने की थी। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य,, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य आदि आचार्यों ने एक ओर तर्कनिष्ठ भाष्य लिखे, तो दूसरी ओर अनगिनत मधुर स्तोत्रों की रचना की। हाँ, भक्ति मार्ग जन साधारण के लिए खुल गया था अवश्य, लेकिन उसके माधुर्य से बड़े बड़े आचार्य भी अस्पृष्ट नहीं रह सके। इस तरह भक्ति रस को, विशेष कर, कृष्ण भक्ति रस की मधुर गंगा को, अनेक दिशाओं से भिन्न भिन्न प्रवाह आ मिले और यह विशाल प्रवाह सबको पावन करते हुए भारत देश में बहने लगा।

इस भक्तिमार्ग में मनुष्य जीवन को दुःखमय या हेय नहीं समझा गया। परमात्मा रस रूप है। (रसौ वै सः ।) उस रस का आस्वादन करना हो, तो अपना सर्वस्व खो, किंबहुना अपने दुर्गुणों या विकारों को, भी कृष्ण की ओर मोड़ दिया जाना चाहिए। अन्य किसी बात की परवाह न करते हुए केवल श्रीकृष्ण से ही मन का लगाव हो, तो सब दुःखों का क्षय हो जाता है और वह भक्त परमानन्द का अधिकारी बन जाता है। यही सूत्र है भागवत एवं तत्सदृश भक्ति परक ग्रंथों का।

उदाहरणार्थ, भागवत के ही ये श्लोक देखिए—

कामाद् द्वेषाद् भयाद् मोहान् स्नेहाद्यथा भक्तेश्वरं
मनः।
आवेश्य तदघं हित्वा बहवस्तद्गतिं गताः ॥
गोप्यः कामाद् भयात्कंसो द्वेषाच्चैद्यादयो नृपाः।
सम्बन्धाद् वृष्णयः स्नेहाद्यूयं भक्त्या वयं प्रभो ॥

(भागवत, ७·०·३९)

नारद ने जिस भक्त को 'कान्तासक्ति' नाम दिया और भागवत में जो गोपीप्रणय से पुष्ट हो गई, उसी भक्ति का मधुर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आविष्कार गौड वैष्णव संप्रदाय में हुआ। यह साहित्य अनेक विधाओं में जनता के सामने आ गया। देशी भाषाओं में कृष्ण भक्ति का साहित्य मुक्तकों में गुंफित हुआ। इन मुक्तकों का ही भव्यतम रूप है स्तोत्र।

'श्रीकृष्णकर्णामृत' का अंतर्भाव स्तोत्र-साहित्य में किया जा सकता है। स्तोत्र साहित्य का प्रयोजन है, इष्ट देवता का गुणगान करना। पुराणों एवं अनेक सांप्रदायिक ग्रंथों में भिन्न भिन्न देवताओं की स्तुति पाई जाती है। उनमें भक्तिभाव उमड़ उमड़ कर फूट पड़ा है। स्तोत्र लेखक अपने आंतरंगिक विचारों को निर्भीकता से ग्रथित करता है। वह अपने दैत्य को, इष्ट देवता से मिलने की इच्छा को एवं भक्तस्वरूप में विलीन हो जाने की आतुरता को बहुत ही करुणामय शब्दों में प्रकट करता है। इसके साथ इष्ट देवता के कार्य और उसके माहात्म्य का भी आकर्षक शैली में वर्णन करता है। स्तोत्र साहित्य की परंपरा संस्कृत साहित्य में आज तक अप्रतिहत रीति से चलती आ रही है। कृष्ण के संबंध में तो सैकड़ों स्तोत्र रचे गये हैं। परवर्ती स्तोत्रों में अनुप्रास, यमक, उपमा, काव्यलिंग आदि अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इन स्तोत्रों में प्रसंगानुकूल भिन्न भिन्न वृत्तों का प्रयोग करके स्तोत्र के श्लोकों को गेयता प्रदान करता है। किंबहुना, भावपूर्णता और गेयता के कारण ही स्तोत्र साहित्य बहुत ही विख्यात हो गया। यह काव्य विधा आत्माश्रयी काव्य का सुंदर उदाहरण माना जा सकता है।

भागवत के स्तोत्रों में कृष्ण का दिव्य रूप, उसकी दिव्य शक्ति, उसका अलौकिक सौंदर्य और उसकी भक्तों का उद्धार करने की करुणामयता का वर्णन किया गया है। कृष्ण स्तोत्रों की ये सब विशेषताएँ 'कृष्णकर्णामृत' में परिलक्षित होती हैं। यद्यपि यह ग्रंथ केवल कृष्ण स्तुति परक नहीं है, उसमें कृष्ण लीलाओं का वर्णन भागवत की वर्णन शैली से मिलता-जुलता है। इसमें गोपियों की अनुरागिणी वृत्ति, उनकी विरह बाधा और कृष्ण के अप्रतिम माधुर्य का वर्णन भागवत के अनुसार ही हुआ है। भागवत के भ्रमर गीत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का उल्लेख इसमें नहीं है। रास क्रीड़ा के निदर्शक कुछ श्लोक दूसरे आश्वास में आये हैं। उसकी बाँसुरी की मधुर तानों तथा उसकी वेषभूषाओं के उल्लेख यत्र तत्र आये हैं। स्तोत्र के रचयिता लीला-शुक ने जगह जगह उस कृष्णचन्द्र को देखने एवं उसकी लीलाओं का रस ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की है। इस तरह 'कृष्णकर्णामृत' काव्य मधुराभक्ति के उद्गाताओं के लिए भागवत के समान ही आदर्श रहा है। गीत गोविंद और हिन्दी-बंगाली वैष्णव संतों की साहित्यिक रचनाओं पर इस स्तोत्र काव्य का प्रभाव, अप्रत्यक्ष रीति से ही क्यों न सही, ज़रूर पड़ा है।

वैष्णव संप्रदायमें एक बात विशेष रूप से बताई गई है। 'मद्-भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति' के भागवतके कथन के अनुसार जब कोई भक्त भक्तिका आलंबन लेकर अनन्यचेता बन जाता है, तब न केवल विश्वपावन बन जाता है, अपितु स्वयं नारायणको उसके हृत्कमलका आवास बनाकर वहाँ रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसका दिग्दर्शन भागवतमें इस तरह किया गया है—

निखिलभुवनमध्ये निर्धनास्तेऽपि धन्या
निवसति हृदि येषां श्रीहरेर्भक्तिरेका।
हरिरपि निजलोकं सर्वथाऽतो विहाय
निवसति हृदि तेषां भक्तिसूत्रोपनद्धः॥

और इस स्थितिके उत्पन्न होते ही—

भक्तिस्त्वयि स्थिरा भगवन् यदि स्या-
द्दैवेन कल्पितदिव्यकिशोरवेषे।
मुक्तिः स्वयं मुकुलिताञ्जलि सेवत्तेऽस्मान्
धर्मार्थकामगतयः समयप्रतीक्षाः॥

इस विचारधारा के परिणामस्वरूप मुक्तिसे भी श्रेष्ठ भक्ति की ओर व्यक्तियोंका आकर्षित होना स्वाभाविक ही था।

भागवतादि कृष्णभक्तिप्रवण ग्रंथों ने इस धारणाको दृढ़ बनाया कि भक्तिकी साधना के लिए शमदमादि साधनसंपत्ति की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी भगवद्गुणगान, नामस्मरण, लीला-चिंतन आदि की है।

जनता की उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्मरूपमें जो आस्था थी, वह पुराणवर्णित कृष्ण की श्रद्धा से परिपुष्ट होकर माधुर्यभाव के आलंबन, लोकरंजकरूप की ओर अग्रसर हुई।

कृष्णभक्ति की ओर प्रायः सभी अनुरागी जनों ने श्रीकृष्ण के माधुर्यमंडित रूपको आत्मतोषकारक मानकर अपनाया और उसको परिपुष्ट किया रसप्राण कवियों ने। भागवत के दो प्रसंग–गोपीगीत और भ्रमरगीत-इतने लोकप्रिय हुए कि इन्हीं दो प्रसंगों के आधारपर अनेक भाषाओं में सैंकड़ों काव्य लिखे गये।

श्रीकृणलीला के वर्णन के अंतर्गत माधुर्य के साथ-साथ वात्सल्य का भी मनोरम परिपोष हुआ। भागवतपर आधारित गीतगोविन्द आदि काव्यों में कामुकताकी भावना का भी उन्मेष हुआ। श्रीकृष्ण नायक और गोपियाँ परकीया नायिकाएँ बन गयीं। यद्यपि इन ग्रंथों में कामविलासकी चेष्टाएँ बताई गई हैं, उनका अश्लीलता में अवमूल्यन नहीं हुआ। भगवान् के अद्वितीय सौंदर्य से आकृष्ट होनेवाले भक्त उसकी सौंदर्याराधना करने और उसकी मुरली की मधुर ध्वनि सुनने में ही जीवन की कृतार्थता समझने लगे। श्रीकृष्ण का गोपवेष, उसकी मुरली और उसकी दिव्यरूपमाधुरी, ये तीन अनेक काव्यों के मनोहर आलंबन बन गये हैं।

श्रीहरिभक्तिरसामृतसिंधुमें 'प्रेम' की परिभाषा इस तरह दी गई है –

सम्यङ्मसृणितस्वान्तो ममत्वातिशयाङ्कितः।
भावः स एव सान्द्रात्मा बुधैः प्रेम निगद्यते॥

(जिससे हृदय कोमल बनकर मनमें ममता की भावना पैदा होती है, उस भावको बुद्धिमान् लोग 'प्रेम' करते हैं।)

इस प्रेममें और कामुक आकर्षणमें महदंतर है। इस प्रेमसे जो भक्त उन्मत होता है, उसे भगवान् के रसिकरूप का साक्षात्कार होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गायों के चरानेवाले, गोपियों के साथ खेलनेवाले और बाँसुरी बजाने- वाले मनमोहन कृष्णका साक्षात्कार उसी भक्त को होता है। यह जो मनुष्य का रूपांतर है, उसको मिस् अंडरहिल ने इन शब्दो में बताया है –

We might describe it as a sudden, intense and joyous perception of God inmanent in the Universe; of the divine beauty and unutterable power and spledour of that lenger life in which the inbividual is immersed and of a new life to be lived by the self in correspondence with the now dominant fact of existence.

(Underhill, 'Mysticism'-P. 179)

प्रख्यात अध्यात्मविद् थाउल्सने एक ही वाक्य में कह दिया कि उदात्त रूपांतर क्या है– It is the religious sublimation of the entire instructive nature.

इस तरह के अनुभव के रसीले भक्त इस भारतवर्ष में काफ़ी संख्या मे हो गये हैं। इन्होंने अपने अनुभवों का आलंबन जो कृष्ण उसकी मधुर केलियों का सुंदर वर्णन किया है। उन भक्तों का शिखा- मणि है लीलाशुक था बिल्वमंगल।

× × ×

विद्वानों की धारणा है कि यह कवि बारहवी शती में केरल में पैदा हुआ था। उसकी जीवनी के बारे में बहुत कम प्रामाणिक जानकारी मिली है। यद्यपि यह कवि दक्षिण का था, उसकी ख्याति बंगाल में ही अधिक थी। उसने अनेक ग्रंथ लिखे थे। पर सबसे प्रमुख एवं प्रसिद्ध काव्य है 'श्रीकृष्णकर्णामृतम्' जिसका अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस ग्रंथ का रचयिता है 'लीलाशुक' मा 'बिल्वमंगल'। कहा जाता है कि वह तामिळ के प्रख्यात वैष्णवसंत कुलशेखरके समकालीन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था। इस काव्य के एक श्लोक से पता चलता है कि उसके पिता का नाम दामोदर था और माता का नीवी या नीली। अडयार हस्तलिखितों की पंजिका से पता चलता है कि लीलाशुक 'तन्त्रपद्धति' कार ईशानदेवका शिष्यथा। भागवत्पर ही टीका लिखनेवाला 'राघेवशान्ययति' उसका मित्र था। वह शिवभक्त था और उसका आराध्य देवता था श्वेतारण्यक्षेत्र या दक्षिणकैलास का 'मृत्युंजय। कहा जाता है कि वह बहुत दिनों तक मुक्तिस्थल में रहा था। इसी गाँवको आज 'मुक्कुत्तलै' कहते हैं जो मलाबार क्षेत्र में भारती नदी के किनारे बसा हुआ है। लीलाशुक श्रीकृष्णका परमभक्त था और कृष्ण के कीर्तन में वह अपने को बिलकुल भूल जाता था।

संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उस ने 'बिल्वमंगल'नाम धारण किया होगा। उसने त्रिचूर में एक मठ भी स्थापित किया। उस मठ के अधिपतियों को भी 'बिल्वमंगल' संज्ञा प्राप्त हुई। गड़के 'संप्रदाय-कुलदीपिका' नामक ग्रंथ में बताया गया है कि 'बिल्वमंगल' नामके तीन भक्त तामिळनाडु में, बनारसमें एवं ओरिसा में रहते थे। उनमें से एक ने १०८ श्लोकों वाला एक स्तोत्र लिखा था। वे सब वैष्णव भक्त थे। काशी में जो पैदा हुआ था उसके पहले जन्मका नाम माधवानल था, दूसरे जन्म का बिल्हण, तीसरे जन्मका बिल्वमंगल और चौथे जन्म का जयदेव। इस किवदन्तीसे यह धारणा बनती है कि विल्वमंगल जयदेव का पूर्ववर्ती था।

कुछ समय बाद बिस्वमंगल ने विष्णुस्वामी का अनुयायित्व-स्वीकार कर विष्णुस्वामी संप्रदाय के प्रचार के लिए ही सर्वस्व अर्पण किया। (देखिये, फर्कुहर: रिलिजस क्वेस्ट आफ इंडिया, पृ. २३८, ३०४, रामकृष्ण कवि: आंध्रपत्रिका, वार्षिक अंक, १९२२,२३- पृ. १७१-१७४.)

अडयार हस्तलिखितालिकाग्रंथ से पता चलता है कि बिल्व-मंगल ने और भी कुछ किताबें लिखी थीं। उसने भोज के 'सरस्वती-कण्ठाभरण' की भी टीका लिखीं है। उसने 'पुरुषकार' नामक एक दर्शनसंबंधी ग्रंथ लिखा है। उसमें उसने हेमचंद्र के नाम का उल्लेख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किया है। विद्यारण्य ने अपने ग्रंथ 'धातुवृत्ति' में उपर्युक्त टीका का उल्लेख किया है।

उसने कृष्णचरित्र का वर्णन करनेवाला 'श्रीचिह्नकाव्यम्' नामका एक महाकाव्य लिखा है जो बारह सर्गोंमें निबद्ध है। विद्वानों का कहना है कि उनमें से पहले आठ सर्ग वररुचि के 'प्राकृतप्रकाशमें' दिये गये लक्षणों के लक्ष्यों के रूप में लिखे गये थे। उसके शिष्य दुर्गाप्रसादयति ने शेष चार सर्गों में त्रिविक्रम के प्राकृतव्याकरण के उदाहरण दिये हैं।

डॉ. रत्नकुमारी भारती ने 'हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि' नामक अपने शोधग्रंथ में यह बताया गया है कि 'कृष्णकर्णामृत' यह दूसरा ग्रंथ है चिसे चैतन्यदेव दक्षिण देश से लाये थे। लेकिन इसकी पुष्टि के लिए सबल प्रमाणों की आवश्यकता है। कविराय कृष्णदासने अपने ग्रंथ 'चैतन्यचरितामृत' मे इसका उल्लेख इस प्रकार किया है –

कर्णामृत सम वस्तु नाहि त्रिभुवने।
जाते हैले ह्य शब्द कृष्णप्रेम जाने॥
सौंदर्य माधुर्य कृष्णलीलार अवधि।
ते जाने जे कृष्णामृत पढ़े निरवधि॥

(चैतन्यचरितामृत, मध्यलीला, परिच्छेद ९, पृ. १६८)

इसी कृष्णराज कविराज ने कृष्णकर्णामृत की टीका लिखी थी, जिसका नाम था 'सारंगरंगदा'। इसके अतिरिक्त और दो टीकाएँ उपलब्ध है–

१) गोपालभट्टकी 'कृष्णवल्लभा' टीका,
२) चैतन्यदासकी सुबोधिनी टीका।

(ये दोनों टीकाएँ ढाका विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं।)

यद्यपि लीलाशुक के संबंध में अधिक जानकारी आज नहीं प्राप्त हुई है, एक बात निश्चित है कि 'मधुराभक्ति' का रम्य आविष्कार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करनेवाला यह महान् कवि महान् भक्त भी था। 'श्रीकृष्णकर्णामृत' नाम सर्वथा यथार्थ है। दिव्य शृंगारका जो तरल, भावरम्य, और हृदय की पिपासा बढ़ानेवाला नितान्तमधुर रूप 'कृष्णकर्णामृत' में प्रस्तुत हुआ है, वह 'सद्यःपरनिवृति' का जनक अमृतसमान है ही; ब्रह्मानन्द-सहोदर भी है। इस काव्य के हर एक श्लोक में उस कृष्णकी लीलामाधुरीका गान है, जिसके बारे में लीलाशुकका स्वयं कथन इस प्रकार है–

या शेखरे श्रुतिगिरां हृदि योगभाजां
पादाम्बुजे च सुलभा व्रजसुन्दरीणाम्।
सा काऽपि सर्वजगतामभिरामसीमा
कामाय नो भवतु गोपकिशोरमूर्तिः।

कानोंको के लिए जो अमृततुल्य है, वह कृष्णामृत लीलाशुक या बिल्वमंगलकी रमणीयशैली का परिचायक, श्रीकृष्णरूपसुषमा का उन्नायक वह अमृत है, जिसका पान करते हुए तृप्ति के स्थानपर पिपासा ही वृद्धिगंत होती है।

यह काव्य तींन आश्वासों में विभक्त है। इसमें कवि ने रसानुकूल और प्रसंगानुकूल छन्दों का प्रयोग किया है। हरएक श्लोक मानों उस पुष्प के समान है, जिससे सौरभ भी निकलता हो और जिससे मकरन्द भी टपकता हो।

कवि ने भागवत में पायी जानेवाली कुछ कृष्णलीलाओं का वर्णन किया है, और कुछ लीलाओं का सर्जन अपनी प्रतिभा से किया है। उसका लीलावर्णन इन श्लोकों में विशेष आकर्षणीय हुआ-है।

१–२६,७१; २–३, ६, ७, ८, ९, १८, ३९, ४९, ५०, ५४, ५५, ५८, ६२, ६५, ६६, ८४, ८८, ९७, १००, ३–८२, ८७, ८८, ९३, ९४, ९६, १००.

कुछ श्लोकों में कल्पनावैभव बहुत ही हृद्य है। उदाहरणार्थ–

राधा पुनातु जगदच्युतदत्तचित्ता
मन्थानमाकलयती दधिरिक्तपात्रे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्याः स्तनस्तबकचञ्चललोलदृष्टि–
र्देवोऽपि दोहनधिया वृषभं न्यरुन्धत् ।। (२· २९)

और एक श्लोक देखिए–

कस्त्वं बाल बलानुजः किमिह ते मन्मन्दिराङ्शकया
युक्तं तन्नवनीतपात्रविवरे हस्तं किमर्थं न्यसेः ।
मातः कञ्चन वत्सकं मृगयितुं मा गा विषादं क्षणा-
दित्येवं वरवल्लवीप्रतिवचः कृष्णस्य पुष्णातु नः ।

कवि की बहुश्रुतता को दिव्य प्रतिभा का योग मिला है। कृष्ण की रूपमाधुरी हो, या उसकी लोकोत्तर प्रणयचेष्टाएँ हों, या उसकी बाँसुरी की उन्मादक ध्वनि हो, लीलाशुक की प्रतिमा ने उन सबका माधुर्य अपनी वाणी से मुखरित किया है। जयदेव के गीतगोविंद में लीलाशुककी भावलहरियाँ ही लहरा रही हैं। पाठक यह काव्य पढ़ते समय उस भावभूमि की ओर अग्रसर होता है, जहाँ तन्मयता है, कमनीय रूपकारी है, हृदय की उदात्त स्थिति है और सबसे बढ़कर वह आह्लादकता है, जहाँ से विलग होने की कल्पनातक मस्तिष्क में नहीं आती। इस कथन का आधार कवि की अपनी यह उक्ति है—

मम शिखण्डिशिखण्डविभूषणं
मदनमन्थरमुग्धमुखाम्बुजम् ।
व्रजवधूनयनाञ्चलवञ्चितं
विजयतां मम वाङ्मयजीवितम् ।।

इस छोटीसी भूमिका में कृष्णकर्णामृत के हर एक श्लोक का रसग्रहण करना असंभव-सा है। रसिक पाठक स्वयं वह काम कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह काव्य पढ़ते- पढ़ते रसिकों की अवस्था उस गोपी के समान होगी, जो–

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या
मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दध्यादिकं मोहवशादवोचद्
गोविन्द दामोद्र माधवेति ॥

'श्रीकृष्णकर्णामृत' का यह अनुवाद हिन्दीभाषी बंधुओं की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। दक्षिण की भाषाओं में उसके बहुत से अनुवाद (गद्य तथा पद्यरूपमें) हुए हैं। यह अनुवाद करते समय श्लोक का भाव स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। मूल में जहाँ लंबे लंबे समास हैं, उनका अनुवाद करते समय स्वतंत्र वाक्य बनाये गये हैं। बहुतसी जगहों पर शब्दसंहतिकी पुनरावृत्ति हो गयी है। वहीं कहीं हिन्दी वाक्यों की रचना क्लिष्ट-सी हुई क्यों कि मैंने मूल श्लोक के भाव को यथासंभव वैसे ही रखने का प्रयत्न किया है। किताब विशिष्ट समय के अंदर छापने की जल्दी में कुछ मुद्रण दोष रह गये होंगे।

उनके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। अनुवाद के संबंध में पाठकगण कुछ सूचनाएँ भेजें, तो उनका सहर्ष स्वागत किया जाएगा।

ऋणनिर्देश :

अनुवाद करते समय मुझे कई मित्रों सहयोग प्राप्त हुआ है। मेरे मित्र डॉ. भीमसेन निर्मल (रीडर, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) और डॉ. पुल्लेल श्रीरामचंद्रुडु (रीडर, संस्कृत विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) की सूचनाओं एवं निर्देशों से मैं बहुत ही लाभान्वित हुआ हूँ। डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री (अध्यापक, सरदार पटेल महाविद्यालय, सिकंदराबाद) ने आमुख लिखते समय कुछ महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दे कर मुझे उपकृत किया है। डॉ. रामनिरंजन पांडेय (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) और डॉ. भीमसेन निर्मलजी ने अपने अभिप्राय लिख कर पुस्तक की शोभा बढ़ाई है। डॉ. श्रीधरराव कुलकर्णी (अध्यक्ष, मराठी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ने अनेक मूल्यवान् सूचनाएँ दे कर मुझे अनुगृहीत किया है। इन सब मित्रों और आचार्यो का मैं बहुत ही आभारी हूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विख्यात चित्रकार श्री बलरामाचार्यजीने मुखपृष्ठ को सुशोभित किया है। अनेक विघ्नों के होते हुए भी दक्षिण भारत मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्री चिदंबररावजी और उनके सहयोगियों ने छपाई का काम निर्दिष्ट समयमें पूरा किया। इन सज्जनों के प्रति मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में मेरे श्यालवर श्री सदाशिव रघुनाथ राजगुरु, अहमदाबाद की मुझे विशेष सहायता प्राप्त हुई है। मैं उनकी उदारता को कभी नहीं भूल पाऊँगा।

अन्त में मैं उस बालरूपधारी भगवान् श्रीकृष्ण से लीलाशुक के ही शब्दों में, यह प्रार्थना, करता हूँ—

कमनीयकिशोरमुग्धमूर्तेः
कलवेणुक्वणितादृताननेन्दोः।
मम वाचि विजृम्भतां मुरारे-
र्मधुरिम्णःकणिकाऽपि क्वापि क्वापि ॥

-- इति शम् --

४०, जीरा,
सिकंदराबाद.

प्रमोद गणेश लाले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्मतियाँ —

१) डॉ० रामनिरंजन पांडेय,

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद.

ईसा की बारहवीं शताब्दी में केरल के कृष्णभक्त बिल्वमङ्गल ने श्रीकृष्ण चरितामृत को विश्व के लिये गीर्वाणवाणी के माध्यम से 'कर्णामृत' का माधुर्य प्रदान किया। बिल्वमंगल के आध्यात्मिक एवं कलात्मक व्यक्तित्व के निर्माण का श्रेय उनके गुरु प्रातः स्मरणीय श्री सोमगिरि को था। शिखिपिच्छ-मौलि भगवान श्रीकृष्ण ने अपने वेणुनाद की लहरी के अमृत-महा सागर के द्वारा जन-जन के हृदय के आसुर विष को समाप्त करके दैवी सम्पत् का महा वरदान मानवता को दिया था। उस 'बालनीलमणि' ने 'कालिन्दीपुलिनाङ्गण' से अनुराग की पूर्ण शरज्ज्योत्स्ना विकिरित करके समग्र जड़–चेतन जगत् को अपरिसीम एवं अनिर्वचनीय कोमल प्रणय से आप्लावित किया। मधुरिमा के इस स्वराज्य की शान्तिमयी शीतल छाया में विश्व को शरण दे कर उस विपुल विलोचन ज्योति ने जगज्ज्वाला, में भस्म होते हुए प्राणियों को उबार लिया।

प्रेमस्वरूप भगवान् की अपरिसीम मंजुलतासम्पन्न अनन्त कृपाके परिणाम स्वरूप ही भक्तों ने उनके 'मुकुलायमाननयनाम्बुज सुशोभित, मुरलीनिनादमकरन्द-निर्भरित, मुकुरायमाणमृदुगण्डमण्डलप्रसाधित मुखपङ्कज' को शाश्वत काल के लिये अपने हृदय में धारण कर लिया। इसी कोटि के मृदुल श्रीकृष्णभक्त बिल्व-मङ्गल थे। अपमें 'श्रीकृष्ण कर्णामृतम्' के प्रत्येक अक्षर को उन्होंने भक्तों के लिये कर्णामृत से परिपूरित कर दिये हैं।

प्रेमामृत की इस अविरल धारा को संस्कृत न जाननेवाले भक्तों के मन और हृदय में अविरल रूप से प्रवाहित करने के लिये डॉ. लालेजी ने 'श्रीकृष्ण कर्णातम्' का हिन्दी अनुवाद मूल के साथ प्रस्तुत किया है। उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। उनके इस पावन सारस्वतिक अनुष्ठान के लिये मैं उन्हें हार्दिक साधुवाद अर्पित करता हूँ।

—रामनिरंजन

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा विक्रम सम्वत् २०२८.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२) डॉ० भीमसेन निर्मल,

रीडर, हिन्दी विभाग, उस्मानिया बिश्वविद्यालय, हैदराबाद.

परमात्मा से भक्त अपनी इच्छा के अनुसार नेह के अनेक नाते जोड़ लेता है। इन सभी प्रकार के सम्बन्धों में दाम्पत्यभाव को महोत्कृष्ट माना गया है। क्योंकि इस सम्बन्ध के द्वारा जिस सामीप्य और तादात्म्म का अनुभव किया जा सकता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। अतः भक्ति के क्षेत्र में माधुर्यभाव का महत्व सर्वमान्य है। माधुर्यभाव की पराकाष्ठा गोपीभावना में परिलक्षित होती है।

भारतीय साहित्य में श्रीकृष्ण की आह्लादकारिणी लीलाओं को लेकर अनेकों काव्य रचे गए हैं। भक्त कवियों ने श्रीकृष्ण की अलौकिक शृंगारलीलाओं के वर्णन से साहित्य को रसप्लावित कर दिया है। इस प्रकार के काव्यों में लीलाशुक रचित 'श्रीकृष्ण कर्णामृत' का विशिष्ट स्थान है। इस आत्माश्रयी गेयकाव्य में कविवर ने श्रीकृष्ण के अलौकिक सौन्दर्य तथा गोपियों के अनुपम प्रेम का अद्वितीय सरस चित्रण किया है। इस काव्य का दक्षिण भारत में पर्याप्त प्रचार है जबकि उत्तर के विद्वान् इस काव्य से प्रायः अनभिज्ञ ही हैं। अभी हाल में नारायण तीर्थकृत 'श्रीकृष्ण लीला तरंगिणी' का नागरी संस्करण प्रकाशित किया गया था।[१] यह बड़े हर्ष की बात है कि हिन्दी के सुधी पाठकों के समक्ष डा० प्रमोद गणेश लाले 'श्रीकृष्ण कर्णामृत' का समूल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं।

डा० लालेजी संस्कृत, हिन्दी और मराठी के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। उन्हों ने इस अनुवाद में संस्कृत के काव्य-सौन्दर्य को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया है। संस्कृत की समास-रचना, आलंकारिक शैली, तथा नाद सौन्दर्य से हिन्दी के रसज्ञ पाठकों को यथावत् परिचित कराने में डा० लालेजी को अतीव सफलता मिली है। इस अनुवाद के लिए हिन्दी के विद्वज्जन डा० लालेजी के चिर-ऋणी रहेंगे। आशा है, वे इसी प्रकार संस्कृत के अनुपम काव्य-रत्नों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करते रहेंगे और प्राचीन कवियों की पुनीत भाव लहरियों से पाठकों को आप्यायित करते रहेंगे।

गान्धीनगर,
हैदराबाद-२०

—भीमसेन 'निर्मल'

---

१. संपादकः नोरि नरसिंह शास्त्री, साहिती समिति, रेपल्ले (गुंटूर) १९६९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीकृष्णकर्णामृतम्

चिन्तामणिर्जयति सोमगिरिर्गुरुर्मे
शिक्षागुरुश्च भगवांश्छिखिपिञ्छमौलिः ।
यत्पादकल्पतरुपल्लवशेखरेषु
लीलास्वयंवररसं लभते जयश्रीः ॥१॥

चिन्तामणि की जय हो। मेरे गुरु सोमगिरि की भी जय हो, और जय हो उस भगवान् (कृष्ण की) जिसके सरपर मोरपंख विलसते हैं और जिसके कल्पवृक्षके कोपलोंके समान (कान्ति रखनेवाले) पावोंपर विजयश्री स्वयं चुने हुए (प्रियकरके समान) लीला रूपी रसका अनुभव करती है ॥१॥

अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविलसत्कल्पप्रसूनाप्लुतं
वस्तु प्रस्तुतवेणुनादलहरीनिर्वाणनिर्व्याकुलम् ।
स्त्रस्तस्त्रस्तनिरुद्धनीविविलसद्गोपीसहस्त्रावृतं
हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृति ॥ २॥

दिव्यांगनों की हथेलियों में रहनेवाले कल्पवृक्ष के फूलों की राशियों में जो ढँका हुआ है, जिसकी विख्यात वेणुध्वनि की लहरियाँ सबको दुःखविरहित पूर्णानन्द का अनुभव कराती हैं, ढीली होती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाने वाली नीवियों को सम्हालती हुई हजारों सुन्दर गोपियों से जो घिरा हुआ है, और जो (शरणागतों को) मानो हाथ को ही मोक्ष-प्राप्त करा देता है; ऐसा एक बालाकृति तेजःपुञ्ज (भगवान्) यहां खड़ा है ॥२॥

चातुर्यैकनिधानसीमचपलापाङ्गच्छटामन्थरं
लावण्यामृतवीचिलालितदृशं लक्ष्मीकटाक्षादृतम् ।
कालिन्दीपुलिनाङ्गणप्रणयिनं कामावताराङ्कुरं
बालंनीलममी वयं मधुरिमस्वाराज्यमाराध्नुमः ॥३॥

हम उस माधुर्यनिधान नीलवर्ण बालक की उपासना करते हैं, जो अपने अपूर्व कौशल से, चंचल अपांगों से, और मोहक कटाक्षों से मनोहर दीखता है; जिसकी दृष्टि सौन्दर्यामृत की लहरियों से सींची जाने के कारण स्वयं लक्ष्मी की भी कटाक्ष पात्र बनती है, जो यमुना के रेतीले मैदानों में रमता है, और जो स्वयं काम देव का भी जनक है ॥३॥

बर्होत्तंसविलासिकुंतलभरं माधुर्यमग्नाननं
प्रोन्मीलन्नवयौवनं प्रविलसद्वेणुप्रणादामृतम् ।
आपीनस्तनकुड्मलाभिरभितो गोपीभिराराधितं
ज्योतिश्चेतसि नश्चकास्ति जगतामेकाभिरामाद्भुतम् ॥४॥

जो सारे विश्व का अद्भुत उल्लास है, ऐसा एक तेजो रूप बालक हमारे मन में प्रकाशता है। उसके केशपाश उत्तम मोरपंखों से सुशोभित हैं, उसका मुख मानों मधुरता में सना है। उसका यौवन उभर रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी मुरली का नादामृत सब दूर फैला हुआ है और वह पुष्ट स्तनों-वाली गोपियों का पूजा स्थान है ॥४॥

मधुरतरस्मितामृतविमुग्धमुखाम्बुरुहं
मदशिखिपिञ्छलाञ्छितमनोज्ञकचप्रचयम् ।
विषयविषामिषग्रसनगृध्नुनि चेतसि मे
विपुलविलोचनं किमपि धाम चकास्ति चिरम् ॥५॥

मेरा मन (तो जहर से भरा हुआ है।) वह विषयरूपी मांस के टुकड़े ज़हरीले को खाने के लिये लालच रखता है। पर एक विशाल आँखोंवाला प्रकाश मेरे मन में हरदम रहता है। उस अद्भुत कान्तिवाले कृष्ण का मुखकमल अत्यन्त प्रसन्न स्मितों के अमृत से बहुत ही मनोहर रहता है और मतवाले मयूरों के पंखों से उसका केशसंभार बहुत आकर्षक लगता है ॥५॥

मुकुलायमाननयनाम्बुजं विभो—
मुरलीनिनादमकरन्दनिर्भरम् ।
मुकुरायमाणमृदुगण्डमण्डलं
मुखपङ्कजं मनसि मे विजृम्भताम् ॥६॥

उस परमात्मा का वदनकमल सदा मेरे मन में खिलता रहे, जिसकी कमल समान आँखें कलियों जैसी हैं, जो मुरली ध्वनि रूपी पुष्परस से भरा हुआ है, और जिसके कोमल कपोल आयने जैसे स्वच्छ एवं तरल हैं ॥६॥

कमनीयकिशोरमुग्धमूर्तेः
कलवेणुक्वणितादृतानेन्दोः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मम वाचि विजृम्भतां मुरारे-
र्मधुरिम्णः कणिकापि कापि कापि ॥७॥

सुन्दर भोली-सी किशोर मूर्ति धारण करनेवाले, मधुर मुरली निनादों से पूर्ण मुखचन्द्रवाले, मुरारि के माधुर्य के कुछ कण, कुछ ही कण, मेरी वाणी में प्रकट हों ॥७॥

मदशिखण्डिशिखण्डविभूषणं
मदनमन्थरमुग्धमुखाम्बुजम् ।
व्रजवधूनयनाञ्चलवञ्चितं
विजयतां मम वाङ्मयजीवितम् ॥८॥

मेरे साहित्य में प्राण फूंकने वाली, उन्मत्त मोरों के पंखोंसे से सुहाने वाली, मनोहर मुखकमल पर मदन की मस्ती धारण करनेवाली, और ब्रज की गोपियों की चितवनों से मुग्ध होनेवाली, भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति विजयी हो ॥८॥

पल्लवारुणपाणिपङ्कजसङ्गिवेणुरवाकुलं
फुल्लपाटलपाटलीपरिवादिपादसरोरुहम् ।
उल्लसन्मधुराधरद्युतिमञ्जरीसरसाननं
वल्लवीकुचकुम्भकुङ्कुमपङ्किलं प्रभुमाश्रये ॥९॥

"उस भगवान को मैं शरण में जाता हूँ जो अपने पल्लव के समान लाल करकमलों से मुरली पकड़ कर उसके नाद में तन्मय होता है, जिसके पदाब्ज खिले हुए पाटल पुष्प के समान आरक्त हैं, जिसके वदन मुस्कुराहट से खिले हुए होठों के छविकरों से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशित है और जिसकी छाती ब्रज नारियों के कुंकुमांकित स्तनों से दिए हुए आलिंगनों से रंगी हुई हैं ।।९।।

अपाङ्गरेखाभिरभङ्गुराभि —
रनङ्गरेखारसराञ्जिताभिः ।
अनुक्षणं वल्लवसुन्दरीभि —
रभ्यर्च्यमानं विभुमाश्रयामः ।।१०।।

ब्रज सुन्दरियाँ नित्य, अनवरत, और मदन माधुरी से रंगे हुए कटाक्षों से ही जिसपर अपनी भक्ति-व्यक्त करती हैं, ऐसे सर्वव्यापी भगवान का हम आश्रय करते हैं ।।१०।।

हृदये मम हृद्यविभ्रमाणां
हृदयं हर्षविशाललोलनेत्रम् ।
तरुणं व्रजबालसुन्दरीणां
तरलं किञ्चन धाम सन्निधत्ताम् ।।११।।

जो सब विलास चेष्टाओं का मूल स्थान है, आनन्द से जिसके नैन लम्बे एवं चंचल हो गये हैं, और जो ब्रज की छबीलियों को मोहित करता है ऐसा तारुण्यपूर्ण तरल तेजःपुंज मेरे हृदय में हमेशा रहे ।।११।।

निखिलभुवनलक्ष्मीनित्यलीलास्पदाभ्यां
कमलविपिनवीथीगर्वसर्वङ्कषाभ्याम् ।
प्रणमदभयदानप्रौढिगाढोद्धताभ्यां
किमपि वहतु चेतः कृष्णपादाम्बुजाभ्याम् ।।१२।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरा मन कृष्ण के उन कमल चरणों का दिव्यरस सेवन करे जो सदैव समस्त विश्व की लक्ष्मी की लीला के स्थल बनते हैं, जो कमलों के बनों की सामूहिक शोभा को भी दूर हटाते हैं (नीचा दिखाते हैं), और प्रणाम करने वालों को अभय देने के घनिष्ठ सामर्थ्य का अभिमान धारण करते हैं ।१२॥

प्रणयपरिणताभ्यां प्राभवालम्बनाभ्यां
प्रतिपदललिताभ्यां प्रत्यहं नूतनाभ्याम् ।
प्रतिमुहुरधिकाभ्यां प्रस्नुवल्लोचनाभ्याम्
प्रभवतु हृदये नः प्राणनाथः किशोरः ॥१३॥

वह प्रभु, वह बालक, हमारे हृदय का स्वामी बने जिसकी आँखें अनुराग में प्रौढ़ बन कर अपना अधिकार जताती हैं, और हर क्षय नावीन्य जताती है, और उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। वे आँखें नित्य आर्द्र (करुणासे गीली) रहती है ।१३॥

माधुर्यवारिधिमदान्धतरङ्गभङ्गी-
शृङ्गारसङ्कलितशीतकिशोरवेषम् ।
आमन्दहासललिताननचन्द्रबिम्ब-
मानन्दसंप्लवमनुप्लवतां मनो मे ॥१४॥

मेरा मन उस उमड़-उमड़ कर बहने वाले निर्वाण में (अर्थात् श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी में) गोता लगाए जो लावण्य समुद्र की उत्तुंग कल्लोलों से निकले हुए श्रृंगाररस से निष्पन्न शांत बालवेष धारण करता है और जो हलकी मुसकानों से रमणीय दीखने वाले मुखचन्द्र के रूप का आकार धारण करता है ॥१४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अव्याजमञ्जुलमुखाम्बुजमुग्धभावै-
रास्वाद्यमानीनजवेणुविनोदनादम् ।
आक्रीडतामरुणपादसरोरुहाभ्या-
मार्द्रे मदीयहृदये भुवनार्द्रमोजः ॥१५॥

जो अकृत्रिम माधुर्य से युक्त अपने मुखरूपी कमल के सुन्दर भावों से अपनी मुरली की चित्तमोहक सुरों का आनन्द पाता है, वह समस्त विश्व का उपकारी तेजोनिधि कृष्ण, मेरे उल्लास भरे हृदय में अपने आरक्त चरणों से नृत्य करता रहे ।१५।।

मणिनूपुरवाचालं वन्दे तच्चरणं विभो ।
ललितानि यदीयानि लक्ष्माणि व्रजवीथिषु ॥१६॥

मैं भगवान के उन चरणों को अभिवादन करता हूँ जिनमें रत्न-खचित पायल छुनछुनाते हैं और जिनके रम्य पदचिह्न व्रज के मार्गों पर अंकित हैं। ।१६।

मम चेतसि स्फुरतु वल्लवीविभो-
र्मणिनूपुरप्रणयि मञ्जुशिञ्जितम् ।
कमलवनेचरकलिन्दकन्यका-
कलहंसकण्ठकलकूजिताद्दतम् ॥१७॥

मेरे हिय में गोपियों के प्रियकरों के पायलों की मनोहर रुनझुन की प्रतिध्वनि गूँज उठे । वह उन सुन्दर हंसों की कूकों के समान है, जो लक्ष्मी के निवासपात्र कमलों से भरे हुए यमुना के पानी में विहार करते हैं ।।१७।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरुणारुणकरुणामयविपुलायतनयनं
कमलाकुचकलशीभरविपुलीकृतपुलकम् ।
मुरलीरवतरलीकृतमुनिमानसनलिनं
मम खेलति मदचेतसि मधुराधरममृतम् ॥१८॥

मेरे मुग्ध हृदय में वह होठों का अमृत भगवान् कृष्ण मानवरूप में क्रीड़ा करता है, जिसकी लाल लंबी-लंबी और दयापूर्ण आँखें बहुत बड़ी हैं, जिसको देखते ही लक्ष्मी के घट समान स्तनों पर घने रोमांच पैदा होते हैं, और जिसकी मुरली की मनोहर तानों से मुनियों के मनःपद्म तरल हो उठते हैं ॥१८॥

आमुग्धमर्धनयनाम्बुजचुम्ब्यमान-
हर्षाकुलव्रजवधूमधुराननेन्दोः ।
आरब्धवेणुरवमादिकिशोरमूर्ते-
राविर्भवन्ति मम चेतसि केऽपि भावाः ॥१९॥

मुरली बजाना शुरू होते ही ब्रजकी ललनाओंने, आनन्दविभोर होकर अपने अधखिले नयनोंसे, जिसका मोहक मुखचन्द्रमा प्यार से चूम लिया, उस बालरूपधारी आदिपुरुष के (श्रीकृष्ण के) संबंध में मेरे मनमें कई भाव प्रकट होते हैं ॥१९॥

कलक्वणितकङ्कणं करनिरुद्धपीताम्बरं
क्रमप्रसृतकुन्तलं कलितबर्हभूषं विभोः ।
पुनः प्रसृतिचापलं प्रणयिनोभुजायन्त्रितं
मम स्फुरतु मानसे मदनकेलिशय्योत्थितम् ॥२०॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान् का रति क्रीड़ा से (समाप्तिके बाद) सेज से निकल आना मेरे मनमें नित्य विराजमान् हो। उस समय उसके कंगनों से मधुर झनझन आवाज आ रही थी। उन्होंने अपना पीला वस्त्र एक हाथ में सम्हाला था। उसके बाल एक खास तरीके से बिखरे हुए थे। उसने मोरों के पंखों से अपना सिंगार किया था। वह फिर फुर्तीके साथ बढ़ रहा था और वह अपनी प्रेयसी की बाहों में फिर जकड़ा गया था ॥२०॥

स्तोकस्तोकनिरुध्यमानमृदुलप्रस्यन्दिमन्दास्मितं
प्रेमोद्भेदनिरर्गलप्रसृमरप्रव्यक्तरोमोद्गमम् ।
श्रोतृश्रोत्रमनोहरव्रजवधूलीलामिथोजल्पितं
मिथ्यास्वापमुपास्महे भगवतः क्रीडानिमीलद्दृशः ॥२१॥

प्रणयलीला में आँखें मूंदनेवाले भगवान् श्रीकृष्ण की उस झूठी नींद की हम उपासना करते हैं (बार-बार स्मरण करते हैं) जिसमें थोड़ी सी रोकी हुई हलकी मुस्कानें मुँहपर चू रही थीं, जिसमें बेरोक-टोक फूट पड़नेवाला प्रणय पुलकों के द्वारा अभिव्यक्त हो रहा था और जिस नींद के समय व्रजकी गोपियों से किए गये मधुर प्रेमालाप सुनने वालों के कानों को तृप्त कर रहे थे (आकृष्ट कर रहे थे।) ।२१॥

विचित्रपत्राङ्कुरशालिबाला-
स्तनान्तरं मौनिमनोन्तरं वा ।
अपास्य वृन्दावनपादपास्य-
मुपास्यमन्यन्न विलोकयामः ॥२२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रंगबिरंगी (भिन्न-भिन्न चित्रकारियों से भरा हुआ गोपीयुवतियों का वक्षःस्थल, समाधिमग्न योगी का अन्तर्मन और वृन्दावन के वृक्ष के मूल—इन तीनों के सिवा और कोई ऐसा स्थल हम नहीं देख पा रहे हैं, जहाँ हम भगवान् की उपासना कर सकें।।२२।।

साधं समृद्धैरमृतायमानै-
राध्मायमानैर्मुरलीनिनादैः ।
मूर्धाभिषिक्तं मधुराकृतीनां
बालं कदा नाम विलोकयिष्ये ।।२३।।

जिसकी मुरली के सुर बहुत ही प्रभावी, अमृत जैसे मधुर और नित्य बढ़नेवाले हैं और जो सब सुन्दर पुरुषों का सिरताज है, ऐसे बालक श्रीकृष्ण को मैं कब देखूंगा।।२३।

शिशिरीकुरुते कदानु नः शिखिपिञ्छाभरणः शिशुर्दृशोः ।
युगलं विगलन्मधुद्रवास्मितमुद्रामृदुना मुखेन्दुना ।।२४।।

जिसको मोरपंख बहुत ही शोभा देते हैं और जिसके मुँह पर मधुबिन्दु के समान मधुरस्मित चमकता है, ऐसे इस बालक का चन्द्र समान मुख मेरी आँखों को कब शीतल करेगा ? ।२४।।

कारुण्यकर्बुरकटाक्षनिरीक्षणेन
तारुण्यसंवलितशैशववैभवेन ।
आपुष्णता भुवनमद्भुतविभ्रमेण
श्रीकृष्णचन्द्र शिशिरीकुरु लोचनं मे ।।२५।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रे कृष्णचन्द्र, दयार्द्र (दया में पगे हुए) कटाक्ष डालते हुए, यौवन से भीनी हुई बाल्य की विभा दिखाते हुए, और अपने असाधारण लीला कलापों से सब विश्व को अनुप्राणित करते हुए, तुम मेरी आँखों की प्यास बुझाओ ॥२५॥

कदा वा कालिन्दीकुवलयदलश्यामलतराः
कटाक्षा लक्ष्यन्ते किमपि करुणावीचिनिचिताः ।
कदा वा कन्दर्पप्रतिभटजटाचन्द्रशिशिराः
किमप्यन्तस्तोषं ददति मुरलीकेलिनिनदाः ॥२६॥

जो करुणालहरियों से सींचे हुए हैं और जो यमुना में खिलनेवाले कमलों से भी नीले हैं, ऐसी कृष्ण की चितवनें, मैं कब देख पाऊँगा ? मन्मथ को मार डालनेवाले शिवजी के बालों में निवास करनेवाले चन्द्र के समान जो शीतल हैं, ऐसे मुरली के मधुर स्वर मेरे मन को वह अद्भुत आनंद कब देंगे ? ॥२६॥

अधीरमालोकितमार्द्रजल्पितं
गतं च गम्भीरविलासमन्थरम् ।
अमन्दमालिङ्गितमाकुलोन्मद-
स्मितं च ते नाथ वदन्ति गोपिकाः ॥२७॥

तुम्हारी बावरी चितवनें, तुम्हारी प्यारी प्यारी बातें, नोकझोंकवाली धीमी मटक, गाढ़ आलिंगन और तुम्हारी मोहक मुसकानें-इनके बारे में गोपियाँ तो खूब कहती हैं ॥२७॥

अस्तोकस्मितभरमायतायताक्षं
निःशेषस्तनमृदितं व्रजाङ्गनाभिः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निस्सीमस्तबकितनीलकान्तिधारं
दृश्यासं त्रिभुवनसुन्दरं महस्ते ॥२८॥

अनेकानेक स्मितों से जगमगानेवाला, लम्बी आँखों से सोहने वाला जो तुम्हारा तेज है उसे गोपियाँ अपनी छाती से रगड़ लेती हैं। वह तेज मानों चारों ओर नीलिमा छिहारता है। वह लोकोत्तर कान्ति कितनी प्रेक्षणीय है (तीनों लोकों का अतुल सौंदर्य कितना प्रेक्षणीय है।) ॥२८॥

मयि प्रसादं मधुरैः कटाक्षै-
र्वंशीनिनादानुचरैर्विधेहि।
त्वयि प्रसन्ने किमिहापरैर्न-
स्त्वय्यप्रसन्ने किमिहापरैर्नः ॥२९॥

अपनी मुरली की तानों पर ताल रखनेवाली, अपनी लुभावनी चितवनों से तुम मुझे धन्य करो। तुम्हारा अनुग्रह हो तो और वस्तुओं की क्या आवश्यकता? और उससे यदि हम वंचित हों, तो बाक़ी वस्तुएँ होने पर भी क्या लाभ? ॥२९॥

निबद्धमुग्धांजलिरेषयाचे
नीरन्ध्रदैन्योन्नतमुक्तकण्ठम्।
दयाम्बुधे देव भवत्कटाक्ष-
दाक्षिण्यलेशेन सकृन्निषिञ्च ॥३०॥

अपनी परम दीनता (या निःसत्त्वता) के मारे, मैं हाथ जोड़कर तारस्वरसे यही गिड़गिड़ाता हूँ कि हे भगवन्, हे करुणानिधे, चाहे एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बार क्यों न हो, तुम अपने कृपाकटाक्ष के एक अंश से मुझे अनुगृहीत करो। (मुझपर कटाक्षरूपी कृपा का एक अंश छिड़को।) ।।३०।।

पिञ्छावतंसरचनोचितकेशपाशे
पीनस्तनीनयनपङ्कजपूजनीये ।
चन्द्रारविन्दविजयोद्यतवक्त्रबिम्बे
चापल्यमेति नयनं तव शैशवे नः ।।३१।।

जिस में तुम्हारे केशपाश मोरपंखों के कारण बहुत ही सुंदर लगते हैं, जिसमें पुष्ट स्तनोंवाली गोपियों की कमल जैसी आँखें अपने प्रिय और पूज्य (कृष्ण) को पाती हैं और जिसमें तुम्हारा मुख, चन्द्रमा एवं कमलों को भी परास्त कर देता है, ऐसे तुम्हारे बचपन को (बालाकार को) देखने के लिए हमारी आँखें उतावली हो गई हैं ।।३१।।

त्वच्छैशवं त्रिभुवनाद्भुतमित्यवेमि
यच्चापलं च मम वागविवादगम्यम् ।
तत्किं करोमि विरणन्मुरलीविलास-
मुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्याम् ।।३२।।

मैं जानता हूँ कि तुम्हारा बाल्य त्रैलोक्य का एक आश्चर्य सा है और उसकी मोहकता का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता। मुरली के माधुर्य से सुहावना लगनेवाला तुम्हारा अव्याज दीप्तिवाला मुख कमल देखने के लिए मैं क्या करूँ? ।३२।।

पर्याचितामृतरसानि पदार्थभङ्गी-
वल्गूनि वल्गितविशालविलोचनानि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाल्याधिकानि मदवल्लभभावितानि
भावे लुठन्ति सुदृशां तव जल्पितानि ।।३३।।

तुम्हारे बालिश अबोध बोल सुन्दरियों के मुग्ध भावों में बिलास करते हैं। वे अमृत की माधुरी से भरपूर हैं और अपूर्व पद योजना के कारण मोहक बन गये हैं। वे बोल जब (मुँह से बाहर) निकलते हैं, तब कृष्ण की बड़ी बड़ी आँखें टेढ़ी बनती हैं। बे बोल सामान्य बाल्य में नहीं पाये जाते। गोपलोग उहें मुग्ध होकर उन्हें ग्रहण करते हैं ।।३३।।

पुरः प्रसन्नेन मुखेन्दुतेजसा
पुरोऽवतीर्णस्य कृपामहाम्बुधेः ।
तदेव लीलामुरलीरवामृतं
समाधिविघ्नाय कदानु मे भवेत् ।।३४।।

अपने प्रसन्न मुखरूपी चंद्र की कान्ति से मेरे सामने खड़े होनेवाले भगवान्, मानों दया का (उमड़ता) सागर ही है। उसकी मधुर मुरली का नादामृत मेरी समाधि कब विचलित करेगा ? ।३४।।

भावेन मुग्धचपलेन विलोकनेन
मन्मानसे किमपि चांपलमुद्वहन्तम् ।
लोलेन लोचनरसायनमीक्षणेन
लीलाकिशोरमुपगूहितुमुत्सुकोऽस्मि ।।३५।।

जिसने अपनी चंचल और उन्मादक चितवनों से मेरे मनमें एक खास चुलबुली पैदा की, वह चंचल बालक (कृष्ण) मेरी आँखों को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अमृत जैसे भाता है। मेरी उतावली आँखों में उसको समा लेने के लिए (मैं आतुर हो उठा हूँ) ॥३५॥ (आँखोंसे आलिंगन देनेके लिए)

अधीरबिम्बाधरविभ्रमेण
हर्षार्द्रवेणुस्वरसंपदा च ।
अनेन केनापि मनोहरेण
हा हन्त हा हन्त मनो धिनोति ॥३६॥

अपने चंचल होठों की मोहक सुन्दरता से और अपनी मुरली की आनन्दरस में पगी हुई तानों से, वह कोई मन मोहन हाय, हाय, मेरे मनको कैसे मसोस रहा है ॥३६॥

यावन्न मे निखिलमर्मदृढाभिघात–
निःसन्धिबन्धनमुदेति नवोपतापः ।
तावद्विभो भवतु तावकवक्त्रचन्द्र–
चन्द्रातपद्विगुणिता मम चित्तधारा ॥३७॥

सब मर्मस्थलों पर गहरी चोटें करके जोड़ों को तोड़ डालनेवाली निकट आई हुई मृत्यु की पीडाएँ प्राप्त होने तक, हे भगवन्, मेरे मनकी लगन तुम्हारे मुखचन्द्र की कौमुदी से दुगुनी हो जाय ।३७॥

यावन्न मे नरदशा दशमी दृशोऽपि
रन्ध्रादुदेति तिमिरीकृतसर्वभावा ।
लावण्यकेलिभवनं तव तावदेतु
लक्ष्म्याः समुत्क्वणितवेणुमुखेन्दुबिम्बम् ॥३८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आंखों के छिद्रों से (भी) निकलनेवाली और सब प्रकार के भावों को धुंधलानेवाली दूसरी दशा (वृद्धावस्था) प्राप्त होने तक, हे नाथ, बांसुरी से अधिक मुखरित होनेवाला तथा लक्ष्मी के सौन्दर्य का क्रीडा सदन बननेवाला तुम्हारा मुख चन्द्र, मेरे सामने नित्य रहे ।।३८।।

आलोललोचनविलोकितकेलिधारा-
नीराजिताग्रसरणेः करुणाम्बुराशेः ।
आर्द्राणि वेणुनिनदैः प्रतिनादपूरै-
राकर्णयामि मणिनूपुरशिञ्जितानि ।।३९।।

जिसकी दयारूपी निधिका प्रथम आविष्कार चंचल आँखों की चितवनों के विभ्रमोंकी पङ्क्तियों में दीख पड़ा, उस भगवान् कृष्ण की मुरली के स्वरों को संगत करनेवाली रत्नखचित पायलों की छुमछुम आवाज, मैं सुन रहा हूँ ।।३९।।

हे देव हे दयित हे जगदेकबन्धो
हे कृष्ण हे चपल हे करुणैकसिन्धो ।।
हे नाथ हे रमण हे नयनाभिराम
हा हा कदा नु भवितासि पदं दृशोर्मे ।।४०।।

हे देव, हे प्रियकर, तुम पूरे संसार के एक ही रिश्तेदार हो! हे कृष्ण, हे रसीले, तुम करुणा का अथाह सागर हो। हे मालिक, हे नाथ, तुम सबकी आँखों के तारे हो। तुम कब (मेरी आंखों को ठंडक पहुँचा ओगे।) मेरी आंखों में आ बसोगे? ।।४०।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अम्मून्यधन्यानि दिनान्तराणि
हरे त्वदालोकनमन्तरेण ।
अनाथबन्धो करुणैकसिन्धो
हा हन्त हा हन्त कथं नयामि ? ॥४१॥

हे दीन बन्धो, दयाम्बुधे, जिन दिनों तुम नहीं दिखाई देते हों, उस दिनकी मनहूस घड़ियाँ मैं कैसे काटूँ ? ॥४१॥

किमिव श्रृणुमः कस्य ब्रूमः कथं कृतमाशया
कथयत कथं धन्या मन्यामहे हृदयेशयम् ।
मधुरमधुरस्मेराकारे मनोनयनोत्सवे
कृपणकृपणा कृष्णे तृष्णा चिरं बत लम्बते ॥४२॥

हे पुण्यवान् साधुओं, हम भला क्या सुनें, हमारी दुर्दशा और निराशा किससे कहें और हमारे मन में बसनेवाले भगवान् का किस तरह स्मरण (चिंतन) करें। क्योंकि प्यारी प्यारी मुस्कराहटवाले और आँखों तथा मन को प्रफुल्लित करनेवाले कृष्ण के बारे में हमारी क्षुद्र आसक्ति सचमुच लम्बी होती जा रही है (अर्थात् बढ़ती जा रही है।) ॥४२॥

आभ्यां विलोचनाभ्या-
मम्बुजदललितलोचनं बालम् ।
द्वाभ्यामपि परिरब्धुं
दूरे मम हन्त दैवसामग्री ॥४३॥

वह भाग्यसंपदा मुझसे कोसों दूर है जिसके सहारे कमल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पत्रके समान सुंदर आँखोंवाले बालकृष्ण को अपनी दोनों आँखोंसे आलिंगन दूँ ! (आंखोंसे लगाकर रख दूँ)! ॥३४॥

अश्रान्तस्मितमरुणारुणाधरोष्ठं–
हर्षार्द्रद्विगुणमनोज्ञवेणुगीतम् ।
विभ्राम्यद्विपुलविलोचनार्धमुग्धं
वीक्षिष्ये तव वदनाम्बुजं कदा नु ? ॥४४॥

मैं तुम्हारा वह मुख कमल कब देख पाऊँगा जिसपर निरन्तर मन्दहास चमकते हैं, जिसके होंठ लालिमा लिए हुए हैं, आनंद की उमंग में बजाई जानेवाली बाँसुरी के कारण जिससे अधिक आकर्षक स्वर निकलते हैं और जिसकी लम्बी लम्बी अधखुली रसीली आँखे हमें बहुत ही मुग्ध करती हैं । ४४।।

लीलायताभ्यां रसशीतलाभ्यां
नीलारुणाभ्यां नयनाम्बुजाभ्याम् ।
आलोकयेदद्भुतविभ्रमाभ्यां
बालः कदा कारुणिकः किशोरः ? ॥४५॥

मोहकतासे भरपूर, अमृत जैसे शीतल, अनोखे सौंदर्यसे युक्त, ऐसे लाल और नीले नेत्रकमलोंसे वह दयामय बालक (कृष्ण) मुझे कब देखेगा ? ।४५।।

बहुलचिकुरभारं बद्धपिञ्छावतंसं
चपलचपलनेत्रं चारुबिम्बाधरोष्ठम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधुरमृदुलहासं मन्थरोदारलीलं
मृगयति नयनं मे मुग्धवेषं मुरारेः ॥४६॥

मेरी आँखें उस सुंदर वेष धारण करनेवाले कृष्णको खोजती रहती हैं, जिसका केशपाश सघन (विपुल) है, जिसने मोर के पंख लगाये हैं, जिसके नैन बहुत ही चंचल हैं, जिसका मन्दस्मित मोहक है और जिसकी अंगभंगी धीमी तथा ऊँची है ।।४६।।

बहुलजलदच्छायाचोरं विलासभरालसं
मदशिखिशिखालीलोत्तसं मनोज्ञमुखाम्बुजम् ।
कमपि करुणापाङ्गोदग्रप्रसन्नजगज्जडं
मधुरिमपरिपाकोद्रेकं वयं मृगयामहे ॥४७॥

असंख्य मेघोंका वर्ण चुरानेवाले, मस्तीके कारण धीरे धीरे चलनेवाले, उन्मत्त मोरोंके मनोहर पंखोंको भूषणके समान धारण करनेवाले और सुंदर मुखकमलवाले श्रीकृष्णको हम ढूँढते हैं। वह अपने दयार्द्र कटाक्षोंसे अचेतन विश्वमें भी प्रसन्न चैतन्यको फूँक देता है। उस कृष्णमें सौंदर्यकी परिणति ही कलोलती रहती है ।।४७।।

परामृश्यं दूरे परिषदि मुनीनां व्रजवधू -
दृशां दृश्यं शश्वस्त्रिभुवनमनोहारिवपुषम् ।
अनामृश्यं वाचामनिदमुदयानामपि कदा
दरीदृश्ये देवं दरदलितनीलोत्पलनिभम् ।।४८।।

जो मुनिसमाज में एक दूरगम्य (ध्येय) जैसे रहता है, जो व्रजबालाओं की आँखों का तारा है, जो तीनों लोकों को मोहित करने-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाला शरीर धारण करता है, जो अनादि वेदवाणी को भी अप्राप्य है, और जिसका लावण्य किंचित् खिले हुए कमल जैसा है, ऐसे भगवान् (कृष्ण) को एकटक देखने का भाग्य मुझे कब प्राप्त होगा ? ।।४८।।

लीलाननाम्बुजमधीरमुदीक्षमाणं
नर्माणि वेणुविवरेषु निवेशयन्तम् ।
डोलायमाननयनं नयनाभिरामं
देवं कदानु दयितं व्यतिलोकयिष्ये ? ।।४९।।

मैं उस लाड़ले कृष्ण को कब देख पाऊँगा, जिसका मुखकमल केलिविलाससे चमकता हो, जिसकी दृष्टि चंचल हो, (जो चंचल दृष्टि से इधर उधर देखता हो), जो मुरलीके छिद्रों में से परिहास के सुर (मजेदार सुर) निकालता हो, जिसकी आँखों में लालसा की चुलबुली हो, और जिसकी मूर्ति सबकी आँखोंको प्यारी लगती हो ।।४९।।

लग्नं मुहुर्मनसि लम्पटसंप्रदायि
लेखाविलेखनरसज्ञमनोज्ञवेषम् ।
लज्जन्मृदुस्मितमधुस्नपिताधरांशु–
राकेन्दुलालितमुखेन्दु मुकुन्दबाल्यम् ।।५०

कृष्ण के बाल्य की अर्थात् बाल कृष्ण की, लटक मेरे मन को बार बार लगी रहती है । वह कामुकों का रास्ता अपनाता है । चित्र उतारने में जो प्रवीण या रसिक हैं, ऐसे चित्रकारों के मनको उसका वेष मोहित करता है । उसके होठों की ललाई, लजीली और कोमल मन्दहासों की कान्ति से मानों नहलाई गई है और मुखचन्द्रमा पूनम के चाँद जैसा प्रसन्न है ।।५०।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अहिमकरकरनिकरमृदुमृदितलक्ष्मी–
सरसतरसरसिरुहसदृशदृशि देवे ।
व्रजयुवतिरतिकलहविजयिनिजलीला–
मदमुदितवदनसशिमधुरिमणि लीये ॥५१॥

कृष्ण की आँखें तालाब में खिलनेवाले उन सुँदर कमलों के समान हैं, जिनकी मुलायम कान्ति प्रचंड सूर्य के किरण कलापों के कारण और निखर उठती है। व्रज बालाओं के साथ किए गए प्रणय-कलहों में जो विजयी होती है, ऐसे अपनी विलासिता के उन्माद के कारण उस कृष्ण के मुखचन्द्र की शोभा अतीव आकर्षक बनती है। उस भगवान् कृष्ण में (उसकी उपासना में) मैं तल्लीन हो गया हूँ। ॥५१।

करकमलदरदलितललिततरवंशी–
कलनिनदगलदमृतघनसरसि देवे ।
सहजरसभरभरितदरहसितवीथी–
सततवहदधरमणिमधुरिमणि लीये ॥५२॥

कमल जैसे कोमल हाथों मे हलकीसी रखी गई मनोहर मुरली से मधुर स्वरों का जो दिव्य अमृत निकलता है, उसका, कृष्ण एक गहरा सरोवर हैं। जो सहज माधुर्यसे भरपूर मन्दस्मितों के आधार हैं और नित्य मोहकता के निधि जैसे हैं, ऐसे मनोहर होटों की माधुरी से, कृष्ण संपन्न है। उस कृष्ण के भजन में मैं खो गया हूँ ॥५२॥

कुसुमशरशरसमरकुपितमदगोपी–
कुचकलशघुसृणरसलसदुरसि देवे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मदललितमृदुहसितमुषितशशिशोभा-
मुहुरधिकमुखकमलमधुरिमाणि लीये ॥५३॥

मैं भगवान् कृष्ण के ध्यान में खो गया हूँ। उसका वक्षःस्थल, मदन बाणों से ही लड़े गये रतिकलहों में जो क्रुद्ध हुई हैं, ऐसे मतवाली गोपियों के घटसमान पुष्ट स्तनों के कुंकुम से पुता जाने के कारण, बहुत सुशोभित हुआ है। उसके विलासरंजित मन्दस्मितों ने चंद्रकी शोभा को भी परास्त किया है और इसके कारण उसके कमल जैसे चेहरे की आभा और मनोहर हो गयी है ॥५३॥

आनम्रामसितभ्रुवोरुपचितामक्षीणपक्ष्माङ्कुरे-
ष्वालोलामनुरागिणोर्नयनयोरार्द्रां मृदौजल्पिते ।
आताम्रामधरामृते मदकलामम्लानवंशीरवे-
ष्वाशास्ते मम लोचनं व्रजशिशोर्मूर्तिं जगन्मोहिनीम् ॥५४॥

मेरे नयन उस व्रजबाल की समूचे विश्व को आकर्षित करनेवाली सुंदर शरीर यष्टि को देखनेकी इच्छा करते हैं, जो काली भौहों के पास थोडीसी बाकी हो गई है, जो घनी बिरौनियों की जगह अच्छी तरह फब गई हैं, प्यारभरी आँखों में कुछ कुछ चंचल दीखती हैं, उसके मुँह की मधुर बालिश बातों से अनुग्रह झलकता है, अमृत मधुर होठोंपर जिसने थोड़ा लालिमा धारण किया है, और जो फुरती से बजायी जानेवाली बाँसुरी की मादक मीठी आवाज में व्यक्त होती है ॥५४॥

तत्कैशोरं तच्च वक्त्रारविन्दं
तत्कारुण्यं ते च लीलाकटाक्षाः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तत्सौन्दर्यं सा च मन्दस्मितश्रीः
सत्यं सत्यं दुर्लभं देवतेषु ॥५५॥

वह शैशव. वह मुखकमल, वह दया, वे रसीली चितवनें, वह कान्ति और वह हलकी-सी मुसकान—सचमुच, ये सब बातें देवताओं में भी कहाँ होगी ? (देवताओं में भी नही मिल सकेंगी) ॥५५।

विश्वोपप्लवशमनैकबद्धदीक्षं
विश्वासस्तबकितचेतसां जनानाम् ।
पश्यामः प्रतिनवकान्तिकन्दलार्द्रं
पश्यामः पथि पथि शैशवं मुरारेः ॥५६॥

(कल्पना के) हर एक पथपर हम मुरारि के उस बचपन को देखते हैं जो नित्य नूतन चारुतासे झलकता है और जिसने उन लोगों की समस्त विपदाओं का विनाश करने का मानों बीड़ा उठाया है जिनके मनः कुसुम श्रद्धासे खिलते हैं ।५६।

मौलिश्चन्द्रकभूषणा मरकतस्तम्भाभिरामं वपु–
र्वक्त्रं चित्रविमुग्धहासमधुरं बाले विलोले दृशौ ।
वाचः शैशवशीतला मदगजश्लाघ्या विलासस्थिति–
र्मन्दं मन्दमये ! क एष मथुरावीथीमितो गाहते ? ॥५७॥

उसका सर मयूर के पिच्छोंसे अलंकृत है। उसका शरीर नीलों के खम्भे जैसा दमक रहा है। उसका वदन सहज सुंदर तरल स्मितों से सुहावना है, उसकी आँखों में चंचलता तरलती है। उसकी बातें मानों बचपन की (ठंडी) फुहारें हैं। उसके शरीर का सौष्ठव उन्मत्त हाथि-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यों के लिए भी स्तुतिपात्र (अनुकरणीय) बना है। मथुराके रास्तों में धीरे धीरे चलनेवाला कौन है वह? ॥५७॥

पादौ पादविनिर्जिताम्बुजवनौ पद्मालयालङ्कृतौ
पाणी वेणुविनोदनप्रणयिनौ पर्याप्तशिल्पश्रियौ ॥
बाहू दोहदभाजनं मृगदृशां माधुर्यधारा गिरो
वक्त्रं वाग्विभवातिलङ्घितमहो । बालं कि मेतन्महः ? ॥५८॥

इसके चरण, कमलों के समूहों को भी नीचे दिखाते हैं। उन चरणों को लक्ष्मी ने (अपने निवाससे) भूषित किया हैं। कला का उत्कर्ष दिखानेवाले इसके हाथ मुरली बजाने मैं बहुत ही रुचि लेते हैं। इसकी भुजाएँ हिरन की जैसे नयनोंवाली स्त्रियों के मनोरथ पूर्ण करती हैं। इसके शब्द मानों माधुरी के प्रवाह हैं। इसका मुख वाणी-विलास के पहुँच के बाहर है (इसके मुख के सौंदर्य का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता।) ऐसा कौन सा यह अद्भुत तेज है, जिसने बालक का रूप लिया है ? ॥५८॥

बर्हं नाम विभूषणं बहुमतं वेषाय शेषैरलं
वक्त्रं द्वित्रविशेषकान्तिलहरीविन्यासधन्याधरम् ।
शीलैरल्पधियामगम्यविभवैः शृङ्गारभङ्गीमयं
चित्रं चित्रमहो विचित्रमहहो चित्रं विचित्रं महः ॥५९॥

इसकी वेषभूषा के लिए एक मोर पंख का गहना काफी है, अन्य अलंकारों की ज़रूरत ही क्या ? हनूपर दो तीन रेखाएँ लगा दीं तो बस इसके मुँह से सुंदर होठों पर मानों सौन्दर्य के तरंग झलकते हैं। मोटे बुद्धिवालों को इनकी शृंगार कल्पना का मर्म तो समझ में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं आता। आश्चर्य क्या ही आश्चर्य है, इसकी दिव्य आभा का। ५९॥

अग्रे समग्रयति कामपि केलिलक्ष्मी—
मन्यासु दिक्ष्वपि विलोचनमेव साक्षि।
हा हन्त हस्तमथ दूरमहो किमेत—
दासीत्किशोरमयमम्ब जगत्त्रयं मे ॥६०॥

मेरे सामने तो यह अपनी अद्भुत विभ्रमकी विभा जँचाता है और सभी दिशाओं में उसकी श्री फैली हुई है। मेरी आँखें ही इसकी साक्षी हैं। मगर इसे ग्रहण करूँ तो मेरा पसारा हुआ हाथ तो नित्य उससे दूर दूर ही रहता है। आश्चर्य था यह! मुझे तो यह शशैव तीनों लोकों में व्याप्त दिखाई देता है। ॥६०॥

चिकुरं बहुलं विरलं भ्रमरं
मृदुलं वचनं विपुलं नयनम्।
अधरं मधुरं वदनं ललितं
चपलं चरितं कदाऽनुभवे ॥६१॥

विपुल केशपाश, ललाटपर फैलनेवाले घुँघराले बाल, कोमल वाणी, विशाल नेत्र, रसीले होंठ, विलासी चेहरा और चटक का बर्ताव, यह रूप मैं कब देख पाऊँगा? ॥६१।

परिपालय नः कृपालये—
त्यसकृज्जल्पितमात्मबान्धवः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुरलीमृदुलस्वनान्तरे
विभुराकर्णयिता कदा नु नः ? ॥६२॥

'हे दयानिवास, हमारी रक्षा करो', इस तरह की विनय हम अपने बन्धुसे (कृष्णसे) नित्य करते रहते हैं। लेकिन मुरली की मधुर नादलहरियों के बीच बह विश्वात्मा हमें कब सुन पाएगा ॥६२॥

कदा नु कस्यां नु विपद्दशायां
कैशोरगन्धिः करुणाम्बुधिर्नः ।
विलोचनाभ्यां विपुलायताभ्यां
व्यालोकयिष्यन्विषयीकरोति ॥६३॥

अपने बाल्यसे महकनेवाला यह दया का सागर, अपनी बड़ी बड़ी और लंबी लंबी आँखोंसे मुझे देखकर, किस तरहके संकटसमयमें, मुझे अपना कृपापात्र बनाएगा ? ॥६३॥

मधुरमधरबिम्बे मञ्जुलं मन्दहासे
शिशिरममृतवाक्ये शीतलं दृष्टिपाते ।
विपुलमरुणनेत्रे विश्रुतं वेणुनादे
मरकतमणिनीलं बालमालोकये नुः ? ॥६४॥

मै उस नीलमणि-सी कान्तिवाले बालक को कब देखूंगा जो कि अपने होंठों की ललाई से बहुत ही कमनीय भाता है, अपनी हलकी मुस्कानों से आकर्षक है, सुधा मधुर वचनों से तापहीन जँचता है, अपने कटाक्षों में अति प्रसन्न लगता है, अपने आरक्त नयनोंसे बहुत गंभीर नज़र आता है और जो अपने वंशीवादन के लिए विख्यात है ॥६४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माधुर्यादपि मधुरं
मन्मथतातस्य किमपि कैशोरम् ।
चापल्यादपि चपलं
चेतो मम हरति हन्त किं कुर्मः ? ॥६५॥

इस मदनको जन्म देनेवाले कृष्ण का बिचित्र बाल्य मधुरतासे भी मधुर, चपलतासे भी फुर्तीला है। हम क्या करें, वह हमारा मन हठात् आकृष्ट कर लेता है ॥६५॥

वक्षःस्थले च विपुलं नयनोत्पले च
मन्दास्मिते च मृदुलं मदजल्पिते च ।
बिम्बाधरे च मधुरं मुरलीरवे च
बालं विलासनिधिमाकलये कदा नु ? ॥६६॥

जिसकी छाती चौड़ी और नेत्रकमल विशाल हैं, जिसकी मुस्कुराहट मोहक है और ललित वचन आकर्षक हैं, जिसके बिम्ब जैसे होंठ लुभावने और मुरली की ध्वनि बेहाल करनेवाली है, उस रति निधान बालक को मैं कब देख लूँ ? ॥६६॥

आर्द्रावलोकितदयापरिणर्द्धनेत्र-
माविष्कृतस्मितसुधामधुराधरोष्ठम् ।
आद्यं पुमांसमवतंसितबर्हिबर्ह-
मालोकयन्ति कृतिनः कृतपुण्यपुञ्जाः ॥६७॥

जिसके कृपापूर्ण नेत्र करुणामय कटाक्ष डालते हैं और स्मितरूपी अमृत-लहरियों के कारण जिसके अधर बहुत ही प्यारे लगते हैं, ऐसे

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मोरपंखके आभूषण धारण करनेवाले पुराण पुरुषको, पुण्यराशिका संचय करनेवाले धन्य लोग ही देख पाते हैं ।।६७।।

मारः स्वयं नु मधुरद्युतिमण्डलं नु
माधुर्यमेव नु मनोनयनामृतं नु ।
वाणीमृजा नु मम जीवितवल्लभो नु
बालोऽयमभ्युदयते मम लोचनाय ।।६८।।

क्या यह स्वयं मदन है या एक सुंदर तेज:पुंज है? या मूर्तिमान् माधुर्य ही है? क्या यह मेरे अन्तश्चक्षु को दिव्य रस देनेवाल है? यह वाणीका प्रवर्तक है या मेरे जीवनका प्यारा सर्वस्व है? आखिर मेरी आँखों को अपना दर्शन देनेवाला यह बालक है ही कौन?

बालोऽयमालोलविलोचनेन
वक्त्रेण चित्रीकृतदिङ्मुखेन ।
वेषेण घोषोचितभूषणेन
मुग्धेन दुग्धे नयनोत्सुकं नः ।।६९।।

अपनी चंचल आंखों, सब दिशाओं को रंगीन बनानेवाले अपने चेहरे और गोपोचित सुंदर वेष तथा अलंकारों से यह बालक आँखों में प्यास पैदा करता है (आँखोंको, दर्शनके लिए, लालायित बनाता है।) ।।६९।।

आन्दोलिताग्रभुजमाकुलनेत्रलील-
मार्द्रस्मितार्द्रवदनाम्बुजचन्द्रबिम्बम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिञ्जानभूषणशतं शिखिपिञ्छमौलि
शीतं विलोचनरसायनमभ्युपैति ॥७०॥

हाथ हिलडुल रहे हैं। आँखें विलासमें बावरी हो गयी हैं। कमल अथवा चन्द्रकलाके समान दीख पड़नेवाला वदन हरीभरी मुसकानोंसे प्रसन्न हो गया है। पावों में रुनझुन करनेवाले सैकड़ों गहने धारण किए हुए हैं। इस तरह मेरे नयनोंको तृप्त करनेवाला कोई रसायन मेरे सामने आता है ॥७०॥

पशुपालबालपरिषद्विभूषणं
शिशुरेष शीतलविलोललोचनः ।
मृदुलस्मितार्द्रवदनेन्दुसंपदा
मदयन्मदीयहृदयं विगाहते ॥७१॥

गोपगणों में रत्न जैसे चमकनेवाले इस बालक की आँखें प्रसन्न और चंचल हैं। उसके मुखचन्द्रमा की आभा मन्द मुसकानों से चिकनी सी लगती है। और ही निखर उठी हैं। वह गोपाल मेरे हृदय को मदमाता हुआ उसमें पैठ जाता है ॥७१॥

तदिदमुपनीतं तमालनीलं
तरलविलोचनतारकाभिरामम् ।
मुदितमुदितवक्त्रचन्द्रबिम्बं
मुखरितवेणुविलासजीवितं मे ॥७२॥

जिसका वर्ण तमालके पत्तोंके समान साँवला है, जिसकी चंचल आँखोंकी पुतलियाँ बहुत ही सुंदर हैं, जिसके मुखचन्द्रमा पर आनंद

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहता है और मुरलीकी मादक ध्वनियोंका जो मानों प्राण ही है, ऐसा यह श्रीकृष्ण मेरे सामने आ पहुँचा है ॥७२॥

चापल्यसीम चपलानुभवैकसीम
चातुर्यसीम चतुराननशिल्पसीम ।
सौरभ्यसीम सकलाद्भुतकेलिसीम
सौभाग्यसीम तदिदं व्रजभाग्यसीम ॥७३॥

नटखटी की मानों परिसीमा पानेवाला, ढिठाई में अपना सानी न रखनेवाला, चालाकी में किसी से न हारनेवाला, ब्रह्माकी कलाका उत्कर्ष, सब सुगंधियों का सार, सब विचित्र विभ्रमों का आदर्श, सौंदर्यका प्रकर्ष और व्रजके सौभाग्यकी पराकाष्ठा, यही तो है ।७३।

माधुर्येण द्विगुणशिशिरं वक्त्रचन्द्रं वहन्ती
वंशीवीथीविगलदमृतस्रोतसा सेचयन्ती ।
मद्वाणीनं विहरणपदं मत्तसौभाग्यभाजां
मत्पुण्यानां परिणतिरहो नेत्रयोः सन्निधत्ते ॥७४॥

लालित्यके कारण दुगुनी आभासे चमकनेवाले चन्द्रवदनको धारण करनेवाला, मुरलीसे बहनेवाली सुधामधुर लहरोंसे सारे विश्वको आप्लावित करनेवाला वह कृष्ण, मेरी वाणीका विहारस्थल है। वह मेरे दैवसंपन्न पुण्योंका ही अपूर्व फल है। लो, वह मेरी आँखों के सामने ही खड़ा है ॥७४॥

तेजसेऽस्तु नमो धेनुपालिने लोकपालिने ।
राधापयोधरोत्सङ्गशायिने शेषशायिने ॥७५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गायों को चरानेवाले, लोगोंकी रक्षा करनेवाले, राधाके पीनस्तनों के अंकपर लेटनेवाले, ऐसे शेषशायी रूपी तेजको मेरे प्रणाम !।।७५।।

धेनुपालदयितास्तनस्थली–
धन्यकुङ्कुमसनाथकान्तये ।
वेणुगीतगतिमूलवेधसे
तेजसे तदिदमों नमो नमः ।।७६।।

ॐ ! मैं उस स्वर्गीय उल्लास को अभिवादन करता हूँ, जो मुरलीसे निकालनेवाले आल्हादमय गीतियोंका प्रधान स्रष्टा है और गोपियों के स्तनों पर सुंदर कुंकुम तिलकों के कारण जो बहुत ही कान्तिमान् हो गया है ।।७६।।

मृदुक्वणन्नूपुरमन्थरेण बालेन पादाम्बुजपल्लवेन ।
अनुक्वणन्मञ्जुलवेणुगीतमायाति मे जीवितमात्तकेलि ।।७७।।

देखो, रसक्रीड़ामें रुचिलेनेवाला यह मेरा जीवित सर्वस्व कृष्ण पायलोंकी मंजुल छुमछुमपर धीरे धीरे अपने कमल जैसे नाजुक पावों-को रखते हुए, आ रहा है ।।७७।।

सोऽयं विलासमुरलीनिनदामृतेन
सिञ्चन्नुदञ्चितमिदं मम कर्णयुग्मम् ।
आयाति मे नयनबन्धुरनन्यबन्धु -
रानन्दकन्दलितकेलिकटाक्षलक्षः ।।७८।।

यह मेरी आँखोंका आनंद विधान, अनाथोंका त्राता आ रहा है। सुंदर प्यारी मुरलीकी नादसुधासे वह मेरे कान उज्जीवित कर रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह आनंदातिरेक से चंचल बने हुए विलासपूर्ण कटाक्षोंसे देखा जा रहा है (कटाक्षोंका लक्ष्य बना है।) ७८।

दूराद्विलोकयति वारणखेलगामी
धाराकटाक्षभरितेन विलोचनेन।
आरादुपैति हृदयङ्गमवेणुनाद-
वेणीदुघेन दशनावरणेन देवः ॥७९॥

हाथी की जैसी डौलदार चाल वाला यह भगवान् मुझे दूर से ही मधुर दृष्टि से देख रहा है। यह जब समीप आ रहा है, तब उसके होठों से मुरली की मीठी ध्वनियाँ निकल पड़ती हैं (चू पड़ती हैं।) ॥७९॥

त्रिभुवनसरसाभ्यां दीप्तभूषापदाभ्यां
दृशि दृशि शिशिराभ्यां दिव्यलीलाकुलाभ्याम्।
अशरणशरणाभ्यामद्भुताभ्यां पदाभ्या-
मयमयमनुकूजद्वेणुरायाति देवः ॥८०॥

मुरली पर मीठी धुन बजाते हुए यह भगवान् कृष्णआ रहा है। क्या अपूर्व पदन्यास है उसका। उसके पैर तीनों लोकों में सबसे सुन्दर हैं। अलंकारों की जगह कांतियुक्त हो गये हैं। हर एक दृष्टि को (हर एक की आँखों को) ठंडक पहुँचाते हैं। उनमें स्वर्गीय क्रीड़ा की तरलता है। वे निराश्रित लोगों को सहारा देते हैं। ।८०।

सोऽयं मुनीन्द्रजनमानसतापहारी
सोऽयं मदव्रजवधूवसनापहारी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोऽयं तृतीयभुवनेश्वरदर्पहारी
सोऽयं मदीयहृदयाम्बुरुहापहारी ॥८१॥

वही है मुनिश्रेष्ठोंका आध्यात्मिक ताप दूर करनेवाला। वही है मतवाली गोपियों के वस्त्र हरण करनेवाला। वही है स्वर्ग के राजा इन्द्रकी घमंड उतारनेवाला और वही है मेरे चित्तारविन्दको खिलानेवाला (आकृष्ट करनेवाला) भगवान् कृष्ण ॥८१॥

सर्वज्ञत्वे च मौग्ध्ये च सार्वभौममिदं मम ।
निर्विशन्नयनं तेजो निर्वाणपदमश्नुते ॥८२॥

सर्वज्ञत्व और अव्याज मनोहरत्व-इनमें जो सर्वातिशायी है, ऐसे तेजमें तल्लीन होकर मेरी आँखें मोक्षसुख का अनुभव करती हैं।। ८२॥

कृष्णाननमेतत्पुनरुक्तशोभ-
मुष्णेतरांशोरुदयं मुखेन्दोः ।
तृष्णाम्बुराशिं द्विगुणीकरोति
कृष्णाह्वयं किञ्चन जीवितं मे ॥८३॥

इसके मुखचन्द्रमाका उदय शीत किरणवाले चन्द्रकी शोभाको व्यर्थ करदेता है। कृष्णनामक जो मेरा प्राणसर्वस्व है, वह मेरी उत्कण्ठाके समुद्रको दुगुना करता है। (कृष्ण के प्रति मेरी उत्कण्ठा अत्यधिक बढती है) ॥८३॥

तदेतदाताम्रविलोचनश्री-
सम्भाविताशेषविनम्रवर्गम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुहुर्मुरारेर्मधुराधरोष्ठं
मुखाम्बुजं चुम्बति मानसं मे ॥८४॥

अपनी आँखोंकी आरक्त सुन्दरतासे सब शरणागत भक्तोंका उद्धार करनेवाले और अपने विलासी होंठोंसे सोहनेवाले, कृष्ण के वदनकमलको मेरा मन एकटक देखते रहता है ॥८४॥

करौ शरदुदञ्चिताम्बुजविलासशिक्षागुरू
पदौ विबुधपादपप्रथमपल्लवोल्लङ्घिनौ।
दृशौ दलितदुर्मदत्रिभुवनोपमानाश्रियौ
विलोक्य विलोचनामृतमहो महच्छैशवम् ॥८५॥

देखो इस अद्भुत बाल्यको (बालकृष्णको) जो आँखोंके लिए एक दिव्यरस जैसा है। देखो, इसके हाथ शारदीय कमलोंको भी सौन्दर्य के पाठ सिखाते हैं। इसके पाँव कल्पवृक्षके नये कोपलों को भी (आरक्ततामें) लजाते हैं। इसकी आँखें, सौंदर्यकी झूठी घमंडवाले लोगोंको परास्त करने के कारण, त्रिलोकी में उपमानास्पद बन गयी हैं ॥८५॥

आचिन्वानमहन्यहन्यहनि साकारान् विहारक्रमा–
नारुन्धानमरुन्धतीहृदयमप्यार्द्रस्मितास्यश्रिया।
आतन्वानमनन्यजन्मनयनश्लाघ्यामनर्घ्यादशा–
मामन्दव्रजसुन्दरीस्तनतटीसाम्राज्यमुज्जृम्भते ॥८६॥

ब्रजकी रमणियोंके स्तनोंपर विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण जो असीम उल्लासकी परमावस्था है, अब प्रत्यक्ष हो गया है। वह हर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दिन कई प्रणयपद्धतियोंको ढूँढ निकालता है। मन्दहाससे चमकनेवाले अपने वदन के लावण्यसे वह अरुंधतीका मन भी खींच लेता है। वह उस अमोल सौन्दर्यावस्थाको निर्माण करता है कि जिसे किसी अन्य योनिमें प्रत्यक्ष नही किया जा सकता ॥८६॥

समुच्छ्वसितयौवनं तरलशैशवालङ्कृतं
मदच्छुरितलोचनं मदनमुग्धहासामृतम् ।
प्रतिक्षणविलोभनं प्रणयपीतवंशीमुखं
जगत्त्रयविमोहनं जयति मामकं जीवितम् ॥८७॥

यह मेरे जीवनका सार जो कृष्ण हैं वह सर्वत्र विजयी है। उसका तारुण्य खिल उठा है। चंचल बाल्य उसका अलंकार है। उसकी आँखोंमें नशाका विलास है। उसका सुधामधुर हास्य, प्रणयके भावोंसें अधिक आकर्षक हो जाता है। वह हर क्षण (देखनेवालोंका) दिल चुराता है। वह बड़े प्यारसे मुरलीका मुँह चूमता है (मुरली बजाता है।) वह तीनों लोकोंको मोहित करता है ॥८७॥

चित्रं तदेतच्चरणारविन्दं
चित्रं तदेतन्नयनारविन्दम् ।
चित्रं तदेतद्वदनारविन्दं
चित्रं तदेतत्पुनरम्ब ! चित्रम् ॥८८॥

इसके पदकमल अद्भुत हैं। इसके नयनसरोज विस्मित करने वाले हैं। इसका मुखाम्बुज एक अचरजकी बात है। ओ हो, क्या आश्चर्य! इसका सब कुछ विलक्षण है ॥८८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अखिलभुवनैकभूषण—
मधिभूषितजलधिदुहितृकुचकुम्भम् ।
व्रजयुवतीहारावलि—
मरकतनायकमहामणिं वन्दे ॥८९॥

उस श्रेष्ठ नीले रत्नको मैं प्रणाम करता हूँ जो समूचे विश्वका श्रेष्ठ अलंकार है। समुद्रकन्या लक्ष्मी के स्तनमण्डलोंको इसने विभूषित किया है और गोकुलकी प्रमदाओंके मुक्ताहारों का सुंदर नीलमणि है ।८९॥

कान्ताकचग्रहणविग्रहबद्धलक्ष्मी-
खण्डाङ्गरागरसरञ्जितमञ्जुलश्रि ।
गण्डस्थलीमुकुटमण्डलखेलमान-
घर्माङ्कुरं किमपि खेलति कृष्णतेजः ॥९०॥

श्रीकृष्णकी वह अद्भुत कांति जगमगाती है। प्रियाके केशग्रहणके समय उसके (लक्ष्मीके) साथ झगड़ा छिड् गया, उस समय उसके शरीरके उबटनके कुछ कण (श्रीकृष्णके शरीरको) लग गये। कृष्णकी वह कांति उससे रंग गई और अधिक मोहक हो गई। उसी समय उसके आयनेके काँच जैसे कोमल गालोंपर स्वेदकण चमकने लगे थे ।९०।

मधुरं मधुरं वपुरस्य विभो-
र्मधुरं मधुरं वदनं मधुरम् ।
मधुगन्धि मृदुस्मितमेतदहो
मधुरं मधुरं मधुरं मधुरम् ॥९१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस प्रभुका शरीर अतीव लावण्यमय है, उसका चेहरा बहुत ही सुंदर है. उसकी मन्द मुसकानें मधुके गन्धसे महकती हैं। अहो, इसका सब कुछ सुंदर मनोहर और आकर्षक है।९१॥

श्रृङ्गाररससर्वस्वं शिखिपिञ्छविभूषणम् ।
अङ्गीकृतनराकारमाश्रये भुवनाश्रयम् ॥९२॥

सब साज-सिंगार का सार, मोरोंके पंखोंसे अलंकृत, सब विश्वके आश्रयस्थान, ऐसे मनुष्य का आकार धारण करनेवाले कृष्ण को मैं शरण जाता हूँ ॥९२॥

नाद्यापि पश्यति कदाचन दर्शनेन
चित्तेन चोपनिषदा सुदृशां सहस्रम् ।
स त्वं चिरं नयनयोरनयोः पदव्यां
स्वामिन् ! कदा नु कृपया मम सन्निधत्से ? ॥९३॥

हज़ारों सूक्ष्म दृष्टिवाले दार्शनिक, आपको साक्षात्कारके द्वारा या मानसिक चिंतनसे या उपनिषदोंके तत्व जानकर भी तुमको देख नही पाते हैं। तो हे भगवन्, तुम मेरे समीप आकर मेरी आँखोंको कब दीख पडोगे? क्या उतनी दया दिखाओगे ॥९३॥

केयं कान्तिः केशव त्वन्मुखेन्दोः
कोऽयं वेषः कोऽपि वाचामभूमिः? ।
सेयं सोऽयं स्वादुतामञ्जुलश्रीः
भूयो भूयो भूयशस्त्वां नमामि ॥९४॥

हे केशव, क्या विचित्र है तुम्हारे मुखचन्द्रमाकी छबि? कैसा है यह वेष! वह वाणीकी शक्तिके परे है। हाँ, यही है, यही है वह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधुरताकी आकर्षक द्युति । मैं तुम्हें बारबार प्रणाम करता हूँ । ९४॥

वदनेन्दुविनिर्जितः शशी
दशधा देव! पदं प्रपद्यते ।
अधिकां श्रियमश्नुतेतरां
तव कारुण्यविजृम्भितं किंचित्? ॥९५॥

तुम्हारे मुखेन्दुसे हार खानेवाला यह चन्द्र, तुम्हारे पाँवपर दस बार गिरता है और (उसके कारण) अधिक कान्ति पाता है। कैसी विस्मयजनक है तुम्हारी कृपा ? ॥९५॥

तत्त्वन्मुखं कथमिवाब्जसमानकक्ष्यं
वाङ्माधुरीबहुलपर्वकलासमृद्धम्? ।
तत्किं ब्रुवे किमपरं भुवनैककान्तं ?
यस्य त्वदाननसमा सुषमा सदा स्यात् ॥९६॥

तुम्हारे वदनको कमल की उपमा कैसे दी जा सकती है? क्योंकि वह वाणीकी मधुरिमासे भरपूर और पूर्ण चन्द्रके समान प्रफुल्ल है। उसका वर्णन मैं किस भाँति करूँ? सारी दुनियामें ऐसी कौनसी सुन्दर-तम वस्तु है जिसका सौन्दर्य तुम्हारे मुखकान्ति के समान नित्य रहता हो? ॥९६॥

शुश्रूषसे यदि वचः शृणु मामकीनं
पूर्वैरपूर्वकविभिर्न कटाक्षितं यत् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नीराजनक्रमधुरं भवदाननेन्दोः
निर्व्याजमर्हति चिराय शशिप्रदीपः ॥९७॥

यदि तुम सुनना चाहते हो तो मेरी इस बातको सुनो जिसकी ओर पहलेके कविवरो का ध्यान नहीं गया है—

तुम्हारे मुखचन्द्रकी नित्य आरती उतारनेके लिए वह चन्द्ररुपी दीपही निः सन्देह योग्य है । ॥९७॥

अखण्डनिर्वाणरसप्रवाहै-
र्विखण्डिताशेषरसान्तराणि ।
अयन्त्रितोद्भ्रान्तसुधार्णवानि
जयन्ति शीतानि तव स्मितानि ॥९८॥

निरंतर आनंदके सोतोंके द्वारा सब प्रकारक दूसरे लौकिक रसोंको परास्त करनेवाले, और अमृतसागरोंको लगातार उफनानेवाले' तुम्हारे प्रसन्न स्मित चमकते रहते हैं ॥९८॥

कामं सन्तु सहस्त्रशः कतिपये सारस्यधौरेयकाः
कामं वा कमनीयतापरिणतिस्वाराज्यबद्धव्रताः ।
तैर्नैवं विवदामहे नच वयं देव ! प्रियं ब्रूमहे
यत्सत्यं रमणीयतापरिणतिस्त्वय्येव पारंगता ॥९९॥

सौन्दर्यके रसज्ञ (रसिकाग्रणी) कुछ हज़ारों होंगे, रहने दो । रमणीयताकी पराकाष्ठा का उच्चपद प्राप्त करनेके लिए व्रत रखनेवाले भी कुछ होंगे, परवाह नहीं । हमारा उनसे कुछ झगडा नहीं है । भगवन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यह बात नहीं कि मैं केवल मीठी मीठी बातें करता हूँ। पर यह तो बिलकुल सच है कि सौंदर्य आपमें ही चरम सीमा प्राप्त कर लेता है।।९९।।

मन्दारमूले मदनाभिरामं
विम्बाधरापूरितवेणुनादम् ।
गोगोपगोपीजनमध्यसंस्थं
गोपं भजे गोकुलपूर्णचन्द्रम् ॥१००॥

गोकुलको (अर्थात गोकुलके लोगोंको) पूर्णचन्द्र जैसे आह्लाद-देनेवाले उस गोपका मैं आश्रय करता हूँ, जो मन्दार वृक्षके नीचे खड़ा होनेपर मदन जैसे सुन्दर लगता है, बिम्ब जैसे होठोंसे मुरलीके नाद छेड़ता है, ग्वाले एवं ग्वालियोंके बींचमें (नित्य) विहार करता है।।१००॥

गलद्व्रीडालोला मदनवनिता गोपवनिता
मधुस्फीतं गीतं किमपि मधुरा चापलधुरा ।
समुज्जृम्भा गुम्भा मधुरिमगिरां मादृशगिरां
त्वयि स्थाने जाते धरति चपलं जन्म च फलम् ॥१०१॥

तुम उपस्थित होते ही गोकुलकी नारियाँ व्याकुल बनकर ढिठाई से लाज तजती हैं और कामके वश हो जाती हैं। मुरलीके गीत मादक बनते हैं। तुम्हारी नटखटी भी मनोरंजक होती है। मुझ जैसे सामान्य जनोंके वचन भी मधुरवाक् मनीषियोंकी वाणी जैसे मनोहर लगते हैं और मेरा उद्दण्ड जीवन भी सफल बनता है ॥१०१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भवनं भुवनं विलासिनीश्री-
स्तनयस्तामरसासनः स्मरश्च ।
परिचारपरम्परा: सुरेन्द्रा-
स्तदपि त्वच्चरितं विभो विचित्रम् ॥१०२॥

भगवन्, समूचा विश्व तुम्हारा घर है। तुम सौन्दर्य देवता लक्ष्मीके साथ केलि करते हो। कमलपर बैठनेवाले ब्रह्मा और मदन तुम्हारे पुत्र हैं प्रमुख देव तुम्हारे सेवक हैं। ऐसा तुम्हारा माहात्म्य सचमुच विचित्र हैं ॥१०२।

देवस्त्रिलोकीसौभाग्यकस्तूरितिलकाङ्कुरः ।
जीयाद्व्रजाङ्गनानङ्गकेलीललितविभ्रमः ॥१०३॥

जिसके ललाटका कस्तूरिका तिलक त्रैलोक्यका सौभाग्य है, और गोकुलकी गोपियोंकी प्रणयक्रीडाओंसे जिसकी भावभङ्गी आकर्षक हुई है, ऐसे कृष्णकी नित्य विजय हो ॥१०६॥

प्रेमदं च मे कामदं च मे
वेदनं च मे वैभवं च मे ।
जीवनं च मे जीवितं च मे
दैवतं च मे देव नापरम् ॥१०४॥

देव, तुम मुझे प्रेम दिलाते हो, मेरी इच्छाएँ पूर्ण करते हो। मेरी संवेदना और ऐश्वर्य तुम्हीं हो। तुम मेरे जीवन हो, जीवनाधार हो। मेरे लिए और कोई दैवत नहीं है ॥१०४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माधुर्येण विजृम्भन्तां
वाचो नस्तव वैभवे ।
चापल्येन विवर्धन्तां
चिन्ता नस्तव शैशवे ॥१०५॥

तुम्हारा महिमा गाते समय मेरी वाणी मधुरतासे प्रकट हो और तुम्हारे बाल्यके बारेमें मेरी उत्कण्ठा अधीरतासे बढती जाय ॥१०५॥

यानि त्वच्चरितामृतानि रसनालेह्यानि धन्यात्मनां
ये वा चापलशैशवव्यतिकरा राधापराधोन्मुखाः ।
या वा भावितवेणुगीतगतयो लीलामुखाम्भोरुहे
धारावाहिकया वहन्तु हृदये तान्येव तान्येव मे ॥१०६॥

तुम्हारे पुण्यचरितरूपी अमृत बड़भागी लोग अपनी जिह्वासे सेवन करते हैं (अर्थात् तुम्हारा संकीर्तन करते है), तुम्हारे बचपन की शरारतें राधाके बारेमें कोई अपराध करती थी । अथवा तुम्हारे सुंदर मुखकमलमेंसे मुरलीकी भावपूर्ण गीतोंकी लहरें निकलती थी । ये तीनों, और कुछ नहीं, मेरे हृदयमे लगातार कलोलती रहें ॥१०६॥

भक्तिस्त्वयि स्थिरतरा भगवन् यदि स्या–
द्दैवेन नः फलितदिव्यकिशोरवेषे ।
मुक्तिः स्वयं मुकुलिताञ्जलि सेवतेऽस्मान्
धर्मार्थकामगतयः समयप्रतीक्षाः ॥१०७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यदि सौभाग्यसे, हे भगवन्, तुम्हारे स्वर्गीय शैशवाकृतिपर हमारी भक्ति दृढ़तर हो जाय, तोस्वयं मोक्षपद हाथ जोड़कर हमारा सेवक बन जायेगा और धर्म, अर्थ, काम केवल समय की राह देखते रहेंगे। (समयकी–1) योग्य समयकी 2) परंपरा के अनुसार उचित अवस्थाकी ।।२०७।।)

जयजय जय देव देवदेव
त्रिभुवनमङ्गलदिव्यनामधेय ।
जयजयजय बालकृष्णदेव
श्रवणमनोनयनामृतावतार ।।१०८।।

हे सुरोत्तम कृष्ण, तुम्हारी जय हो। तुम्हारा नाम तीनों लोगोंके लिए शुभ और दिव्यफलदायी है। हे बालकृष्ण, तुम हमारे कानों, आँखों तथा अंत:करणोंको अमृतका अवतार जैसे लगते हो। तुम्हारी सदैव विजय हो। १०८।।

तुभ्यं निर्भरहर्षवर्षविवशावेशस्फुटाविर्भव–
द्भूयश्चापलभूषितेषु सुकृतां भावेषु निर्भासते ।
श्रीमद्गोकुलमण्डनाय महते वाचां विदूरस्फुर–
न्माधुर्यैकरसार्णवाय महसे कस्मैचिदस्मै नमः ।।१०९।।

हे कृष्ण, तुम्हारा आकार धारण करनेवाला जो एक अपूर्व तेज है, उसको मैं प्रणाम करता हूँ। वह तेज पुण्यवान् लोगोंके उन चिंतनोमें चमकता है, जो अत्यधिक आनंदकी वर्षाके आवेगके साथ फूट निकलते हैं और फिर चंचलतासे झलकनेवाले (यानी शीघ्र प्रकट होनेवाले) भावोंमें दमकते हैं। वह तेज समूचे गोकुलका भूषण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। वह वाणीसे कोसों दूर है। (अर्थात् शब्दोंके द्वारा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता) वह तेज मानों शुद्ध लावण्यका महान् सागर है ॥१०९॥

ईशानदेवचरणाभरणेन नीवी-
दामोदरस्थिरयशःस्तबकोद्गमेन ।
लीलाशुकेन रुचिरं तव देव कृष्ण-
कर्णामृतं वहतु कल्पशतान्तरेऽपि ॥११०॥

यह 'कृष्णकर्णामृत' ईशानदेवके चरणोंके दासने (शिवके भक्त) लीलाशुकने लिखा है। उस (लीलाशुक) की कीर्तिके भव्य गुच्छोंका, नीवीलासी कृष्ण की भक्ति के कारण, विकास हुआ है। उसकी भक्तिमें अपनी चिरंतन यश: संपदाको फलती-फलती हुई देखा है। वह काव्य सैंकडों युगोंमें भी अमर रहे ॥११०॥

॥ श्री कृष्णकर्णामृतम् ॥

— प्रथम आश्वास समाप्त —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आश्वास दूसरा

अभिनवनवनीतस्निग्धमापीतदुग्धं
दधिकणपरिदिग्धं मुग्धमङ्गं मुरारेः ।
दिशतु भुवनकृच्छ्रच्छेदि तापिञ्छगुच्छ-
च्छवि नवशिखिपिञ्छालाञ्छितं वाञ्छितं नः ॥१॥

वह कृष्ण नित्य दूध-पीता है। ताज़े मक्खनसे चिकना होनेवाला, दहीके कणोंसे चुपडा बन जानेवाला, तमालके कोंपलों जैसी नीली झाँकीवाला नये-नये मयूरपंखोंसे सोहनेवाला रूप धारण करनेवाला, संसारके दुःखोंको हरण करनेवाला, मुरारिका सुन्दर शरीर हमारी अभिलाषाएँ पूर्ण करे ॥१॥

यां दृष्ट्वा यमुनां पिपासुरनिशं व्यूहो गवां गाहते
विद्युत्वानिति नीलकण्ठनिवहो यां द्रष्टुमुत्कण्ठते ।
उत्तंसाय तमालपल्लवमिति च्छिन्दन्ति यां गोपिकाः
कान्तिः कालियशासनस्य वपुषः सा पावनी पातु नः ॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालिय सर्पका दमन करनेवाले उस कृष्णके शरीरका वह पवित्र लावण्य हमारी रक्षा करे, जिसे देखकर यमुनाका पानी पीनेके लिए प्यासी गौंओंके समूह नित्य जिसकी ओर दौड़ते हैं। बिजलीवाला मेह समझकर मोरोंका झूंड जिसे देखनेको लालायित हो उठता है और तमालके कोंपले समझकर जिसे गोपियाँ बालोंमें खोंसने के लिए तोड़ती हैं ॥२॥

देवः पायात्पयसि विमले यामुने मज्जतीनां
याचन्तीनामनुनतपदैर्वाश्चितान्यंशुकानि।
लज्जालोलैरलसविलसैरुन्मिषत्पञ्चबाणै-
र्गोपस्त्रीणां नयनकुसुमैरार्चितः केशवो नः ॥३॥

यमुनाके निर्मल जलमें गोते लगानेवाली (कृष्णके द्वारा) चुराए गए वस्त्रोंको माँगते हुए दीन शब्दोंमें गिड़ागिड़नेवाली गोपियाँ, लज्जामें झूलनेवाली, अलसाईमें सोहनेवाली और मदनकी उमंगोंको व्यक्त करनेवाली अपनी आँखोंके फूल चढ़ाकर जिसकी पूजा करती है, वह भगवान् कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥३॥

मातर्नातः परमनुचितं यत्खलानां पुरस्ता-
दस्ताशङ्कं जठरपिठरीपूर्तये नर्तितासि।
तत्क्षन्तव्यं सहजसरले वत्सले वाणि कुर्या
प्रायश्चितं गुणगणनया गोपवेषस्य विष्णोः ॥४॥

हे देवि भारति! मैंने पेटका गड्ढा भरनेके लिए (आटेदाल की फिक्रमें) तुझे निडरतासे दुष्टोंके सामने नचवाया। इससे फूहड़

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बात और क्या हो सकती है? हे अव्याज सुन्दर वत्सले वाणि, मुझे क्षमा करना। गोपरूप विष्णुके गुणोंका स्तोत्र गाकर मैं प्रायश्चित्त कर लूँगा ॥४॥

अङ्गुल्यग्रैररुणाकिरणैर्मुक्तसंरुद्धरन्ध्रं
वारं वारं वदनमरुता वेणुमापूरयन्तम् ।
व्यत्यस्याङ्घ्रि विकचकमलच्छायविस्तारिनेत्रं
वन्दे वृन्दावनसुचरितं नन्दगोपालसूनुम् ॥५॥

मैं उस वृन्दावन में प्रतिष्ठित—नन्द गोपाल के पुत्रको, नमस्कार करता हूँ, जो अपनी आरक्त प्रभावाली उंगलियोंके नोकोंसे मुरलीके छिद्र उघाड़ता है और फिर बंद करता है और बारबार मुँहकी हवा मुरली में भरकर उसे बजाता है, जो टेढ़े पांवोंपर खड़ा है और जिसकी आँखें विकसित कमलके समान सुन्दर और विशाल हैं ॥५॥

मन्दं मन्दं मधुरनिनदैर्वेणुमापूरयन्तं
वृन्दं वृन्दावनभुवि गवां चारयन्तं चरन्तम् ।
छन्दोभागे शतमखमखध्वंसिनां दानवानां
हन्तारं तं कथय रसने गोपकन्याभुजङ्गम् ॥६॥

जो मनमोहक स्वरोंसे धीरे धीरे मुरली बजाता है, जो वृन्दावन प्रदेशमें गाँवोकें समूहोंको चराते हुए घूमता है, 'इन्द्रके यज्ञोंका विध्वस करनेवाले राक्षसोंका विनाशकारी-ऐसा जिसका वर्णन वेदोंमें किया गया है, उस गोपालतनाओंके प्रियकरका, हे जिह्वे, वर्णन कर ॥६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेणीमूले विरचितघनश्यामापिञ्छावचूडो
विद्युल्लेखावलयित इव स्निग्धपीताम्बरेण ।
मामालिङ्गन्मरकतमणिस्तम्भगम्भीरबाहुः
स्वप्ने दृष्टस्तरुणतुलसीभूषणो नीलमेघः ॥७॥

मैंने उस कोमल तुलसीपत्रोंके हार धारण, करनेवाले युवाकार, नीलाभ मेहको स्वप्नमें देखा जिसके सँवारे हुए बालोमें मेघवर्ण मयूरके पंखोंका तुर्रा लगाया था और जो चमचमाते हुए पीले वस्त्रसे ऐसा दीख रहा था कि मानो वह बिजली ही से घिरा हुआ हो । वह तो पन्ने की सी आभावाले खम्भों जैसी अपनी पुष्ट भुजाओंसे मुझे आलिगन दे रहा था ॥७॥

कृष्णे हृत्वा सिचयनिचयं कूलकुञ्जाधिरूढे
मुग्धा काचिन्मुहुरनुनयैः किन्विति व्याहरन्ती ।
सभ्रूभङ्गं सदरहसितं सत्रपं सानुरागं
छायाशौरेः करतलगता यंवराण्याचकर्ष ॥८॥

जब श्रीकृष्ण किसी युवतीके वस्त्र खींचकर किनारेपर एंक डेरेदार कुंजपर जा बैठा, तब वह बेचारी भोली गोपी 'यह क्या शरारत है, छोड़ो जी', ऐसे बारबार अनुनय करने लगी । कुछ कुछ त्योरियाँ चढ़ाकर, कुछ कुछ मुसकुराती हुई, कुछ सहमाती हुई बड़े प्यारसे वह उस कृष्णके हाथसे अपने वस्त्र छुड़ाने लगी, जिसकी परछाई पानीमें गिरी थी ॥८

अपि जनुषि परस्मिन्नात्तपुण्यो भवेयं
तटभुवि यमुनायास्तादृशो वंशनालः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अनुभवति य एषः श्रीमदाभीरसूनो-
रधरमणिसमीपन्यासधन्यामवस्थाम् ॥९॥

देखो, यह बाँस पुण्यवान् नन्द के पुत्रके सुंदर अधरोंके पास रहनेका असाधारण सुख अनुभव कर रहा है। क्या मैं किसी अगले जन्ममें अपने पुण्य संचयके फलस्वरूप, यमुनाके तटपर उस तरहका मुरलीका बाँस बन जाऊँगा ? ॥९॥

अयि परिचिनु चेतः प्रातरम्भोजनेत्रं
कबरकलितचञ्चत्पिञ्छदामाभिरामम् ।
वलभिदुपलनीलं वल्लवीभागधेयं
निखिलनिगमवल्लीमूलकन्दं मुकुन्दम् ॥१०॥

हे मन, तू भगवान मुकुन्दका ध्यान कर। उसकी आँखें प्रभातके कमल जैसी सुषमायुक्त हैं। उसकी शिखामें मोहक मोर पंखों की माला हिलोलें लेरही है। उसकी कान्ति इन्द्र नीलमणि-सी है, वह गोपियोंका सौभाग्य है और वह ऐसा मूल है जिससे वेदरूपी लताएँ फूट निकली हैं ॥१०॥

अयि मुरलि मुकुन्दस्मेरवक्त्रारविन्द-
श्वसनमधुरसज्ञे त्वां प्रणम्याद्य याचे ।
अधरमणिसमीपं प्राप्तवत्यां भवत्यां
कथय रहसि कर्णे मद्दशां नन्दसूनोः ॥११॥

हे मुरली, मैं तुझे प्रणाम, करता हूँ। मुकुन्द के स्मितललित मुखकमल से निकलनेवाले साँसों की माधुरी का स्वाद तूने लिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं तुझे प्रणाम करके एक प्रार्थना करता हूँ कि जब तू नन्द गोपाल के मधुर अधर के पास जाएगी, तब एकान्त में उसके कानों में मेरी व्यथा (दु:खद अवस्था को) सुनाये ॥११॥

सजलजलदनीलं वल्लवीकेलिलोलं
श्रितसुरतरूमूलं विद्युदुल्लासिचेलम् ।
सुररिपुकुलकालं सन्मनोबिम्बलीलं
नतसुरमुनिजालं नौमि गोपालबालम् ॥१२॥

मैं उस छोटे गोपाल की स्तुति करता हूँ जो जलपूर्ण मेघ जैसे काला है। वह गोपियों के साथ खेलने में बहुत ही आनंद पाता है। वह स्वर्गीय वृक्ष के नीचे खड़े रहता है। उसके वस्त्र बिजली के समान दमकते हैं। वह राक्षस गणोंका मृत्युदेवता है। उसकी सुन्दर प्रतिमा सज्जनों के मनोंमें रहती है और उसके सामने अनेक देव और ऋषि अपना शीश नवाते हैं ॥१२॥

अधरबिम्बविडम्बितविद्रुमं
मधुरवेणुनिनादविनोदिनम् ।
कमलकोमलकम्रमुखाम्बुजं
कमपि गोपकुमारमुपास्महे ॥१३॥

जिसके बिम्ब समान होंठ मूँगे को भी लजाते हैं, जो मुरली के रसमय स्वरों से आनंद विभोर होता है और जिसका वदन कमल के समान नाजुक और सुंदर है, उस गोपबालका वर्णन क्या किया जाय ? उसी की उपासना हम करते हैं ॥१३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अधरे विनिवेश्य वंशनादं
विवराण्यस्य सलीलमङ्गुलीभिः ।
मुहुरन्तरयन्मुहुर्विवृण्वन्
मधुरं गायति माधवो वनान्ते ॥१४॥

अपने होठों के बीच मुरली को रखते हुए और उसके छिद्र उंगलियों से कौशल से कभी बंद करते और कभी खुले रखते हुए, यह माधव वनस्थली में मुरली की मीठी मीठी धुनें बजा रहा है ॥१४॥

वदने नवनीतगन्धवाहं
वचने तस्करचातुरीधुरीणम् ।
नयने कुहनाश्रुमाश्रयेथा–
श्चरणे कोमलताण्डवं कुमारम् ॥१५॥

तुम उस बालकको शरण जाओ जिसके मुँह से मक्खन की बू से मिली हुई हवा निकलती है। उसके शब्दों में चोर की वाक्पटुता है उसकी आँखोंमें छली आँसू हैं और उसकी चपल चाल में मार्दव है। १५॥

अमुनाऽखिलगोपगोपनार्थं
यमुनारोधसि नन्दनन्दनेन ।
दमुना वनसम्भवं पपे नः
किमु नासौ शरणार्थिनां शरण्यः ॥१६॥

इस नन्दके लड़केने सब गोपों की रक्षा के हेतु, यमुना के तटपर भयंकर दावानलों को भी निगल रक्खा था ! तो क्या आश्रय की खोज करनेवाले हम जैसे लोगों को वह सहारा नहीं होगा ? ॥१६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जगदादरणीयजारभावं
जलजापत्यवचोविचारगम्यम् ।
तनुतां तनुतां शिवेतराणां
सुरनाथोपलसुन्दरं महो नः ॥१७॥

जिसकी गुप्त प्रणय चेष्टाओंका समूचा संसार आदर (गर्व) करता है और ब्रह्मा के वचन के (यानी वेदों के) अध्ययन द्वारा ही जो जाना जा सकता है ऐसा इंद्रनीलमणि जैसी सुंदर कान्तिवाला कृष्ण, हमारी अमंगल बाधाओंका नाश करे ॥१७॥

या शेखरे श्रुतिगिरां हृदि योगभाजां
पादाम्बुजे च सुलभा व्रजसुन्दरीणाम् ।
सा काऽपि सर्वजगतामभिरामसीमा
कामाय नो भवतु गोपकिशोरमूर्तिः ॥१८॥

गोप बालक श्रीकृष्ण की अद्भुत मूर्ति वेदवाणी का भी उच्चत्तम (साध्य ध्येय) है। वहा आत्मज्ञ योगियों के मनमें ही विराजती है। ब्रज की गोपियों के कमलाभिराम चरणों के पास सुलभता से पाई जाती है। वह सब संसार के लावण्य की चरम सीमा है, ऐसी वह मूर्ति हमारी इच्छाएँ पूर्ण करे ॥१८॥

अत्यन्तबालमतसीकुसुमप्रकाशं
दिग्वाससं कनकभूषणभूषिताङ्गम् ।
विस्रस्तकेशमरुणाधरमायताक्षं
कृष्णं नमामि मनसा वसुदेवसूनुम् ॥१९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बहुत ही कोमल बाल्य की अवस्था में रहनेवाले, अतसी के फूलों जैसे दमकनेवाले, नग्न, परन्तु सोनेके अलंकारों से भूषित शरीर धारण करनेवाले, बिखरे हुऐ बालोंवाले, लाल होठोंवाले और विशाल नयनों-वाले वसुदेव पुत्र कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१९॥

हस्ताङ्घ्रिनिक्वणितकङ्कणकिङ्किणीकं
मध्येनितम्बमवलम्बितहेमसूत्रम् ।
मुक्ताकलापमुकुलीकृतकाकपक्षं
वन्दामहे व्रजचरं वसुदेवभाग्यम् ॥२०॥

हम उस व्रजबासी कृष्ण को नमस्कार करते हैं, जिसके हाथों में कंगन और पांवोंमें घुँगरू छुमछुम करते हैं, जिसने अपनी कमरपर सोने की करधनी बाँधी है, और जिसके सामनेवाले बालोंके पट्टोंमें मोतियों की लड़ियाँ पिरोई गयी हैं। वह तो वसुदेवका मूर्तिमान् सौभाग्य है ॥२०॥

वृंदावनद्रुमतलेषु गवां गणेषु
वेदावसानसमयेषु च दृश्यते यत् ।
तद्वेणुनादनपरं शिखिपिञ्छचूडं
ब्रह्म स्मरामि कमलेक्षणमभ्रनीलम् ॥२१॥

जो ब्रह्म वैदिक मन्त्रोंके अंतिम भागों में (अर्थात् उपनिषदों में) ही प्रतीत होता है, वही (श्रीकृष्णके रूपमें) वृन्दावनके वृक्षों, लताओं और गोधनों के बीच दीख पड़ता है। वह श्रीकृष्ण मुरलीवादन में निमग्न रहता है। उसकी शिखामें मोरपंख खोंसे हुए रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी आँखें कमलके समा न हैं और उसका वर्ण बादलों के जैसा साँव-ला हैं । २१॥

व्यत्यस्तपादमवतंसितबर्हिबर्ह-
साचीकृताननिवेशितवेणुरन्ध्रम् ।
तेजः परं परमकारुणिकं पुरस्तात्
प्राणप्रयाणसमये मम सन्निधत्ताम् ॥२२॥

तिरछे पाँवोंपर खड़ा रहनेवाला श्रीकृष्ण, अपने थोड़े से टेढ़े किए हुए मुँहमें मुरली के छिद्रवाले भागको रख देता है। उस समय उसके बालों में मोर के पंख शोभा देते हैं । वह परमदयालु ज्योति मेरे जीवन के अंतिम घड़ी में भी मेरे पास आ जाय। ॥२२॥

घोषप्रघोषशमनाय मथोगुणेन
मध्ये बबन्ध जननी नवनीतचोरम् ।
तद्बन्धनं त्रिजगतामुदराश्रयाणा-
माक्रोशकारणमहो नितरां बभूव ॥२३॥

उस गोकुल में फैलीहु ई (कृष्ण की) बदनामी को दूर करने के लिए माँ यशोदा ने उस माखन चोर की कमर को मथनी से कस दिया था। मगर, हाय, उसीके विशाल जठर में आश्रित प्राणियों को वह बन्धन भयंकर आक्रन्दन का कारण हुआ। ॥२३॥

शैवा वयं न खलु तत्र विचारणीयं
पञ्चाक्षरीजपपरा नितरां तथापि ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चेतो मदीयमतसीकुसुमावभासं
स्मेराननं स्मरति गोपवधूकिशोरम् ॥२४॥

मैं शिव का भक्त हूँ और उसमें सोचने (या सन्देह करने) के लिए कुछ अवकाश नहीं। पर अतसी फूलों के समान वर्णवाले, गोपस्त्री यशोदा के पुत्र और स्मितपूर्ण वदन वाले श्रीकृष्ण का ही मेरा मन ध्यान करता है। ॥२४॥

राधा पुनातु जगदच्युतदत्तचित्ता
मन्थानमाकलयती दधिरिक्तपात्रे ।
तस्याः स्तनस्तबकचञ्चललोलदृष्टि-
र्देवोऽपि दोहनधिया वृषभं निरुन्धन् ॥२५॥

श्रीकृष्ण के साथ लौ लग जाने के कारण जो खाली बरतन में ही दहीं मथने लगी थी, वह राधा संसार को पवित्र करे। (उसी तरह) उसके पुष्ट स्तनों पर उसकी चुलबुली चितवन गड़ी जानेके कारण सखी ने दोहने के लिए एक बैल को ही बांध रखा था, वह भगवान श्रीकृष्ण भी (संसार को मंगल बनावे।) ॥२५॥

गोधूलिधूसरितकोमलकुन्तलाग्र-
गोवर्धनोद्धरणकेलिकृतप्रयासम् ।
गोपीजनस्य कुचकुङ्कुममुद्रिताङ्गं
गोविन्दमिन्दुवदनं शरणं भजामः ॥२६॥

उस विधुवदन गोविंद को हम शरण जाते हैं जिस के बालों की लटें गायों से उड़ाई गई धूलिसे भरी हुई थीं, जिसने गोवर्धन पर्वत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उठाने की लीला दिखाने का परिश्रम किया था और जिस का अंग (वृक्षस्थल) गोपियों के स्तनों पर लगाये कुंकुमलेखाओं से रंगा हुआ था ॥२६॥

यद्रोमरन्ध्रपरिपूर्तिविधावदक्षा
वाराहजन्मनि बभूवुरमी समुद्राः ।
तं नाम नाथमरविन्ददृशं यशोदा
पाणिद्वयान्तरजलैः स्नपयाम्बभूव ॥२७॥

वराह अवतार के समय जिसका एक केशकूप भरने के लिए सब समुद्र असमर्थ हो गये थे उसी कमल जैसे नयन वाले हमारे स्वामी (श्रीकृष्ण) को यशोदा माता अपनी अंजलि में पानी भरकर नहलाया करती थी । क्या आश्चर्य ! ॥२७॥

वरमिममुपदेशमाद्रियध्वं
निगमवनेषु नितान्तचारखिन्नाः ।
विचिनुत भवनेषु वल्लवीना–
मुपनिषदर्थमुलूखले निबद्धम् ॥२८॥

हे पण्डितों, वेदरूपी अरण्यों में अविश्राम भटकने के कारण तुम थक गये हो । मेरी इस सलाह को, भला, ध्यान से सुन तो लो । तुम्हें उपनिषदों का सार पाना हो, तो गोपियों के घरों में ढूंढलो । वह तुम्हें किसी उखली से बाँधा हुआ दीख पड़ेगा । ॥२८ ।

देवकीतनयपूजनपूतः
पूतनारिचरणोदकधौतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्यहं स्मृतधनञ्जयसूतः
किं करिष्यति स मे यमदूतः ।।२९।।

यदि मैं देवकी नन्दन कृष्णकी भक्ति से पवित्र हो जाऊँ, पूतना-मर्दन कृष्ण के पादजल से अपने कों धो लूँ, और मैं अर्जुन के सारथि (कृष्ण) का ध्यान करुँ तो यमदूत मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा ।।२९।।

भासतां भवभयैकभेषजं
मानसे मम मुहुर्मुहुर्मुहुः ।
गोपवेषमुपसेदुपः स्वयं
यापि कापि रमणीयता विभो ।।३०।।

जिसने स्वयं गोपवेष धारण करके संसार की (जन्ममरण चक्र की) सब भीतियों के लिए एक (अचूक औषधि) शर्तिया दवा दिखाई है, उस प्रभु की कोई अवर्णनीय द्युति मेरे मनमें प्रकाशती रहे ।।३०।।

कर्णलम्बितकदम्बमञ्जरी-
केसरारुणकपोलमण्डलम् ।
निर्मलं निगमवागगोचरं
नीलिमानमवलोकयामहे ।।३१।।

वेदमन्त्रों को भी जो अज्ञात है ऐसी विमल, मूर्तिमती नील ज्योति को (अर्थात् श्रीकृष्ण को) हम देखते हैं। उसके गाल कानों पर रखे हुए कदम्ब फूलों के गुच्छों के परागकणों के कारण लाल हो गये है ।।३१।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साचिसञ्चलितलोचनोत्पलं
सामिकुड्मलितकोमलाधरम् ।
वेगवल्गितकराङ्गुलीमुखं
वेणुनादरसिकं भजामहे ॥३२॥

हम उस मुरली बजाने में रस लेनेवाले श्रीकृष्ण की भक्ति करते हैं जिसके कमल जैसे नयन की चितवनें तिरछी हैं, जिसके मुलायम होंठ अधखिली कली के समान झुक गये हैं, और जिसकी कोमल उंगलियाँ मुरली के छेदों पर तेजीसे थिरकती रही हैं ॥३२॥

स्यन्दने गरुडमण्डितध्वजे
कुण्डिनेशतनयाधिरोपिता ।
केनचिन्नवतमालपल्लव—
श्यामलेन पुरुषेन नीयते ॥३३॥

मुझे ऐंसा एक दृश्य नज़र आता है कि गरुडकी पताकासे सुशोभित रथपर कुण्डिनपुरकी राजकन्या (रुक्मिणी) को बिठाया गया है और वह तमालके कोंपलों की जैसी साँवली कान्तिवाले किसी पुरुस से हरण की जा रही है ॥३३॥

मा यात पान्थाः पथि भीमरथ्या
दिगम्बरः कोऽपि तमालनीलः ।
विन्यस्तहस्तोऽपि नितम्बबिम्बे
धूर्तः समाकर्षति चित्तवित्तम् ॥३४॥

हे (जीवन मार्गपर चलने वाले) पथिकों, भीमरथी नदी के किनारे के रास्ते से न गुज़रिए। क्यों कि वहाँ पर एक दिव्य वस्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(शरीर हीन होने के कारण जो केवल ज्योति रूप है) तमाल जैसे साँवला, एक पुरुष खड़ा है। उसने अपने हाथ कटि प्रदेश पर रखे हैं। (यानी वह कुछ कर्म नही करता) फिर भी वह चालाक (पथिकों का) मनोधन हरण करता है ॥३४॥

रासक्रीडा

अङ्गनामङ्गनामन्तरे माधवो
माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना ।
इत्थमाकल्पिते मण्डले मध्यगः
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥३५॥

हर दो गोपबालाओं के बीच माधव खड़ा है और माधव के पास गोपिका है। इस तरह के रचे हुए वर्तुलमें मध्यभाग में खड़े हो कर देवकी पुत्र कृष्ण ने मुरली बजाई ॥३५॥

केकिकेकादृतानेकपङ्केरुहा—
लीनहंसावलीहृद्यताहृद्यता ।
कंसवंशाटवीदाहदावानलः
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥३६॥

जो कंस रूप बाँसवाले अरण्यको भस्मसात करने वाला मानो दावाग्नि है, ऐसे देवकीसुत कृष्णने मुरली बजाई। उससे मोर हर्षविभोर हो कर केकारव करने लगे और अनगिनत कमलों में संचार करनेवाले हंसवृन्दों को भी परमानन्द से उद्वेलित कर दिया ॥३६॥

क्वापि वीणाभिराराविणा कम्पितः
क्वापि वीणाभिराकिङ्किणीनार्तितः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्वापि वीणाभिरामा तरं गापितः
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥३७॥

कभी वीणाकी झंकारसे वह अधीर हो उठता था, तो कभी वीणा पर जड़ी हुई घंटिकाओं की रुनझुन के तालपर नृत्य करता था, तो कभी वीणा के सुरीली लयों से गाने को प्रवृत्त होता था। इस तरह कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई ॥३७॥

चारुचन्द्रावलीलोचनैश्चुम्बितो
गोपगोवृन्दगोपालिकावल्लभः ।
बल्लवीवृन्दवृन्दारकः कामुकः
सञ्जगौ वेणुना देवकीन दनः ॥३८॥

चन्द्रों की पंक्तियों के समान प्रसन्न आँखे जिसे चूमती हैं (यानी जिसे एक टक देखा करती हैं) जो गोप, गोपियाँ और गावों का भी लाड़ला है, जो अनेक गोपियों का आराध्य दैवत है, ऐसे विषयलालस श्रीकृष्ण ने मधुर मुरली बजाई ॥३८।

मौलिमालामिलन्मत्तभृङ्गीलता–
भीतभीतप्रियाविभ्रमालिङ्गितः ।
स्रस्तगोपीकुचाभोगसम्मेलितं
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥३९॥

उस (श्री कृष्ण के) माथे परकी मालाओं पर गुंजा करनेवाले मतवाले भ्रमरों की पांतियों से घबरा कर उसे प्यारी गोपियों ने गाढ़ आलिगन दिया था। जहाँ से वस्त्र विगलित हुए थे ऐसे पीन स्तनोंपर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोपियों ने उसे थाम रखा था। उस श्रीकृष्ण ने मधुर मुरली बजाई। ॥३९॥

चारुचामीकराभासभामाविभु–
वैजयन्तीलतावासितोरःस्थलः।
नन्दवृन्दावने वासितामध्यगः
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥४०॥

वह देवकीसुत सर्वव्यापी श्रीकृष्ण, गोपस्त्रियों के बीच शुद्ध सुवर्ण की तरह चमक रहा था उसकी छाती वैजयंतीमाला के कारण महक रही थी। वह नन्दके उद्यान में अपने साथियों के मध्य खड़ा था। उस श्रीकृष्णने मुरली बजाई ॥४०॥

बालिकातालिकाताललीलया–
सङ्गसन्दर्शितभ्रूलताविभ्रमः।
गोपिकागीतदत्तावधानः स्वयं
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥४१॥

गोपबालाएँ तालियाँ बजा रही थी। उनपर श्रीकृष्ण की लता जैसी कोमल चटकीली भ्रुकुटियाँ बराबर ताल देकर नाच रही थीं और गोपिकाओं के गीतोंपर ध्यान देते हुए स्वयं भगवान् कृष्ण ने मुरली बजाई ॥४१॥

पारिजातं समुद्धृत्य राधावरो
रोपयामास भामागृहस्याङ्गणे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शीतशीते वटे यामुनीये तटे
सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥४२॥

राधारमण श्रीकृष्ण ने एक पारिजात का वृक्ष (वही कृष्ण) स्वर्ग से उखाड़कर सत्यभामा के सदन के आँगन में लगाया। वहीं कृष्णने उसी यमुना के किनारे वट वृक्ष की ठंडी छाँहमें मुरली बजाता था ॥४२॥

अग्रे दीर्घतरोऽन्यमर्जुनतरुस्तस्याग्रतो वर्तनी
सा घोषं समुपैति तत्परिसरे देशे कलिन्दात्मजा ।
तस्यास्तीरतमालकाननतले चक्रं गवां चारयन्
गोपः क्रीडति दर्शयिष्यति सखे पन्थानमव्याहतम् ॥४३॥

देखो, दूर एक विशाल अर्जुन वृक्ष है। उसके नीचेसे एक पगडंड़ी जाती है (अर्जुन के समीप से ही श्रीकृष्ण ने बनाया हुआ गीता मार्ग जाता है।) वह किसी गोपके घर जा मिलती है। उसके निकट ही यमुना का प्रवाह बहता है। उसके तटपर तमालों का बन है और उसमें एक चरवाहा (श्रीकृष्ण) गायों को चराता है। वहाँ खेलनेवाला कृष्ण, हे सखे, शाश्वत गतिका रास्ता ज़रूर बताएगा ॥४३॥

गोधूलिधूसरितकोमलगोपवेषं
गोपालबालकशतैरनुगम्यमानम् ।
सायन्तने प्रतिगृहं पशुबन्धनार्थं
गच्छन्तमच्युतशिशुं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥४४॥

मैं उस बालवेषधारी अच्युत(श्रीकृष्ण) के सामने सदा मेरा शीश नँवाता हूँ, जिसका मनोहर गोपवेष, गायों से उड़ाई गई धूलिसे, मैला

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होगया है, जो सैंकड़ों गोपकिशोरियों से घिरा हुआ है और जो प्रतिदिन शामको पशुओं को ठीक तरह बंधवाने के लिए हर एक घर को जाता है ॥४४॥

निधिं लावण्यानां निखिलजगदाश्चर्यनिलयं
निजावासं भासां निरवधिकनिःश्रेयसरसम् ।
सुधाधारासारं सुकृतपरिपाकं मृगदृशां
प्रपद्ये माङ्गल्यं प्रथममधिदैवं कृतधियाम् ॥४५॥

सब तरह की सुन्दरताओं का भंडार, संसार के सब आश्चर्यों का भवन, तेजों का पुंज, असीम दिव्यानंद रूपी रस का असीम निधि, अमृत की अतिरिक्त वर्षा, हरिणाक्षी (गोपियों का) स्त्रियों के पुण्यका मूर्तिमान् परिणाम, सर्व मांगल्यका निधान, स्थित प्रज्ञों का आद्य देवता-ऐसा जो श्रीकृष्ण है, उसको मैं शरण जाता हूँ ॥४५॥

आताम्रपाणिकमलप्रणयप्रतोद-
मालोलहारमणिकुण्डलहेमसूत्रम् ।
आविःश्रमाम्बुकणमम्बुदनीलमव्या-
दाद्यं धनञ्जयरथाभरणं महो नः ॥४६॥

अर्जुन के रथ को अलंकृत करने वाला कृष्ण, वह आदिम ज्योति, हमारी रक्षा करे। उसने अपने कमल जैसे अरुण करों में कोड़ा थाम लिया था और उसपर एक माला झूल रही थी। उसके कानों में कुण्डल थे और कमर में सोने की करधनी थी। उस के बादल जैसे साँवले शरीर पर पसीने की बूँदे चमक रही थीं ॥४६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नखनियमितकण्डून्पाण्डवस्यन्दनाश्वा-
ननुदिनमभिपिञ्चन्नञ्जलिस्थैः पयोभिः ।
अवतु विततगात्रस्तोत्रनिष्यूतमौलि-
र्दशनविधृतरश्मिर्देवकीपुण्यराशिः ॥४७॥

वह (श्रीकृष्ण) अर्जुन के रथ के घोड़े की खुजली अपने नखोंसे शांत करता था (या अर्जुन के रथके घोड़ों को अपने नाखूनोंसे खुजलाता था।) और प्रति दिन अपने हाथों में पानी ले ले कर उनको धोया करता था। कभी अपने शरीर को लम्बा करके सरपर तमाचा रखता था और लगाम दांतों में पकड़ता था। वह तो देवकी के पुण्यसंचय के कारण ही अवतार ले आया था। वह श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करे ।।४७॥

व्रजयुवतिसहाये यौवनोल्लासिकाये
सकलशुभविलासे कुन्दमन्दारहासे ।
निवसतु मम चित्तं तत्पदायत्तवृत्तं
मुनिसरसिजभानौ नन्दगोपालसूनौ ॥४८॥

वह व्रजकी गोपियों का सहारा है। उसके शरीर पर तरुणाई विलास कर रही है। वह सब मंगल वस्तुओं का प्रकाश है। उसकी मुसकान कुन्द और मन्दार के फूलों जैसी धवल है और वह मुनिरूपी कमलों को प्रसन्न करने बाला सूर्य ही है। उस नन्दगोपाल के पुत्र-श्रीकृष्ण के चरणोंके ध्यान में मेरा मन सतत मग्न रहे ।।४८॥

अरण्यानीमार्द्रस्मितमधुरबिम्बाधरसुधा-
सरण्या संक्रान्तैः सपदि मदयन्वेणुनिनादैः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धरण्या सानन्दोत्पुलकमुपगूढाङ्घ्रिकमलः
शरण्यानामाद्यः स जयतु शरीरी मधुरिमा ॥४९॥

शरणार्तों की रक्षा करनेवालों में सर्वश्रेष्ठ, वह लावण्य की मूर्ति श्रीकृष्ण,-विजयी रहे। बिम्ब जैसे अरुण रंग के अधरों से निकलनेवाली उसकी स्निग्ध मुस्कुराहट और मुरली की मधुर ध्वनि, समूचे बनको (बनवासियों को) परवश बनाती है (उनका मन हरण करती है) जब धरती उसके पदकमलों को चूमती है, तब उस पृथ्वी के शरीर पर हर्ष से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ॥४९॥

विदग्धगोपालविलासिनीनां
संभोगचिह्नाङ्कितसर्वगात्रम् ।
पवित्रमाम्नायगिरामगम्यं
ब्रह्म प्रपद्ये नवनीतचोरम् ॥५०॥

मैं उस श्रीकृष्ण को शरण जाता हूँ जो स्वयं ब्रह्म और है पवित्र वेद सूक्तों को भी अज्ञेय है। किन्तु श्रीकृष्ण के रूप में वह माखन की चोरी करता है और उसके पूरे शरीरपर छबीली गोपियों के साथ की हुई रति क्रीडा की निशानियाँ लगी हुई हैं ॥५०॥

अन्तर्गृहे कृष्णमवेक्ष्य चोरं
बद्ध्वा कवाटं जननीं गतैका ।
उलूखले दामनिबद्धमेनं
तत्रापि दृष्ट्वा स्तिमिता बभूव ॥५१॥

कोई एक गोपी श्रीकृष्ण को अपने घरके अंदर चोरी करते हुए देख, दरवाज़ा बन्द करके, उसकी माता यशोदा के पास शिकायत करने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए गयी। पर उधर भी उसे उखलीको रस्सी से बँधा हुआ देखकर हक्का-बक्का रह गयी ॥५१॥

रत्नस्थले जानुचरः कुमारः
सङ्क्रान्तमात्मीयमुखारविन्दम् ।
आदातुकामस्तदलाभखेदा-
द्विलोक्य धात्रीवदनं रुरोद ॥५२॥

एक दिन घुटनों के बल रेंगनेवाले बालकृष्णने मणियों से जड़ी हुई दीवार में अपने ही कमल वदनका प्रतिबिंब देखा। उसने उसे पकड़ने को चाहा, पर उसे वह कहाँ मिले ! बेचारा विषण्ण होकर अपनी धायका का मुँह ताकने लगा और बाद में ज़ोरसे रो पड़ा ॥५२॥

आनन्देन यशोदया समदनं गोपाङ्गनाभिश्चिरं
साशङ्कं बलविद्विषा सकुसुमैः सिद्धैः पृथि व्याकुलम् ।
सेर्ष्यं गोपकुमारकैः सकरुणं पौरैर्जनैः सस्मितं
यो दृष्टः स पुनातु नो मुररिपुः प्रोत्क्षिप्तगोवर्धनः ॥५३॥

गोवर्धन को उखाड़कर हथेली पर थामनेवाला वह मुरशत्रु श्रीकृष्ण हमारा उद्धार करे। तब (गोवर्धनपर्वत को उठाये जानेके बाद) यशोदा उसे खुशी से देख रही थी। गोपियाँ प्रणय भरी आँखों से देर तक उसको घूर रही थीं। इन्द्र डरके मारे सन्देह से ही देख रहा था। सिद्धं ने पुष्पांजलियों से उसका दर्शन किया और पृथ्वी की नज़र घबराहट से चंचल हो गयी। गोप बालकों में उसको देखते समय ज़रा डाह पैदा हुआ। नागरिकों की करुणामयी दृष्टि, उस पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गिरी और कुछ लोगों ने मुस्कुराहट से साथ उसका विलोकन किया ।।५३।।

उपासतामात्मविदः पुराणाः
परं पुमांसं निंहितं गुहायाम् ।
वयं यशोदाशिशुबाललीला—
कथासुधासिन्धुषु लीलयामः ।।५४।।

प्राचीन आत्मज्ञानी हृदय की गुहा में निहित परमपुरुष की—परब्रह्म की—उपासना करते हैं, करने दो। हम तो यशोदा के मुन्ने की बाल क्रीड़ाओं के अमुत मधुर कथाप्रवाहो में ही तैरते रहेंगे—तल्लीन हो जाएँगे ।।५४।।

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या
मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोच-
द्गोविन्द दामोदर माधवेति ।।५५।।

कहते हैं कि कोई गोपी दहीं आदि चीजें बेचने के लिए निकल पड़ी थी। उसने अपना मन तो श्रीकृष्ण के पाँवों को न्यौछावर कर रखा था। इसलिए उसीके चिन्तन मैं वह बावरी बन गई और (दूध, दही पुकारने के बजाय) गोविन्द दामोदर, माधव, ऐसे ही पुकारने लगी ।।५५।।

उलूखलं वा यमिनां मनो वा
गोपाङ्गनानां कुचकुद्मलं वा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुरारिनाम्नः कलभस्य नून-
मालानमासीत्त्रयमेव भूमौ ॥५६॥

उखली, संयमी लोगों के मन और गोपवनिताओं के खिलते हुए स्तन-बस यही तीन मुरारी रूपी हाथी के बच्चे को बाँध रखने के खूँटे थे ॥५६।

करारविन्देन पदारविन्दं
मुखारविन्देन विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥५७॥

मैं उस नन्हे मुकुन्दका मनमें स्मरण करता हूँ जो वट पत्रके सेज-पर सोते समय अपना चरण कमल, कमल समान कोमल हथेली से, कमल जैसे लुभावने मुँहमें डालता है। ५७॥

शम्भो स्वागतमास्यतामित इतो वामेन पद्मासन
क्रौञ्चारे कुशलं सुखं सुरपते वित्तेश नो दृश्यसे ।
इत्थं स्वप्नगतस्य कैटभाजितः श्रुत्वा यशोदा गिरः
किं किं बालक जल्पसीति रचितं धूधूकृतं पातु नः ॥५८॥

"हे शिव, तुम्हारा स्वागत है, आओ ब्रह्मन्, बैठो मेरी बायी तरफ क्यों सुब्रह्मण्य, कहो तुम्हारा कुशल तो है। देवेश, तुम सुखी हो न? ओ हो कुबेर, तुम तो नज़र ही नहीं आते।" इस प्रकार कैटभरिपु श्रीकृष्ण को सपने में बोलते हुए देख यशोदा माता" अरे मुन्ने, तुम क्या बक रहे हो- हायरी, छीः छीः, पाप शान्त हो!"- इस तरह चिल्लाने लगी। यशोदा माँका वह धूत्कार हमारी रक्षा करे ॥५८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मातः किं यदुनाथ देहि चषकं किं तेन पातुं पथ-
स्तन्नास्त्यद्य कदास्ति वा निशि निशा का वाऽन्धकारोदयः ।
आमील्याक्षियुगं निशाऽप्युपगता देहीति मातुर्मुहुः
र्वक्षोजांशुककर्षणोद्यतकरः कृष्णःस पुष्णातु नः ॥५९॥

कृष्ण– माँ ––

यशोदा– क्या चाहिये, यदुराज ?

कृष्ण– मुझे एक पीने की प्याली दो ।

यशोदा– किस लिए ?

कृष्ण– दूध पीनेके लिए ?

यशोदा– आज तो दूध ही नहीं है ।

कृष्ण– फिर कब मिलेगा ?

यशोदा– रात में ।

कृष्ण– रात क्या है ?

यशोदा– अन्धेरे का छा जाना ।

यह सुनकर श्रीकृष्ण ने अपनी दोनों आँखें बंद करके "यह लो, रात हो गयी, अब दे दो दूध"–ऐसे कहा । वह माता के....वक्ष-स्थलपर का वस्त्र बार-बार अपने हाथों से खींचने लगा । वह कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥५६॥

कालिन्दीपुलिनोदरेषु मुसली यावद्गतः खेलितुं
तावत्कार्परिकं पयः पिब हरे वर्धिष्यते ते शिखा ।
इत्थं बालतया प्रतारणपराः श्रुत्वा यशोदा गिरः
पायान्नः स्वशिखां स्पृशन् प्रमुदितः क्षीरेऽर्धपीते हरिः ॥६०॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"देखो हरि, बलराम यमुनाके तटके रेतीले मैदानपर खेलने के लिए गया है। तब तक तुम इस खप्पर में जो दूध है सो पी लो। फिर देखो, तुम्हारे बाल कैसे बढ़ जाएँगे ?" ये यशोदा के लालचभरे शब्द सुनकर कृष्ण ने बाल्यसुलभ उतावली से दूध तो आधा पी लिया और बड़ी खुशी से (कितनी बढ़ गई है यह देखने के लिए) अपनीं शिखा को हथियाने लगा। वह हरि हमारीं रक्षा करे ॥६०॥

कैलासो नवनीतति क्षितिरियं प्राग्जग्धमृल्लोष्टति
क्षीरोदोऽपि निपीतदुग्धति लसत् स्मेरे प्रफुल्ले मुखे ।
मात्राऽजीर्णधिया दृढं चकितया नष्टाऽस्मि दृष्टः कया
धूधू वत्सक ! जीव जीव चिरमित्युक्तोऽवतान्नो हरिः ॥६१॥

श्रीकृष्ण के उस मन्द हाससे चमकनेवाले प्रसन्न मुख के लिए पूरा कैलास पर्वत भी (वर्णसाम्य के कारण) माखन का निवाला जैसा हो जाता था। उसे सारी पृथ्वी पहले ही खाये हुए मिट्टी के ढेले के समान लगती थी। उस में क्षीरसागर भी (मामुली तौर पर) पीये हुए दूध के समान हो जाता था। इस डरसे कि उसको ज़रूर बदहज़मी (अपच) हो गयी है, उसकी माँ यशोदा बहुत ही घबरा गयी और कहने लगी– हाय, मैं मर गई। किसकी बुरी नज़र गिर गई तुझपर ! हाय, हाय! बेटे, जुग जुग जिओ तुम !" इस तरह यशोदा माँ ने जिससे कहा, वह हरि हमारी रक्षा करे ॥६१॥

किञ्चित्कुञ्चितलोचनस्य पिबतः पर्यायपीतस्तनं
सद्यः प्रस्नुतदुग्धबिन्दुमपरं हस्तेन सम्मार्जतः ।
मात्रैकाङ्गुलिलालितस्य चुबुके स्मेराननस्याधरे
शौरेः क्षीरकणान्विता निपतिता दन्तद्युतिः पातु नः ॥६२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीकृष्ण अपनी माता केस्तनों का दूध पी रहा था। वह उस स्तन को धीरे धीरे मसल रहा था जिससे कि दूध के कुछ बूँद झर रहे थे। उसकी माँ भी उसकी ठुड्डी को सहला रही थी। और उस समय हरिके स्मितपूर्ण मुँहवाले होठों पर दूध के बूँदों से मिश्रित जो दाँत की झाग झलकने लगी, वह झाग हमारी रक्षा करे ।६२॥

उत्तुङ्गस्तनमण्डलोपरिलसत्प्रालम्बमुक्तामणे–
रन्तर्बिंबितमिन्द्रनीलनिकरच्छायानुकारिद्युतेः ।
लज्जाव्याजमुपेत्य नम्रवदना स्पष्टं मुरारेर्वपुः
पश्यन्ती मुदिता मुदेऽस्तु भवतां लक्ष्मीर्विवाहोत्सवे ॥६३॥

देवी लक्ष्मी (रुक्मिणी के रूप में) विवाह के समारोह में लाज के मिष से नीचे सर करके खड़ी थी। अपने पुष्ट स्तनोंपर लटकनेवाले मोतियों के हार में जो बड़ा इन्द्रनील रत्न जड़ा हुआ था, उसमें उसने नीलरत्न जैसे चमकनेवाला मुरारिका प्रतिबिंब देखा। उसे देखकर अत्यानंद पानेवाली लक्ष्मी आपको भी आह्लादित करे ।।६३।।

कृष्णेनाम्ब गतेन रन्तुमधुना मृद्भक्षिता स्वेच्छया
तथ्यं कृष्ण क एवमाह मुसली मिथ्याम्ब पश्याननम् ।
व्यादेहीति विदारिते शिशुमखे दृष्ट्वा समस्तं जग–
न्माता यस्य जगाम विस्मयपदं पायात्स नः केशवः ॥६४॥

"माँ कृष्ण अत्र खेलने के लिए गया था और यह देखो उसने जी भर मिट्टी खाई।"

"बोलो कृष्ण, क्या यह सच है?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"कौन बोला माँ ?"

"बलराम भैय्या-"

"झूठ, बिलकुल झूठ माँ ? मेरा मुँह तो देख लो।"

"अच्छा खोलो।"

ऐसे (यशोदा माँ ने) कहने पर उसने मुँह खोला, पर उसमें पूरा विश्व समाया हुआ देखकर माँ यशोदा भौंचक्की हुई। वह केशव हमारी रक्षा करें ।६४॥

स्वाती सपत्नी किल तारकाणां
मुक्ताफलानां जननीति रोषात् ।
सा रोहिणी नीलमसूत रत्नं
कृतास्पदं गोपवधूकुचेषु ॥६५॥

सब तारकाओं की सौत--स्वाति--(क्यों कि सब चन्द्र की पत्नियाँ हैं) मोतियों को पैदा करती हैं। कहते हैं कि सौतिये दो डाह के वश होकर रोहिणी ने उस नील मणि को जन्म दिया (श्रीकृष्ण का जन्म रोहिणी नक्षत्रपर हुआ था) जिसने गोपियों के स्तन मण्डलों पर अपना निबास स्थान बना लिया। ६५॥

नृत्यन्तमत्यन्तावलोकनीयं
कृष्णं मणिस्तम्भगतं मृगाक्षी ।
निरीक्ष्य साक्षादिव कृष्णमग्रे
द्विधा वितेने नवनीतमेकम् ॥६६॥

नाचने कूदनेवाले कृष्ण के अति नयनरम्य रूपका रत्न खचित खंभों में प्रति बिंब देखकर हरिण जैसी आंखोंवाली यशोदा ने उसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण ही समझा और एक ही माखन के गोले को दो भागों में बाँट दिया ॥६६॥

वत्स जागृहि विभातमागतं जीव कृष्ण शरदां शतं शतम् ।
इत्युदीर्य सुचिरं यशोदया दृश्यमानवदनं भजामहे ॥६७॥

"जाग उठो, बेटे, अब सबेरा हो गया। जुग जुग जिओ कृष्ण, मेरे लाल।" ऐसे पुकारती हुई यशोदाने उसका मुँह बहुत देर तक निहारा। उस कृष्ण की उपासना हम करते हैं ।६७।

ओष्ठं जिघ्रन् शिशुरितिधिया चुम्बितो वल्लवीभिः
कण्ठं गृह्णन्नरुणितपदं गाढमालिङ्गिताङ्गः ।
दोष्णा लज्जापदमभिमृशन्नङ्कमारोपितात्मा
धूर्तस्वामी हरतु दुरितं दूरतो बालकृष्णः ॥६८॥

यह समझकर कि कृष्ण बच्चा ही है, जब गोपियों ने कृष्ण को चूमा, तो उसने उनके होठों को खूब चूम लिया। बालक समझकर उसे जब गोपियों ने गले लगाया, तब श्रीकृष्ण ने उनके गलों को ऐसे ज़ोर से पकडा आलिंगन दिया) कि वह जगह लाल हो गई, और शिशु समझकर जब गोपियोंने उसे गोद में रखा, तो वह उनके गुप्त अंगों को छूने लगा। ऐसा धूर्तोंका अगुआ (विटवर) बालकृष्ण, हमारे पापों को दूर, दूर हरा दे ॥६८॥

एते लक्ष्मण जानकीविरहितं मां खेदयन्त्यम्बुदा
मर्माणीव च घट्टयन्त्यलममी क्रूराः कदम्बनिलाः ।
इत्थं व्याहृतपूर्वजन्मचरितं यो राधया वीक्षितः
सेर्ष्यं शङ्कितया स नःसुखयतु स्वप्नायमानो हरिः ॥६९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक समय सपने में बोलते हुए श्रीकृष्ण ने इस तरह अपने पूर्व जन्म की बात कह दी। ''लक्ष्मण, सीता से वियोग हो गया है– इस लिए ये बादल मुझे बहुत ही सताते हैं। (कदम्ब वृक्ष पर से आनेवाले ये निर्दय पवन मेरे मर्मों पर कठोर आघात कर रहे हैं। जब राधा ने उसको ऐसे (सपने में बोलते हुए) देखा तो उसके मन में डाह पैद हुआ। ऐसे स्वप्नमें बोलनेवाला हरि हमको सुख प्राप्त कराए।।६९।।

ओष्ठं मुञ्च हरे बिभेमि भवता पानैर्हता पूतना
कण्ठाश्लेषममुं जहीहि दलिता वालिङ्गनेनार्जुनौ।
मा देहि च्छुरितं हिरण्यकशिपुर्नीतो नखैः पञ्चता–
मित्थं वारितरात्रिकेलिरवताल्लक्ष्म्यापहासाद्धरिः ॥७०॥

''हरि, छोड़दो मेरे होंठों को चूमना। मुझे तो बहुत डर लगती है। क्यों कि तुमने पूतनाको (उसके स्तन) चूसते चूसते ही मार डाला था। मुझे इस तरह गले मत लगाओ क्यों कि अर्जुन वृक्ष (वृक्षरूप राक्षस थे) तुम्हारे ही आलिंगन से चकनाचूर हो गये थे। मेरे शरीर को उंगलियों से मत सहलाओ। क्यों कि तुम्हारे नखों से ही हिरण्य-कशिपुत्र का वध हुआ था।'' इस तरह बड़ी चालाकी से लक्ष्मी ने हरि से रात की प्रणय क्रीडा स रोक दिया था। वही हरि हमारी रक्षा करे।।७०।।

रामो नाम बभूव हुं तदबला सीतेति हुं तौ पितु–
र्वाचा पञ्चवटीतटे विहरत तामाहरद्रावणः।
निद्रार्थं जननीकथामिति हरेर्हुङ्कारतः शृण्वतः
सौमित्रे क्व धनुर्धनुर्धनु रिति व्यग्रा गिरः पान्तुः वः ॥७१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"कोई राम नाम का एक मनुष्य था।" हुम्– "उसकी पत्नी का नाम सीता था–" हुम्। वे दोनों पिता की आज्ञा के अनुसार पञ्चबटी की सीमापर घूम रहे थे। एक दिन रावण सीता को ले भागा।" इस तरह कृष्ण को सुलाने के लिए जो कथा यशोदा माँ कह रही थी, उसे हुंकार के साथ कृष्ण सुन रहा था। किन्तु यकायक (रावण के सीता-पहरण की बात सुनते ही) "लक्ष्मण, धनुष्य, धनुष्य कहाँ है मेरा धनुष्य ?" इस तरह आवेश में आकर श्रीकृष्ण चिल्लाने लगा। वे आवेश भरे वचन तुम्हारीं रक्षा करें ॥७१॥

बालोऽपि शैलोद्धरणाग्रपाणि—
नीलोऽपि नीरन्ध्रतमःप्रदीपः।
धीरोऽपि राधानयनावबद्धो
जारोऽपि संसारहरः कुतस्त्वम् ॥७२॥

तुम शिशु हो। पर तुम्हारी हथेलियाँ गोवर्धन पर्वत को भी उठा सकती हैं। तुम काले हो, फिर भी धने अन्धेरे में प्रदीप जैसे हो। तुम स्थिर अविचल हो, फिर भी राधा की आँखों में फँस जाते हो। तुम बहु वल्लभ होने पर भी जन्म मरण चक्रका नाश करते हो। कंसे बिचित्र हो तुम ? ॥७२॥

बालाय नीलवपुषे नवकिङ्किणीक—
जालाभिरामजघनाय दिगम्बराय।
शार्दूलदिव्यनखभूषणभूषिताय
नन्दात्मजाय नवनीतमुषे नमस्ते ॥७३॥

उस नंगे माखनचोर नन्दके पुत्रको मैं नमस्कार करता हूँ, जिसका शरीर साँवला है, जो सुंदर घटाओंवाली करधनी पहने हुए है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और जिसकी छाती पर मनोहर बाघ नखों का अलंकार झलकता है ॥७३॥

पाणौ पायसभक्तमाहितरसं बिभ्रन्मुदा दक्षिणे
सव्ये शारदचन्द्रमण्डलनिभं हैयङ्गवीनं दधत् ।
कण्ठे कल्पितपुण्डरीकनखमप्युद्दामदीप्तिं वहन्
देवो दिव्यदिगम्बरो दिशतु नः सौख्यं यशोदाशिशुः ॥७४॥

दाहिने हाथ में मधुमिश्रित खीर का पात्र बड़ी ख़ुशी के साथ रखा है। बाये हाथ में शारदीय चन्द्रबिम्ब जैसे सफ़ेद ताज़े माखन को रखा है। गले में बाघनखों की माला धारण की है। फिर भी उसके शरीर की कान्ति सर्वत्र फैली है। उसका नंगापन भी अपूर्व (या स्वर्गीय) है। ऐसा वह यशोदा का लाल हमें सुखी करे ॥७४॥

किङ्किणिकिणिकिणिरभसै—
रङ्गणभुवि रिङ्गणैः सदाऽरन्तम् ।
कुङ्कुणुकुणुपदयुगलं
कङ्कणकरभूषणं हरिं वन्दे ॥७५॥

हमेशा आँगन में ठुमकते रहने के कारण जिसकी करधनी की घंटाएँ रुनझुन करती हैं और जिसके हाथ के कड़ों और पाँव के पायलों से भी झनकार निकलती है, उस हरिको मैं प्रणाम करता हूँ ॥७५॥

सम्बाधे सुरभीणा—
मम्बामायासयन्तमनुयान्तीम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लम्बालकमवलम्बे
तं बालं तनुविलग्नजम्बालम् ॥७६॥

उस बालक का मैं सदा आश्रय लेता हूँ जिसका शरीर मिट्टी से गंदा हुआ है, जिसके घुंघराले लम्बे बाल (ललाट पर) फैले हुए हैं, और जों गौवों के समूहों में दौड़ता है। उस समय उसके पीछे भागनेवाली माँ को बहुत थकाता है ॥७६॥

अञ्चितपिञ्छापीडं
वञ्चितसौजन्यवल्लवीबाल्यम् ।
अधरमणिनिहितवेणुं
बालं गोपालमनिशमवलम्बे ॥७७॥

मैं उस गोप शिशु का सहारा हरदम लेता हूँ जिसकी शिखा मोर पंखों से अलंकृत है, जिसने अपने बचपन में ही अनेक भोली गोपियों को आकृष्ट किया है (या, प्रेम से आकृष्ट होनेवाली गोपियाँ जिसके इर्द-गिर्द में रहती हैं) और जों (नित्य) अपने अति रम्य अधरों में मुरली रखता है ॥७७॥

प्रह्लादभागधेयं
निगममहाद्रेर्गुहान्तराधेयम् ।
नरहरिसदाभिधेयं
विबुधविधेयं ममानुसंधेयम् ॥७८॥

जो प्रह्लाद का सौभाग्य है, जो केवल वेदरूपी महा पर्वतों की गुफाओं में ही पाया जा सकता है, जो नरहरि नाम से पुकार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने योग्य है और सब विद्वान् जिसे ध्येय मानते हैं, उस श्रीकृष्ण का ध्यान मुझे भी करना चाहिए ।।७८।।

संसारे किं सारं ?
कंसारेश्चरणकमलपरिभजनम् ।
ज्योतिः किमन्धकारे
यदन्धकारेरनुस्मरणम् ।।७९।।

इस (अशाश्वत) संसार में (ध्यान करने योग्य) ग्राह्य तत्व क्या है–

कंसके शत्रु श्रीकृष्ण के पादारविंद की सेवा। (संसार के अज्ञान रूपी) अन्धेरे में (ज्ञानमय) प्रकाश कौनसा है। अन्धक का नाश करनेवाले श्रीकृष्ण का संतत ध्यान ।।७९।।

कलशनवनीतचोरे
कमलादृक्कुमुदचन्द्रिकापूरे ।
विहरतु नन्दकुमारे
चेतो मम गोपसुन्दरीजारे ।।८०।।

घड़ेमे से (पात्र में से) माखन चुरानेवाले, लक्ष्मी के नेत्रकुमुदों को चन्द्रिका जैसे आह्लाद देनेवाले, गोपसुन्दरियों के प्रीतम, नन्दके लाल में, मेरा मन निरत रहे ।।८०।।

क त्वं बाल ? बलानुजः, किमिह ते ? मन्मन्दिराशङ्कया
युक्तं तन्नवनीतपात्रविवरे हस्तं किमर्थं न्यसेः ।
मातः कञ्चन वत्सकं मृगयितुं, मा गा विषादं क्षणा—
दित्येवं वरवल्लवीप्रतिवचः कृष्णस्य पुष्णातु नः ।।८१।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"तू कौन है रे बच्चे ?

"मैं बलराम का छोटा भाई हूँ ।"

"यहाँ पर क्यों आया ।"

"यह घर मेरा समझकर आया, भूल से ।"

"ठीक है । पर तूने माखन के बरतन में हाथ क्यों डाला ?" । "कुछ नहीं माँ । मैं किसी (खोये हुए) बछड़े को ढूंढ रहा था । माँ क्षण भर भी बुरा (खेद) मानने की जरूरत नहीं !" । इस तरह किसी धन्य गोपी से श्रीकृष्ण ने जो शब्द कहे, वे हमारा जीवन सुख पूर्ण बनाएँ ।।८१।।

गोपालाजिरकर्दमे विहरसे विप्राध्वरे लज्जसे
ब्रूषे गोकुलहुङ्कृतैः स्तुतिशतै मौनं विधत्से विदाम् ।
दास्यं गोकुलपुंश्चलीषु कुरुषे स्वाम्यं न दान्तात्मसु
ज्ञातं कृष्ण तवाङ्घ्रिपङ्कजयुगं प्रेम्णाचलं मञ्जुलम् ॥८२॥

हे कृष्ण, तुम गोपों के आँगनों के कीचड़ में भी खेलते हो, पर किसी ब्राह्मण की यज्ञ वेदिकी ओर जानेके लिए हिचकिचाते (शरमाते) हो । गाँवों की गुहार को तुम प्रतिशब्द देते हो, लेकिन विद्वानों की सैकडों प्रशंसोक्तियों की ओर मौन बरतते हो । गोकुल की छिनाल (अपना पति रहनेपर भी गुप्त रूप से श्रीकृष्ण से प्रेम करनेवाली) स्त्रियों के तुम सेवक भी बनते हो, मगर संयतात्म योगियों का आधिपत्य तुम स्वीकारते नहीं । हाँ अब पता चला । तुम्हारे सुंदर चरणकमल अव्याज प्रेम से ही रीझते हैं । ८२।

नम तस्मै यशोदाया
दायादायास्तु तेजसे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्धि राधामुखाम्भोजं
भोजं भोजं व्यवर्धत ॥८३॥

मैं उस यशोदा से प्रसूत प्रकाश धन को नमस्कार करता हूँ जो राधा के मुख कमल का आस्वाद लेता गया और उसकी चारुता भी बढ़ाता गया ॥८३॥

अवताराः सन्त्वन्ये
सरसिजनयनस्य सर्वतोभद्राः ।
कृष्णादन्यः को वा
प्रभवति गोगोपगोपिकामुक्त्यै ? ॥८४॥

कमलनेत्र विष्णु के विश्वमंगल अवतार कितने भी हों; पर श्रीकृष्ण के सिवाय और कौन अवतार गौओं, गोपों और गोपियोंको मोक्ष देने में समर्थ है ॥८४॥

मध्ये गोकुलमण्डलं प्रतिदिशं चाम्बारवोज्जृम्भिते
प्रातर्दोहमहोत्सवे नवघनश्यामं रणन्नूपुरम् ।
फाले बालविभूषणं कटिरटत्सत्किंकिणीमेखलं
कण्ठे व्याघ्रनखं च शैशवकलाकल्याणकार्त्स्न्यं भजे ॥८५॥

सबेरे जब गायों को दोहने की धूमधाम चलती है और सब दिशाएँ गायों की गोहारसे गूंजती है, तब सब गोकुल क्षेत्र में श्रीकृष्ण संचार करता है। उसका वर्ण नये बादलों जैसा काला है। उसके पाँव में पायल छुमछुमते हैं। ललाट पर बच्चों को अनुरूप अलंकार चमकते हैं । कमर पर बाँधी हुई सोने की करधनी की घटाएँ रुनझुन करती हैं। उसके गले में बाघनखों की माला रहती है। उस समय जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाल्य की मंगल कान्ति का संपूर्ण विधान जैसे भाता है, उस श्रीकृष्ण को मैं शरण जाता हूँ ॥८५॥

सजलजलदनीलं दर्शितोदारलीलं
करतलधृतशैलं वेणुनादै रसालम् ।
व्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं
कलितललितमालं नौमि गोपालबालम् ॥८६॥

पानी से (भाप से) भरे हुए बादल जैसे साँवला रंगवाले, अपनी सरस केलिको दिखानेवाले, हथेलीपर (गोवर्धन) पर्वत थामनेवाले, मुरली की ध्वनि से लोगों को लुभानेवाले, सब गोकुल वासियों का रक्षण करनेवाले, (गोकुल की) रमणियों से (प्रणय) क्रीडा करने का हौसला रखनेवाले और सुंदर माला धारण करनेवाले-गोपबालक-श्रीकृष्ण की- मैं स्तुति करता हूँ ॥८६॥

स्मितललितकपोलं स्निग्धसङ्गीतलोलं
ललितचिकुरजालं चौर्यचातुर्यलीलम् ।
शतमखरिपुकालं शातकुम्भाभचेलं
कुवलयदलनीलं नौमि गोपालबालम् ॥८७॥

मैं उस गोपशिशु की प्रशंसा करता हूँ जिसके गाल मुस्कुराहट से मनोहर लगते हैं, जो मधुर (मुरली के) संगीत में झूमता है, जिसके बाल उलझे हुए तथा चिकने हैं, जो (भक्तों के मन या दध्यादिक) चोरी करने में भी चालाकी दिखाता है, जो इंद्र के शत्रुओं का विध्वंस करता है, जो सोने जैसे चमकनेवाले वस्त्र पहनता है और जो नील-कमल जैसा सांवला है ॥७८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुरलिनिनदलोलं मुग्धमायूरचूडं
दलितदनुजजालं धन्यसौजन्यलीलम् ।
परहितनवहेलं पद्मसद्मानुकूलं
नवजलधरनीलं नौमि गोपालबालम् ॥८८॥

मैं नये बादलों जैसे काले शरीरवाले गोपशिशु श्रीकृष्ण की लीला गाता हूँ। वह (श्रीकृष्ण) मुरली बजाने में व्यग्र रहता है। उसके बालों में मोरों के मनोहर पंख हैं। उसने राक्षसों के समुदायों को कुचल डाला है। वह पुण्यश्लोक साधुओं से आनंद पाता है। वह दूसरों के लिये (दूसरों के कल्याण के लिये) नित्य निराली लीला दिखाता है। और वह लक्ष्मीपर (या ब्रह्मापर) सदा प्रसन्न रहता है। (उसकी क्रीड़ाएँ निश्छल एवं सरस होती हैं।) ॥८८॥

सरसगुणनिकायं सच्चिदानन्दकायं
शमितसकलमायं सत्यलक्ष्मीसहायम् ।
शमदमसमुदायं शान्तसर्वान्तरायं
सुहृदयजनदायं नौमि गोपालरायम् ॥८९॥

वह (कृष्ण) सब आकर्षक लक्षणों का निधान है। वह मूर्तिमान सत्, चित् और आनंद हैं। उसने संसार के सभी भ्रांतियों का निरास किया है। वह सत्यरूपी श्री का सहचर है। उसमें इन्द्रिय संयम और मन. संयम एकत्र वास करते हैं। उसने सब संकटों का निवारण किया है। और वह शुद्धमनवाले (दिलदार) मनुष्यों का बन्धु है। ऐसे श्रेष्ठ गोपाल को मैं भजता हूँ ॥८९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लक्ष्मीकलत्रं ललिताब्जनेत्रं
पूर्णेन्दुवक्त्रं पुरुहूतमित्रम् ।
कारुण्यपात्रं कमनीयगात्रं
वन्दे पवित्रं वसुदेवपुत्रम् ॥९०॥

मैं उस पवित्र (शुद्धमनवाले) वसुदेवके लड़के को, नमस्कार करता हूँ जो लक्ष्मीका पति है, जिसकी कमल जैसी आँखें मनोहर हैं, जिसका मुँह पूर्ण चन्द्रबिम्ब जैसा (प्रसन्न) है, जो इन्द्रका साथी है, जो दयाका निधान है और जिसका शरीर आकर्षक है ॥९०॥

मदमय मदमयदुरगं
यमुनामवतीर्य वीर्यशाली यः ।
मम रतिममरतिरस्कृति—
शमनपरः स क्रियात्कृष्णः ॥९१॥

वह शौर्यसंपन्न कृष्ण मेरी अभिलाषाएँ पूर्ण करे, (या, मुझे आनंद दे ।) जिसने यमुना नदी में उतरकर उन्मत्त कालिया सर्प की घमंड तोड़ डाली थी । वह देवों के अपमानों को दूर करने के लिए (बदला लेनेके लिए) नित्य सिद्ध रहता है ॥९१॥

मौलौ मायूरबर्हं मृगमदतिलकं चारु लालाटपट्टे
कर्णद्वन्द्वे च तालीदलमतिमृदुलं मौक्तिकं नासिकायाम् ।
हारो मन्दारमालापरिमलभरिते कौस्तुभस्योपकण्ठे
पाणौ वेणुश्च यस्य व्रजयुवतियुतः पातु पीताम्बरो नः ॥९२॥

पीतवस्त्रधारी कृष्ण हमारी रक्षा करे । उसके सर के बालों में मोर पंख लगाये है, विशाल भालपर कस्तूरिका सुंदर टीका लगाया है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दोनो कानों में ताड़ पत्रों के कोमल पत्ते लटक रहे हैं। उसकी नाक बहुत ही तेजस्वी मोती से अलंकृत है। कौस्तुभ मणिसे दमकनेवाली अति सुवासिक मंदार फूलों की माला गले में है, जिस की खुशबु महक रही है। उसके हाथ में मुरली हैं और उसके इर्दगिर्द में ब्रह्म की गोपरमणियाँ हैं ॥९२॥

मुरारिणा वारिविहारकाले
मृगेक्षणानां मुषितांशुकानाम् ।
करद्वयं वा कचसंहतिर्वा
प्रमीलनं वा परिधानमासीत् ॥९३॥

जलविहार करते समय जब मुरारिने हरिणाक्षी गोपियों के वस्त्र चुरा लिये, तब बेचारी गोपियों को मात्र दो हाथ या लम्बे बाल या आँखों का बंद करना, आवरण जैसे हो गये ॥९३॥

यासां गोपाङ्गनानां लसदसिततरालोललीलाकटाक्षा
यन्नासाचारुमुक्तामणिरुचिनिकरव्योमगङ्गाप्रवाहे ।
मीनायन्तेऽपि तासामतिरभसचलच्चारुनीलालकान्ता
भृङ्गायन्ते यदङ्घ्रिद्वयसरसिरुहे पातु पीताम्बरो नः ॥९४॥

कृष्णकी नासिका में सोहनेवाले सुंदर मोती की कान्ति रेखाएँ आकाश गंगा के प्रवाह जैसी चमकती हैं। गोपियों की बहुत ही मनोहर चंचल चितवने जब उसमें गिरती हैं, तब वे मछलियों के समान दीख पड़ती हैं। वेग से हिलनेवाले और नीलकान्तमणि जैसे दीख पड़नेवाले उनके काले-काले घुंघराले बाल उसके दो चरणकमलों के पास भौरोंके समान नजर आते हैं। वह पीले वस्त्र पहननेवाला कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥९४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यद्वेणुश्रेणिरूपस्थितसुषिरमुखोद्गीर्णनादप्रभिन्ना
एणाक्ष्यस्तत्क्षणेन स्फुरितनिजपतिप्रेमबन्धा बभूवुः ।
अस्तव्यस्तालकान्ताः स्फुरदधरकुचद्वन्द्वनाभिप्रदेशाः
कामावेशप्रकर्षप्रकटितपुलकाः पातु पीताम्बरो नः ॥९५॥

जब श्रीकृष्ण अपने मुँह से मुरली के छिद्रों में से रुधर मनोहर सुर छेड़ने लगा, तब मृगनयनी गोप-ललनाएँ उसके मंजुल ध्वनि से विकल हो गयी और उसी समय अपने पतियों के प्रेमपाश से बिछुड़ गई। उनके केशपाश बिखर गये, उनके होंठ, दोनों स्तन और नाभि क्रेका स्थान-ये सब फड़कने लगे। उनके शरीर पर (मैथुन की) प्रबल इच्छा के कारण रोंगटे खड़े हो गये। वह पीतवसनमाली कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥९५॥

देवक्या जठराकरे समुदितः क्रीतो गवां पालिना
नन्देनानकदुन्दुभेर्निजसुतापण्येन पुण्यात्मना ।
गोपालावलिमुग्धहारतरलो गोपीजनालङ्कृतिः
स्थेयान्नो हृदि सन्ततं सुमधुरः कोऽपीन्द्रनीलो मणिः ॥९६॥

वह अनोखा मनोहर इन्द्रनीलमणि (श्रीकृष्ण) हमारे अन्तःकरणों में नित्य चमकता रहे। वह देवकी के गर्भरूपी समुद्र में पैदा हुआ था। पुण्यशील नन्द गोप ने अपनी कन्या को बेचकर उसे खरीदा था। वह गोपयुवक रूपी सुंदर मुक्ताहार में खचित था और वह गोप ललनाओं का मानों बढ़िया विभूषण था ॥९६॥

पीठे पीठनिषण्णबालकगले तिष्ठन् स गोपालको
यन्त्रान्तः स्थितदुग्धभाण्डमवकृष्याच्छाद्य घण्टारवम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वक्त्रोपान्तकृताञ्जलिः कृतशिरःकम्पं पिबन्यः पयः
पायादागतगोपिकानयनयोर्गण्डूषफूत्कारकृत् ।।९७।।

पीटों पर पीटे रखकर उस पर एक बच्चा खड़ा रहा और उसके कंधों पर वह गोपकिशोर खड़ा हो गया। उसने उस छीकेको पकड़-लिया, जिस में दूधका बर्तन रखा था। उस समय उसने घण्टाओं की आवाज को भी रोक दिया। बाद में अपने हथेलियों के गोलाकार करके उनसे अपना मुँह ढंक लिया और बड़ी चाव से सर हिलाते हुए दूध पीने लगा। इतने में किसी गोपीने वहाँ आकर उसे पकड़ लिया। पर कृष्णने अपने मुँह में जो दूध था उससे उस गोपी के मुँह पर कुल्ली कर दी। वैसा शरारती कृष्ण हमारी रक्षा करे।।९७।।

यज्ञैरीजिमहे धनं दधिमहे पात्रेषु नूनं वयं
वृद्धान्भेजिमहे तपश्चकृमहे जन्मान्तरे दुश्चरम् ।
येनास्माकमभूदनन्यसुलभा भक्तिर्भवद्वेषिणी
चाणूरद्विषि भक्तकल्मषमुषि श्रेयःपुषि श्रीजुषि ।।९८।।

निश्चय ही हमने पहले जन्मों में बहुत से यज्ञ किये होंगे, योग्य व्यक्तियों को संपत्ति दान की होगी; गुरुजनों की शुश्रूषा की होगी या कठोर तप किया होगा। जिसके फलस्वरूप, चाणूर का वध करनेवाला, भक्तों के पापों का विनाश करनेवाला, लोगों का कल्याण करनेवाला और लक्ष्मी से पूजा जानेवाला ऐसा जो भगवान् है, उससे हमारी, सब को दुर्लभ और संसार से बैर रखनेवाली, भक्ति हो गई है। ९८।।

त्वयि प्रसन्ने मम किं गुणेन ।
त्वय्यप्रसन्ने मम किं गुणेन ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रक्ते विरक्ते च वरे वधूनां
निरर्थकः कुङ्कुमपत्रभङ्गः ॥९९॥

तुम जब सन्तुष्ट हो तब मुझे किसी गुण की क्या आवश्यकता। तुम्हारा अनुग्रह ही जब नहीं रहता, तब और गुण रहनेपर भी क्या लाभ ? कभी पति पत्नी पर आसक्त रहता है और कभी रहता भी नहीं। दोनों भी समय, कुंकुम की चित्रकारी की कोई आवश्यकता नहीं रहती ॥९९॥

गायन्ति क्षणदावसानसमये सानन्दमिन्दुप्रभा
रुन्धन्त्यो निजदन्तकान्तिनिवहैर्गोपाङ्गनागोकुले।
मश्नन्त्यो दधि पाणिकङ्कणझणत्कारानुकारं जवा–
द्व्यावल्गद्वसनाञ्चला यमनिशं पीताम्बरोऽव्यात्स नः ॥१००॥

गोकुल में रात के आखिरके प्रहरमें (यानी भोरके समय) जिनकी कांति चन्द्रके समान है, ऐसी सुंदर गोपियाँ दहीका मन्थन करते समय बड़ी प्रसन्नता से पीतवसन कृष्ण का नाम संकीर्तन करती हैं। उस समय उनके दाँतों की शोभा सबदूर फैलती है। उनके हाथ के कंगनों की झनकार संगीत को ताल देती है। वेगसे मंथन करने के कारण उनके साड़ियों के पल्ले नीचे खिसक जाते हैं। वह (गोपीवल्लभ) कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥१००॥

अंसालम्बितवामकुण्डलभरं मन्दोन्नतभ्रूलतं
किञ्चित्कुञ्चितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम्।
आलोलाङ्गुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयन्तं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभङ्गिललितं जाने जगन्मोहनम् ॥१०१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कल्प वृक्ष के नीचे अपना शरीर तीन जगह से टेढ़ा करके (टांग, कमर, और गरदन टेढे करके) बहुत ही सुंदर ढंग से वह विश्वाभि-राम कृष्ण खड़ा है। उसके बाये कान का कुंडल बायें कंधे पर झूल रहा है। उसकी लता जैसी भौंहे थोड़ी-सी उपर चढ़ाई हुई हैं। उसके मृदुल होंठ कुछ-कुछ बंद किए हुए हैं। उसकी दृष्टि कुछ तिरछी है। अपनी कोंपलों-सी चटुल उंगसियों से वह बड़ी खुशी से मुरली बजा रहा है। उस कृष्ण को (इसी रूपमें) मैं जानता हूँ ॥१०१॥

मल्लैः शैलेन्द्रकल्पः शिशुरितरजनैः पुष्पचापोऽङ्गनाभि-
र्गोपैस्तु प्राकृतात्मा दिवि कुलिशभृता विश्वकायोऽप्रमेयः।
क्रुद्धः कंसेन कालो भयचकितदृशा योगिभिर्ध्येयमूर्ति-
र्दृष्टो रङ्गावतारे हरिरमरगणानन्दकृत्पातु युष्मान् ॥१०२॥

वह कृष्ण कुश्तीगीरों को महापर्वत जैसे नज़र आया; इतरों को बालकसा ही दीख पडा। स्त्रियों को कुसुमबाण मदन जैसा, गोपों को सामान्य मनुष्य जैसा, और वज्रधारी इंद्र को स्वर्ग में जगन्मूर्ति के रूप में नज़र आया। अज्ञेय योगियोंने उसे ध्यान करने योग्य प्रतिमा जाना। डरसे चकरानेवाली आँखों से कंसने उसे कराल मृत्युदेवता जैसा देखा (क्षुब्ध) ऐसा देवताओं का आनंद देनेवाला कृष्ण तुम्हारी रक्षा करे। ॥१०२॥

संविष्टो मणिविष्टरेऽङ्कतलमध्यासीनलक्ष्मीमुखे
कस्तूरीतिलकं मुदा विरचयन् हर्षात्कुचौ संस्पृशन्।
अन्योन्यस्मितचन्द्रिकाकिसलयैराराधयन्मन्मथं
गोपीगोपपरीवृतो यदुपतिः पायाज्जगन्मोहनः ॥१०३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह रत्नजड़ित आसनपर बैठा था और उसके अंक में लक्ष्मी देवी बिराज रही थी। तब उसने लक्ष्मी को बड़े प्रेम से कस्तूरिका तिलक लगाया और उमंग में आकर उसके स्तनों को स्पर्श किया। उन दोनों की चाँदनी की छीटों-जैसी मोहक मुसकानों से मानों कह (या दोनों की ज्योत्स्ना शीतल स्मित प्राचुरी को ही पल्लव समझकर) कृष्ण मदन की पूजा कर रहा था। वह सारे संसार को आकृष्ट करने-वाला, गोपगोपियों से घिरा रहनेवाला, यदुकुलनायक कृष्ण हमारी रक्षा करे ॥१०३॥

आकृष्टे वसनाञ्चले कुवलयश्यामा त्रपाधःकृतः
दृष्टिः संवलिता रुचा कुचयुगे स्वर्गप्रभे श्रीमति ।
बालः कश्चन चूतपल्लव इति प्राप्तस्मितास्यश्रियं
श्लिष्यंस्तामथ रुक्मिणीं नतमुखीं कृष्णः स पुष्णातु नः ॥१०४॥

रुक्मिणी का पल्ला बाल श्रीकृष्णने चावसे खींचा तब लाज से वह नीचे देखने लगी और उसकी नीलकमल जैसी काली आँखें उसकें हेमवर्ण स्तनों पर गड़ गई। उसके (रुक्मिणी का) मुँह पर मन्दहास की शोभा मँडराने लगी। तब उसे आम का कोंपल समझकर उस अधोमुखी रुक्मिणी को बालकृष्णने गाढ़ आलिंगन दिया। वह कृष्ण हमारा पोषण करे ॥१०४॥

उर्व्यां कोऽपि महीधरो लघुतरो दोर्भ्यां धृतो लीलया
तेन त्वं दिवि भूतले च सततं गोवर्धनोद्धारकः ।
त्वां वा त्रैलोक्यधरं वहामि कुचयोरग्रे न तद्गण्यते
किं वा केशव भाषणेन बहुना पुण्यैर्यशो लभ्यते ॥१०५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"इस भूमि की कोई एक छोटीसी टेकड़ी को तुमने सहज ही अपने हाथों पर तोल लिया और इस लिये स्वर्ग और पृथ्वीपर तुम 'गोवर्धन का उद्धार करनेवाले' (गायों को रक्षण करनेके लिए पर्वत को उठानेवाले) इस नाम से विख्यात हुए हो। तुम त्रिलोकी का आधार हो, पर मैं तुम्हें अपने स्तनों के अग्रोंपर संभलती हूँ। यह बात कोई ध्यान में लेता ही नहीं। केशव, यहाँ पर बहस करने से फ़ायदा ही क्या है? कीर्ति तब मिलती जब पुण्य (नसीब) अच्छा हो ॥१०५॥

सन्ध्यावन्दन भद्रमस्तु भवते भोः स्नान तुभ्यं नमो
भो देवाः पितरश्च तर्पणविधौ नाहं क्षमः क्षम्यताम् ।
यत्र क्वापि निषीद्य यादवकुलोत्तंसस्य कंसद्विषः
स्मारंस्मारमघं हरामि तदलं मन्ये किमन्येन मे ॥१०६॥

रे सन्ध्यावन्दन, तुम्हारा कल्याण हो। रे स्नान, तुम्हें दूर से ही प्रणाम। देवताओं, पूर्वजों, क्षमा करना। आपको पिण्डदानादि करने में मैं असमर्थ हूँ। मैं चाहता हूँ कि किसी भी जगह बैठकर उस कंस का वध करनेवाले यदुकुलश्रेष्ठ श्रीकृष्ण का बार बार चिन्तन करके अपने पापों का क्षय कर लूँ। मैं समझता हूँ कि इतना ही बस है। और बातों की चिन्ता क्यों करूँ ॥१०६॥

हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिन्धुकन्यापते
हे कंसान्तक हे गजेन्द्रकरुणापारीण हे माधव ।
हे रामानुज हे जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष मां
हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ॥१०७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हे धेनुरक्षक, हे करुणासागर, हे रुक्मिणीवल्लभ, हे कंसघातक हे गजराज पर अनुग्रह करनेवाले माधव, हे बलराम के छोटे भैय्या, हे तीनों लोकों के गुरु, हे कमल नयन, हे गोपियों के स्वामी-मेरी रक्षा करो ! तुम्हारे बिना और किसी को मैं जानता नहीं। १०७॥

कस्तूरीतिलकं ललाटफलके वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे नवमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं च कलयन् कण्ठे च मुक्तावलिं
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥१०८॥

वह गोपियों से घिरा हुआ, गोपालों का ललामभूत कृष्ण, नित्य विजयी है, जिसने अपने विशाल भालपर कस्तूरी का तिलक लगाया है, जिसकी छाती पर कौस्तुभमणि झलकता है, जिसकी हथेली में मुरली और कलई में कंगन है। उसके पूरे बदन पर हरिचन्दन का लेप है और गले में मोतियों का हार है।।१०८॥

लोकानुन्मदयन् श्रुतीर्मुखरयन् क्षोणीरुहान् हर्षयन्
शैलान्विद्रवयन् मृगान्विवशयन् गोवृन्दमानन्दयन् ।
गोपान् संभ्रमयन् मुनीन्मुकुलयन् सप्तस्वरान् जृम्भय—
न्नोङ्कारार्थमुदीरयन् विजयते वंशीनिनादः शिशोः ॥१०९॥

सब लोगों को मस्त करनेवाली, वेदों को (शब्दयुक्त) नाद-युक्त करनेवाली, हिरनों को लुब्ध करनेवाली, गायों के झुंडों को हुलसानेवाली, गोपों को उन्मत्त करनेवाली (भरमानेवाली), ऋषियों की (ध्यान में) आँखें बंद करनेवाली, सात आदिस्वरों को छेड़नेवाली और प्रणवमन्त्रों का रहस्य बतलानेवाली-इस बालक की मुरली की ध्वनि विजयोल्लास से पूर्ण है ॥१०९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यस्यात्मभूतस्य गुरोः प्रसादा—
दहं बिमुक्तोऽस्मि शरीरबन्धात् ।
सर्वोपदेष्टुः पुरुषोत्तमस्य
तस्याङ्घ्रिपद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥११०॥

जिस स्वयम्भू आचार्य की कृपा से मैं देह बंधनों से छुटकारा पा सका हूँ. उस सर्वोतम ज्ञानका उपदेश करनेवाले नरश्रेष्ठ के चरण कमलों पर, मैं सदा झुक जाता हूँ ॥११०॥

॥ श्रीकृष्णकर्णामृतम् ॥

— द्वितीय आश्वास समाप्त —

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आश्वास तीसरा

अस्ति स्वस्त्ययनं समस्तजगतामभ्यस्तलक्ष्मीस्तनं
वस्तु ध्वस्तरजस्तमोभिरनिशं न्यस्तं पुरस्तादिव ।
हस्तोदस्तगिरीन्द्रमस्तकतरुप्रस्तारविस्तारितं—
स्रस्तस्वस्तरुसूनसंस्तरलसत्प्रस्तावि राधास्तुतम् ॥१॥

जो हाथों से उठाये हुए गोवर्धन पर्वत की चोटियों के असंख्य वृक्षों तथा दिव्य कल्प द्रुमों से गिरे हुए पुष्पों की राशियों से ढँक गयी है, ऐसी एक अद्‌भुत वस्तु (व्यक्ति) सामने खड़ी है । राधा ने उसकी स्तुति की थी । वह सभी लोगों के कल्याण का निधान है, वह लक्ष्मी के स्तन मण्डलों पर विराजती है । उसका वे लोग साक्षात्कार करते हैं जिन्होंने रजस् और तमस् को (अपने मन से) हटा दिया है ।।१।।

राधाराधितविभ्रमाद्भुतरसं लावण्यरत्नाकारं
साधारण्यपद्व्यतीतसहजस्मेराननाम्भोरुहम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आलम्बे हरिनीलगर्वगुरुतासर्वस्वनिर्वापणं
बालं वैणविकं विमुग्धमधुरं मूर्धाभिषिक्तं महः ॥२॥

मैं उस (शिरः स्नात) अभ्यंग स्नात (स्वच्छ) मनोहर, रसीली, ज्योति का—बालक का, (ज्योतिरूप कृष्ण का), आश्रय करता हूँ जो नित्य वीणा बजाता है, राधा जिसकी उपासना करती है, जो प्रणय चेष्टाओंका मानों दिव्य आधान है, जो सौन्दर्य का सागर है, जिसके अव्याज स्मित पूर्ण मुखकमलने संसार की सामान्यतया सुन्दर कहलाई जानेवाली चीजों को परास्त किया है और जिसने नीलमणि के अभिमान को (अपने सौन्दर्य से) पूर्णतया हरण किया है ॥२॥

करिणामलङ्घ्यगतिवैभवं भजे
करुणावलम्बितकिशोरविग्रहम् ।
यमिनामनारतविहारि मानसे
यमुनावनान्तरसिकं परं महः ॥३॥

मैं उस परम ज्योति को (अर्थात् ज्योति स्वरूप कृष्ण को) शरण जाता हूँ जिसकी लचकदार चाल को हाथी भी नहीं अपना सकते हैं। (हाथी भी जिस चालकी शोभा परास्त नही कर सकते), जिसने (लोगोंपर) अनुग्रह करने के लिए बालक का आकार धारण किया है जो संयमी लोगों के मनमें नित्य वास करती है और जो यमुना के तटवर्ती वनों में घूमने में बड़ा रस लेती है ॥३॥

अतन्त्रितत्रिजगदपि व्रजाङ्गना—
नियन्त्रितं विपुलविलोचनाज्ञया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निरन्तरं मम हृदये विजृम्भतां
समन्ततः सरसतरं परं महः ॥४॥

वह अत्यन्त मनोहर श्रेष्ठ दिव्य सुषमा, मेरे अन्तः करण में पूर्ण-रूपसे उद्भासित हो, जो तीनों लोगों के नियमबंधों से परे रहनेपर भी गोपियों के नयनों के इशारों में बांधी जाती है ॥४॥

कन्दर्पप्रतिमल्लकान्तिविभवं कादम्बिनीबान्धवं
वृन्दारण्यविलासिनीव्यसनिनं वेषेण भूषामयम् ।
मन्दस्मेरमुखाम्बुजं मधुरिमव्यामृष्टबिम्बाधरं
वन्दे कन्दलितार्द्रयौवनवनं कैशोरकं शार्ङ्गिणः ॥५॥

मैं श्रीकृष्ण के उस बाल्य को प्रणाम करता हूँ जो नव तारुण्य की छटासे अंकित है। वह बाल्य अपने प्रकृष्ट तेज़ में मदन का भी प्रतिद्वन्द्वी है। वृंदावनकी प्रमदाओं के साथ प्रणयकेलि करनेमें व्यस्त रहता है और वह अनेक अलंकारों से मंडित है। उसके मुखपद्मपर हलकी मुसकान है और उसके बिम्ब जैसे होठों पर सौंदर्य विलास करता है ॥५॥

आमुक्तमानुषममुक्तनिजानुभाव-
मारूढयौवनमगूढविदग्धलीलम् ।
आमृष्टयौवनमनष्टकिशोरभाव-
माद्यं महः किमपि माद्यति मानसे मे ॥६॥

वह आद्य तेज मेरे मनको हठात् उन्मत्त करता है जिसने मनुष्या-कार धारण करने पर भी अपना कान्तिविभव नहीं तज दिया। यौवन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की परिणत दशा में उसकी ललित क्रीडाएँ छिप नहीं गयी और तारुण्य में पदार्पण करने पर भी वह बाल्य से वंचित नहीं हुआ ।:६।।

ते ते भावाः सकलजगतीलोभनीयप्रभावाः
नानातृष्णासुहृदि हृदि मे काममाविर्भवन्तु ।
वीणावेणुक्वणितलसितस्मेरवक्त्रारविन्दा–
न्नाहं जाने मधुरमपरं नन्दपुण्याम्बुराशेः ।।७।।

मेरा मन तो बहुत में प्रलोभनों में रुचि लेता है। (उनसे आकृष्ट होता है) उस में त्रिलोकी को भी मनोहर लगनेवाले श्रीकृष्ण के माहात्म्य के भिन्न भिन्न भाव पैदा होने दो। पर जो नन्दके पुण्य का निधि है और जिसका मुखकमल अपने वेणुवादन से और हल्की मुसकानों से मोहक लगता है, उस (बालकृष्ण) के सिवा और कोई सुंदर चीज़ मुझे मालूम नहीं है ।।७।।

सुकृतिभिरादृते सरसवेणुनिनादसुधा–
रसलहरीविहारनिरवग्रहकर्णपुटे ।
व्रजवरसुन्दरीमुखसरोरुहसारसिके
महसि कदानु मज्जति मदीयमिदं हृदयम् ।।८।।

उस अद्भुत धाम का (कृष्ण का) सद्गुणी लोग गौरव करते हैं। उसके मधुर मुरली से जो अमृत जैसी नादलहरियाँ निकलती हैं वे कानों को निरन्तर अघाती रहती हैं। वह ब्रज की ललनाओं के वदनपद्मों के मकरन्द का आस्वाद लेता है। उल तेज में मेरा मन कब डुबकियाँ लेगा ? ।८।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तृष्णातुरे चेतसि जृम्भमाणं
मुष्णन्मुहुर्मोहमहान्धकारम् ।
पुष्णातु नः पुण्यदयैकसिन्धोः
कृष्णस्य कारुण्यकटाक्षकेलिः ॥९॥

जो लालची मन में बार बार प्रवेश करनेवाले भ्रान्तिरूपी घने अन्धेरे को मार भगाती है, कृष्ण की वह पवित्र, कृपासिन्धु, दयार्द्र, और चंचल चितवन हमारा संवर्धन करे ॥९॥

निखिलागममौलिलालितं
पदकमलं परमस्य तेजसः ।
व्रजभुवि बहुमन्महे तरां
सरसकरीषविशेषरूषितम् ॥१०॥

हम सब वेदों के ललामभूत, उस दिव्य ज्योतिर्मय श्रीकृष्ण के चरण पद्मों का बड़ा आदर करते हैं, जो वृन्दावन में गौओं को चराते समय) गौओं के ताजे गोबर से गंदे हो गये ॥१०॥

उदारमृदुलस्मितव्यतिकराभिरामाननं
मुदा मुहुरुदीर्णया मुनिमनोम्बुजाम्रेडितम् ।
मदालसविलोचनव्रजवधूमुखास्वादितं
कदानु कमलेक्षणं कमपि बालमालोकये ? ॥११॥

जिसके वदन पर सुंदर कोमल मुस्कानें झलकती हैं, बारबार पैदा होनेवाले उल्लासके कारण जिससे ऋषियोंके मनःपद्मोंका भी विकास होता है- जिसका मुँह मतवाली आँखोंवाली गोपियाँ चूमती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं, उस कमल जैसी आँखोंवाले बालकृष्ण को मैं कब देख पाऊँ ॥११॥

व्रजजनमदयोषिल्लोचनोच्छिष्टशेषी
कृतमतिचपलाभ्यां लोचनाभ्यामुभाभ्याम् ।
सकृदपि परिपातुं ते वयं पारयामः
कुवलयदलनीलं कांतिपूरं कदा नु ? ॥१२॥

जो कि व्रजकी उन्मत गोपियों की आँखों से उपभुक्त होने पर बच जाता है, ऐसा तुम्हारा कमल पत्रों जैसा नीलवर्ण प्रकाशपुंज, हम इन प्यासी नयनों से एक वार ही क्यों न हो, कब देख सकेंगे? ॥१२॥

घोषयोषिदनुगीतयौवनं
कोमलस्तनितवेणुनिस्वनम् ।
सारभूतमभिरामसंपदां
धाम तामरसलोचनं भजे ॥१३॥

मैं उस कमल जैसे नयनवाली दिव्य कान्तिका यानी श्रीकृष्णका आश्रय करता हूँ जो सब सौंदर्य निधानोंका निचोड़ है, जिसकी मुरली-का निनाद मृदुमधुर है और ब्रज की गोपियाँ जिसकी तरुणाई का वर्णन करती हैं ॥१३।'

लीलया ललितयावलम्बितं
मूलगेहमिव मूर्तिसम्पदाम् ।
नीलनीरदविकासविभ्रमं
बालमेव वयमाद्रियामहे ॥१४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम उस बालक का गौरव करते हैं जो अपनी सुन्दर प्रणयकेलियों के कारण मानों सब विभवों का उत्पत्तिस्थान बन गया है और जिसकी गति काले बादलों की जैसी चटकीली है ॥१४॥

वन्दे मुरारेश्चरणारविन्द-
द्वन्द्वं दयादर्शितशैशवस्य ।
वन्दारुवृन्दारकवृन्दमौलि-
मन्दारमालाविनिमर्दभीरु ॥१५॥

मैं मुरारिके उन पाद् पद्मों को प्रणाम करता हूँ जो बड़ी कृपा के साथ बाल्यरूप में नज़र आते हैं। वे प्रणाम के लिए आनेवालें देवों के समूहों के सरपर जो मंदारपुष्पों की मालाएँ रहती हैं, उनसे नित्य रगड़े जाते हैं ॥१५॥

यस्मिन्नृत्यति यस्य शेखरभरैः क्रौञ्चद्विषश्चन्द्रकी
यस्मिन्हृष्यति यस्य घोषसुरभिं जिघ्रन्वृषो धूर्जटेः ।
यस्मिन्सज्जति यस्य विभ्रमगतिं वाञ्छन हरेः सिन्धुर—
स्तद्वृन्दावनकल्पकद्रुमवनं तं वा किशोरं भजे ॥१६॥

मैं उस बालक का या कल्प वृक्षों के समान अनेक वृक्षों से भरे हुए वृंदावन का, आश्रय लेता हूँ। वहाँ पर वह बालकृष्ण जब नाचने लगता है, तब क्रौञ्च के शत्रु कार्तिकेय का वाहन मयूर भी बालकृष्ण की, मधुर पंखों से भूषित मूर्ति को देख, नाचने लगता है। वहाँ शिवका वाहन वृषभ कृष्ण के गोधनमें से किसी गायको सूँघते ही आपेसे बाहर हो जाता है और कृष्ण की मोहक चाल देखकर चकित होनेवाला इंद्रका हाथी (ऐरावत) उसे सीखना चाहता है ॥१६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरुणाधरामृतविशेषितस्मितं
वरुणालयानुगतवर्णवैभवम् ।
तरुणारविंददलदीर्घलोचनं
करुणालयं कमपि बालमाश्रये ॥१७॥

मैं उस अनूठे कृपानिधि, बालक को भजता हूँ जिसके आरक्त होठों पर सुधामधुर मंद हास्य विलास करता है, जिसका रंगवैभव समुद्र का अनुकरण करता है और जिसकी लम्बी लम्बी आँखें विकसित कमल जैसी सुहावनी हैं ॥१७॥

लावण्यवीचीरचिताङ्गभूषां
भूषापदारोपितपुण्यबर्हाम् ।
कारुण्यधारालकटाक्षमालां
बालां भजे वल्लववंशलक्ष्मीम् ॥१८॥

मैं बालरूप धारण करनेवाली गोपकुल की सौंदर्य देवता की उपासना करता हूँ । सौंदर्य की लहरियों ने उसके (कृष्ण के) शरीर का प्रसाधन किया है । वह अपने माथे को पवित्रमोर पंखों से सुशोभित करता है और उसकी चंचल चितवनें दया से उमड़ती रहती हैं ॥१८॥

मधुरैकरसं वपुर्विभो-
र्मथुरावीथिचरं भजामहे ।
नगरीब्रजशावलोचना-
नयनेन्दीवरवर्षवर्षितम् ॥१९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मथुरा के मार्गोंपर भ्रमण करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण के शरीर की (अवतार की) हम उपासना करते हैं। वह मानों लावण्य का पुंज है और ब्रज की मृगनयनी गोपियों की कमल जैसी सुंदर आँखों के रंग से वह रंग गया है। (अर्थात् श्रीकृष्ण की झाँई सावली ही गयी है) ॥१६॥

पर्याकुलेन नयनान्तविजृम्भितेन
वक्त्रेण कोमलतरेस्मितविभ्रणेन।
मन्द्रेण मञ्जुलतरेण च जल्पितेन
नन्दस्य हन्त तनयो हृदयं धुनोति ॥२०॥

चंचल और दीर्घ कटाक्षोंसे, हलकी मोहक मुसकानोंसे, बहुत ही सुंदर लगनेवाले मुख, और उसकी गंभीर परंतु आकर्षक बातों से, नंदपुत्र श्रीकृष्ण मेरे मनको झकझोर देता है ।२०॥

कन्दर्पकण्डूलकटाक्षवन्दी–
रिन्दीवराक्षीरभिलापमाणान्।
मन्दस्मिताधारमुखारविन्दा–
न्वन्दामहे वल्लवधूर्तपादान् ॥२१॥

मैं उस छलिये गोपके चरणों को प्रणाम करता हूँ जिसका कमल जैसा मुँह हल्की मुसकुराहटसे चमकता है और जो गोकुल की उन कमलनयनी गोपियों की चाह रखते हैं जो मदन की छरहरे चितवनों में कंद हो जाती है ॥२१॥

लीलाटोपकटाक्षनिर्भरपरिष्वङ्गप्रसङ्गाधिक–
प्रीते गीतिविभङ्गसङ्गरलसद्वेणुप्रणादामृते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राधालोचनलालितस्य ललितस्मेरे मुरारेर्मुदा
माधुर्येकरसे मुखेन्दुकमलेमग्नं मदीयं मनः ॥२२॥

चटकीली चितवनों और गाढ़े आलिंगनों से जो आनन्दविभोर होता है, जो भावपूर्ण गानों के साथ अपनी मुरली से अमृत के समान मीठी-मीठी धुनें सुनाता है, जो राधा के नयनों का दुलार पाता है, जो हल्की मुस्कानोंसे लहराता है और जो सौन्दर्य का मानों निचोड़ है और जो चन्द्र एवं कमलके समान सुहावना है, ऐसे कृष्ण के मुखपर मेरा मन आसक्त हो गया है। (मुखमें मेरा मन लीन हो गया है।)

शरणागतवज्रपञ्जरे
शरणे शार्ङ्गधरस्य वैभवे ।
कृपया धृतगोपावग्रहे
कियदन्मृगयामहे वयम् ॥२३॥

शाङ्‌र्गपाणि कृष्ण का महिमा जब वज्रगृह (पिंजडा) बनकर शरण आये हुए लोगों का रक्षण करती है और जब उसने दया बुद्धि से गोपाकृति धारण की है, तब हम किसी दूसरी चीज़ की खोज़ क्यों करे ॥२३॥

जगत्त्रयकान्तमनोज्ञभूमि
चेतस्यजस्रं मम सन्निधत्ताम् ।
रमासमास्वादितसौकुमार्यं
राधास्तनाभोगरसज्ञभोजः ॥२४॥

वह दिव्य दीप्तिमय कृष्ण मेरे मन में सदैव विलसता रहे जो तीनों लोगों के अप्रतिम सौन्दर्य का सुंदर आधार है, जिसने लक्ष्मी की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चारुता का उपभोग किया हैं, और जो राधा के पुष्ट स्तनों का रसज्ञ है (मज़ा जानता है) ॥२४॥

वयमेते विश्वसिमः
करुणाकरमूर्तिकिंवदन्त्यङ्के ।
अपिच विभो तव ललिते
चपलतरा मतिरियं बाल्ये ॥२५॥

हे प्रभो (सभी जानते हैं) कि तुमने असीम कृपाके कारण यह गोप शरीर धारण किया है। उस पर हमारा पूर्ण विश्वास है। और तुम्हारे मनोहर बचपन से ही हमारी चंचल बुद्धि का लगाव हो गया हैं ॥२५॥

वत्सपालचरः कोऽपि
वत्सः श्रीवत्सलाञ्छनः ।
उत्सवाय कदा भावी-
त्युत्सुके मम लोचने ॥२६॥

बछडों को पालनेवालों में घूमनेवाला और श्रीवत्सका चिह्न धारण करनेवाला, अद्भुत बालक कब हमें प्रसन्न करेगा–इस तरह मेरी आँखें नित्य आस लगाई रहती हैं।

मधुरिमभरिते मनोभिरामे
मृदुलतरस्मितमुद्रितानने‌ऽङ्घ्रौ ।
त्रिभुवननयनैकलोभनीये
महसि वयं व्रजभाजि लालसाः स्मः ॥२७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लावण्यपूर्ण, चित्तवेधक, मुखचंद्रपर की कोमल मुसकुराहटों से प्रफुल्लित, तीनों लोगों की आँखों को मोह लेनेवाला (या तीनों लोकों की आँखों का एक मात्र आकर्षण) ऐसा जो एक तेजः पुंज (कृष्ण) व्रज में रहता है, उसके लिए हम लालायित हैं ॥५७॥

मुखारविन्दे मकरन्दविन्दु–
निष्यन्दलीलामुरलीनिनादे ।
व्रजाङ्गनापाङ्गतरङ्गभृङ्ग–
सङ्ग्रामभूमौ तव लालसाः स्मः ॥२८॥

मुरली के मधुर सुर तुम्हारे मुखपद्म से मधुबिन्दु जैसे झरते हैं और उस स्थलपर गोपियों के मधुर कटाक्ष भौरों के समूह जैसे आ बैठते हैं। उस मुख को देखने की अभिलाषा हमारे मनमें है ॥२८॥

आताम्रायतलोचनांशुलहरीलीलासुधाप्यायितैः
गीताम्रेडितदिव्यकेलिभरितैः स्फीतं व्रजस्त्रीजनैः ।
स्वेदाम्भःकणभूषितेन किमपि स्मेरेण वक्त्रेन्दुना
पादाम्भोजमृदुप्रचारसुभगं पश्यामि दृश्यं महः ॥२९॥

मैं उस कमनीय कान्ति को (कान्ति से युक्त श्रीकृष्ण को) देखता हूँ जिसके आरक्त और दीर्घ नेत्रों की छबि से निकलनेवाले कटाक्ष रूपी किरणावलि के मधुर अमृत से उन्मत्त होनेवाली और संगीत के साथ प्रणय क्रीडाएँ करती करती मदमाती गोपियाँ, जब उसके साथ रहती हैं, तब वह और ही सुंदर लगता है। जिस समय उसके चरणकमल थिरकते हैं तब उसके स्मितललित मुखचंद्रपर घर्मबिन्दु चमकने लगते हैं, तब वह कान्ति और ही मनोहर लगती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पाणौ वेणुः प्रकृतिसुकुमाराकृतौ बाल्यलक्ष्मीः
पार्श्वे बालाः प्रणयसरसालोकितापाङ्गलीलाः ।
मौलौ बर्हं मधुरवदनाम्भोरुहे मौग्ध्यमुद्रे-
त्याद्रीकारं किमपि कितवं ज्योतिरन्वेषयामः ॥३०॥

हम उस दिव्य तेज की खोज करते हैं, जिसने सुन्दर बालक का मायावी आकार धारण किया है। उस बालक के सुंदर मुखकमल पर निरीह (सरल) भावों की छटा है। उसके हाथ में मुरली और उसके सहज सुंदर शरीरपर बाल्यरूप लक्ष्मी बिलसती है। उसके सरपर मोर पंख हैं और उसके इर्दगिर्द वे गोपबालक हैं जो कृष्ण के कमनीय कटाक्षों की लीलाओं को बड़े ही प्रेम से और चाव से देखते हैं ।३०।।

आरूढवेणुतरुणाधरविभ्रमेण
माधुर्यशालिवदनाम्बुजमुद्वहन्ती ।
आलोक्यतां किमनया वनदेवता वः
कैशोरके वयसि कापि च कान्तियष्टिः ॥३१॥

हे वन देवताओं, आप बालकरूप धारण करनेवाली उस तेजोमय अनोखी कायाको देखें। जिनपर मुरली रखी गई है, ऐसे कोमल होठों की माधुरी के कारण उसके मुखकमल को एक विशेष शोभा प्राप्त हुई है। (या. विशेष शोभावाले मुखकमल को वह धारण किए हुए है) ।।३१।

अनन्यसाधारणकान्तिकान्त-
माक्रान्तगोपीनयनारविन्दम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुंसः पुराणस्य नवं विलासं
पुण्येन पूर्णेन विलोकयिष्ये ॥३२॥

असाधारण आभा से चमकनेवाला, गोपियों के नेत्र पद्मों को विकसित करनेवाला, ऐसा जो आदि पुरुष है, उसके इस अभिनव उल्लास को, मैं अपने परिणत पुण्य फल के कारण ही देख सकता हूँ। ३२॥

साष्टाङ्गपातमभिनन्द्य समस्तभावैः
सर्वान् सुरेन्द्रनिकरानिदमेव याचे ।
मन्दस्मितार्द्रमधुराननचन्द्रबिम्बे
नन्दस्य पुण्यनिचये मम भक्तिरस्तु ॥३३॥

सब देवताओं को, पूरी भक्ति के साथ साष्टांग प्रणिपात करके उनसे यही माँगूंगा, कि मेरा मन उस श्रीकृष्ण की आराधना करे, जो नन्दके पुण्यों की मानों दिव्य निधि है और जिसके सुंदर मुखचंद्रपर हलकी मुसकानें तरलती हैं ॥३३॥

एषु प्रवाहेषु स एव मन्ये
क्षणोऽपि गण्यः पुरुषायुषेषु ।
आस्वाद्यते यत्र कयापि भक्त्या
नीलस्य बालस्य निजं चरित्रम् ॥३४॥

पुरुष के इस गतिमान् (बहनेवाले) जीवन में मैं उसी क्षण को गिनने योग्य-अर्थात् महत्वपूर्ण समझता हूं, जिस में साँवले बालकृष्ण की लीलाओं की सरसता को अनन्य भक्ति से ही अनुभव किया जाता है ॥३४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

निसर्गसरसाधरं निजदयार्द्रदिव्येक्षणं
मनोज्ञमुखपङ्कजं मधुरसार्द्रमन्दस्मितम् ।
रसज्ञहृदयास्पदं रमितवल्लवीलोचनं
पुनःपुनरुपास्महे भुवनलोभनीयं महः ॥३५॥

हम सब संसार का मन हरण करनेवाले तेज की रह रहकर भक्ति करते हैं। बालकरूप धारण करने के बाद उसके होंठ अव्याज-मधुर बन गये हैं। उसके अप्रतिम नयनों से करुणा झलकती है। उसका कमल जैसा मुँह मनोहर है। उसकी मंद मुसकुराहट मानों रमणीयता में सनी हुई है। वह रसिकों के अंतःकरणों में निवास करता है और वह गोपियों की आंखों को प्रसन्न करता है ।३५॥

स कोऽपि बालः सरसीरुहाक्ष–
सा च व्रजस्त्रीजनपादधूलिः ।
मुहुस्तदेतद्युगलं मदीये
मोमुह्यमानेऽपि मनस्युदेतु ॥३६॥

मेरा मन कितना ही लालची क्यों न बने, (इतर प्रलोभन मेरे मनको भले ही आकृष्ट करें) वह कमल जैसी आँखोवाला अद्‌भुत बालक (कृष्ण) और गोपियों के चरणों की धूल-ये दोनों मेरे मनको प्रकाश दिलाते रहें ।३६॥

मयि प्रयाणाभिमुखे च वल्लवी–
स्तनन्धयीदुर्ललितः स बालकः ।
शनैःशनैः श्रावितवेणुनिस्वनो
विलासवेषेण पुरः प्रतीयताम् ॥३७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं महाप्रस्थान के लिए जब सिद्ध हो जाऊँगा, तब गोपियों के स्तनों में बड़े हठ से रमनेवाला वह बालकृष्ण अपनी मनोज्ञ वेशभूषा धारणकर मुरली की हृद्य ध्वनि छेड़ता हुआ धीरे-धीरे मेरे सामने चले आवे ।।६७।।

अतिभूमिमभूमिमेव वा
वचसां वासितवल्लवीस्तनम् ।
मनसामपरं रसायनं
मधुराद्वैतमुपास्महे महः ।।३८।।

हम उस बेजोड़ कान्ति की (कृष्णकी) भक्ति करते हैं जिसने गोपियों के स्तनों को पवित्र किया है और जो मनकी (मानसिक दुःखों की) शर्तिया दवा है। वह कभी वाणी का सबसे प्रिय विषय बनती है, या कभी वाणी वहाँतक पहुँच भी नहीं पाती ।।३८।।

जननान्तरेऽपि जगदेकमण्डने
कमनीयधाम्नि कमलायतेक्षणे ।
व्रजसुन्दरीजनविलोचनामृते
चपलानि सन्तु सकलेन्द्रियाणि मे ।।३९।।

किसी अगले जन्म में क्यों न हो, मेरी चंचल इन्द्रियों को उस कमल समान आँखोंवाले कृष्ण में ही लटक लगे, जो संसार का एक मात्र भूषण है, जो सौंदर्य का निधि है और जो ब्रजकी सुंदर गोपियों की आँखों को अमृत जैसे तृप्त करता है ।।३९।।

मुनिश्रेणीवन्द्यं मदभरलसद्वल्लववधू-
स्तनश्रोणिबिम्बस्तिमितनयाम्भोजसुभगम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुनःश्लाघाभूमिं पुलकितगिरां नैगमगिरां
घनश्यामं वन्दे किमपि कमनीयाकृति महः ।।४०।।

मैं उस अद्वितीय शोभावाले, बादल जैसे काले श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ। उसे ऋषिवृन्द पूज्य समझते हैं। मदोन्माद से सोहनेवाली व्रजकी गोपियों के स्तनों और नितंबों पर वह जब अपने नेत्रकमलों से देखता है, तब वह बहुत ही आकर्षक लगता है। वेदों के उत्स्फूर्त एवं तरल मन्त्रों को वह स्तोत्रयोग्य (प्रशस्य) बन गया है ।।४०।।

अनुचुम्बतामविचलेन चेतसा
मनुजाकृतेर्मधुरिमश्रियं विभोः ।
अयि देव कृष्ण दयितेति जल्पता-
मपि नो भवेयुरपि नाम तादृशः ।।४१।।

कृष्ण, प्रिय, आदि नामोंका उच्चारण करते हुए जब हम स्थिर एवं एकाग्र मन से मनुष्याकृति धारण करनेवाले उस सर्वव्यापी कृष्णकी रूपमाधुरीका अनुभव करेंगे (आस्वाद लेंगे), तब हमारा भी नाम वैसे ही हो जाय ।।४१।।

किशोरवेषेण कृशोदरीदृशां
विशेषदृश्येन विशाललोचनम् ।
यशोदया लब्धयशोनवाम्बुधे-
र्निशामये नीलनिशाकरं कदा ।।४२।।

पतली कमरवाली गोपियाँ उसे एक बालक के आकार में बड़े चावसे देखती है। बड़ी बड़ी आँखोंवाला कृष्ण यशोदा को मानों कीर्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

का निधि जैसे प्राप्त हुआ था। उस साँवले चंद्र को मैं कब देख सकूँ ! ॥४२॥

प्रकृतिरवतु नो विलासलक्ष्म्याः
प्रकृतिजडं प्रणतापराधवीथ्याम् ।
सुकृतिकृतपदं किशोरभावे
सुकृतिमनः प्रणिधानपात्रमोजः ॥४३॥

वह तेज अर्थात् तेजस्वी कृष्ण, हमारी रक्षा करे, जो विभ्रमसुंदरी-का जन्मस्थल है, जो शरणागतों के अपराधों की ओर स्वभावत: उदासीन है, जिसकी बालाकृतिपर पुण्यवान् लोग अपना चित्त एकाग्र करते हैं और जो पुण्यशील लोगों के चित्त में नित्य वास करता है। (पुण्यशील लोगो के मनके लिए समाधिस्थान है) ॥४३॥

अपहासितसुधामदावलेपै-
रतिसुमनोहरमार्द्रमन्दहासैः ।
व्रजयुवतिविलोचनावलेह्यं
रमयतु धाम रमावरोधनं नः ॥४४॥

अमृत की (श्वेतिमाके) मस्ती और गर्व को नीचे दिखाने वाली हलकी चिकनी मुसकुराहटों से जो अतीव हृदयंगम बना है, और जिसे गोकुल की तरुणियाँ अपनी आँखों से निहारती हैं, और जो लक्ष्मी को भी ललचाती है, ऐसा कान्तिमान् (कृष्ण) हमें प्रसन्न करें ॥४४॥

अङ्कुरितस्मेरदशाविशेषै-
रश्रान्तहर्षामृतवर्षमक्ष्णाम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संक्रीडतां चेतसि गोपकन्या-
घनस्तनस्वस्त्ययनं महो नः ॥४५॥

वह ज्योति (अर्थात् ज्योतिरूप कृष्ण) हमारे मनमें झलमलाती रहे जो छिटकते हुए निराले स्मितों से (भक्तों के) नयनों पर (मानों) निरन्तर सुधानंदका वर्षाव करती रहती है, और जो गोपियों के पुष्ट स्तनों का मंगल आधार है ॥४५

मृगमदपङ्कसङ्करविशेषितवन्यमहा-
गिरितटगण्डगैरिकघनद्रवविद्रुमितम्।
अजितभुजान्तरं भजत हे बत गोपवधू-
स्तनकलशस्थलीघुसृणमर्दनकर्दमितम् ॥४६॥

आप श्रीकृष्ण के अनूठे वक्षःस्थल की पूजा करें। वह (वक्षः-स्थल) अरण्य के बड़े बड़े पर्वतों के चट्टानोंपर पाये जानेवाली गेरु की मिट्टी और कस्तूरि के-मिश्रण के घने लेपसे पुता गया है और उसके कारण वह मूँगे के लेप के समान दीख पड़ता है। वह वक्षःस्थल गोपियों के घड़ों के समान पुष्ट स्तनों से रगड़ा गया है। उसके कारण उसपर मानों कुंकुमकी पुताई हो गयी है ॥४६॥

आमूलपल्लवितलीलमपाङ्गजालं—
रासिञ्चती भुवनमादृतगोपवेषा।
बालाकृतिर्मृदुलमुग्धमुखेन्दुबिम्बा
माधुर्यसिद्धिरवतान्मधुविद्विषो नः ॥४७॥

मधुनामक राक्षसको मार डालनेवाला, बालाकार गोपवेष धारण करनेवाला, और लावण्य की चरम सीमा जतानेवाला, अपने सुंदर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लहलहानेवाले तरल कटाक्षों की संसार पर वर्षा करनेवाला और चिकना और सुंदर मुखचंद्र धारण करने वाला वह श्रीकृष्ण, हमारी रक्षा करे ॥४७॥

विरणन्मणिनूपुरं व्रजे
चरणाम्भोजमुपास्स्व शार्ङ्गिणः ।
सरसे सरसि श्रियाश्रितं
कमलं वा कलहंसनादितम् ॥४८॥

वृन्दावन में तुम शाङ्‌र्ग धनुष्य धारण करनेवाले श्री कृष्ण के पादपद्म की भक्ति करो, जिनपर रत्न के पायल छुमछुमते हैं। या कलहंसों की कूकों से गूँजने वाले सुंदर तालाब में खिले हुए उस शोभा-युक्त पद्म की उपासना करो ॥४८॥

शरणमशरणानां शारदाम्भोजनेत्रं
निरवधिमधुरिम्ना नीलवेषेण रम्यम् ।
स्मरशरपरतन्त्रस्मेरनेत्राम्बुजाभि
र्व्रजयुवतिभिरख्याद्ब्रह्म संवेष्टितं नः ॥४९॥

वह ब्रह्म (श्रीकृष्ण) हमारी रक्षा करे। वह अपने असीम लावण्यमय साँवले वर्ण के कारण बहुत मनोहर है। उसकी आँखें शार-दीय कमलों जैसी प्रफुल्ल हैं। मदन बाणों से विद्ध और स्मितपूर्ण पद्म-नयनों वाली गोपियों से वह घिरा हुआ है, और निराधार लोगों को वह एकमात्र सहारा है ॥४९॥

सुव्यक्तकान्तिभरसौरभदिव्यगात्र–
मव्यक्तयौवनपरीतकिशोरभावम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गव्यानुपालनविधावनुशिष्टमव्या-
द्व्याजरम्यमखिलेश्वरवैभवं नः ॥५०॥

सब संसार के स्वामी जो श्रीकृष्ण है-उनका सहजसुंदर ऐश्वर्य हमारी रक्षा करे। पूर्णतया प्रकट होनेवाले तेजोमंडल से दमकने-वाले और एक विशेष सुगंध से महकनेवाले शरीर को उसने धारण किया है। उसका बाल्यभाव अस्फुट यौवन से घिरा हुआ है। उसको गायोंके पालन का कार्य सौंप दिया गया है ॥५०॥

अनुगतममरीणामम्बरालम्बिनीनां
नयनमधुरिमश्रीनर्मनिर्माणसीम्नाम्।
व्रजयुवतिविलासव्यापृतापाङ्गमव्या-
त्त्रिभुवनसुकुमारं देवकैशोरकं नः ॥५१॥

अपनी आँखों के सौंदर्य के निर्माण की पराकाष्ठा दिखाने वाली (अर्थात् अपना सानी न रखनेवाली) गगनविहारिणी देवांगनाओं को जो वश होता है तथा जिसके कटाक्ष, गोपियों में विभ्रम (विलाग्न) पैदा करते हैं और तीनों लोकों में भी कोमल (या कमनीय) हैं, वह दिव्य बाल्य (अर्थात् कृष्ण) हमारी रक्षा करे ॥५१॥

आपादमाचूडमतिप्रसक्त-
रापीयमाना यमिनां मनोभिः।
गोपीजनज्ञातरसावतान्नो
गोपालभूपालकुमारमूर्तिः ॥५२॥

गोपपतिका (नंद) का पुत्र बालकृष्ण हमारी रक्षा करे। संयमी मुनि समाधि में कृष्ण के रूप में तल्लीन होकर अपने मन से उसका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नख शिख ध्यान करते हैं। उसका माधुर्य गोपियों के द्वारा पूर्णतया उपभुक्त हुआ है ॥५२॥

दिष्ट्या वृन्दावनमृगदृशां विप्रयोगाकुलानां
प्रत्यासन्नं प्रणयचपलापाङ्गवीचीतरङ्गैः ।
लक्ष्मीलीलाकुवलयदलश्यामलं धाम कामान्
पुष्णीयान्नः पुलकमुकुलाभोगभूषाविशेषम् ॥५३॥

जो लक्ष्मीदेवी के केलिकमलके पत्ते के समान साँवला है, वह दिव्य तेजधारी कृष्ण विरह से व्यथित वृन्दावन की हरिणाक्षी गोपियों के सामने, प्यार से छरहराते हुए कटाक्षों की लहरियों के साथ, उपस्थित हो जाता है। क्या ही भाग्य है उनका। उस समय रोमांचकी कलियों से उसका शरीर एक अनोखी शोभा से दमकता है। वह तेज हमारा पोषण करे ॥५३॥

जयति गुहशिखीन्द्रपिञ्छमौलि-
सुरगिरिगैरिककल्पिताङ्गरागः ।
सुरयुवतिविकीर्णसूनवर्ष-
स्नापितविभूषितकुन्तलः कुमारः ॥५४॥

वह दिव्य बालक नित्य विजयी है उसका सर स्कन्द के सुंदर मोर के पंखों से आभूषित है। उसके शरीरपर मेरुपर्वत की गेरु मिट्टी का उबटन लगाया है। उसके घुंघराले बाल अमरांगनों से बरसाये गये फूलों की राशियों से अलंकृत और आकर्षक हो गये हैं ॥५४॥

मधुरमन्दशुचिस्मितमञ्जुलं
वदनपङ्कजमङ्गजवेल्लितम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विजयतां व्रजबालवधूजन–
स्तनतटीविलुठन्नयनं विभोः ॥५५॥

भगवान् श्रीकृष्ण का वह मुखकमल विजयी हो, जो मोहक हलके तथा पवित्र मंदहासों के कारण मनोहर बन गया है; जो प्यार से छलक रहा है और जिसकी आँखें गोकुल की तरुण गोपियों के स्तन प्रदेशों पर अठखेलियाँ कर रही हैं ॥५५॥

अलसविलस-मुग्धस्निग्धस्मितं व्रजसुन्दरी–
मदनकदनखिन्नं धन्यं महद्वदनाम्बुजम् ।
तरुणमरुणज्योत्स्नाकार्त्स्न्यस्मितस्नापिताधरं
जयति विजयश्रेणीमेणीदृशां मदयन्महः ॥५६॥

वह (श्रीकृष्ण की) देहकांति विजयी है। उसका मुखपद्म प्रेम क्रीडाओं से क्लान्त होने पर भी प्रसन्न है। उसपर कोमल, छबीली और मदमस्त मुसकानें छिटक रही हैं। गोपियों के साथ लीला करने के कारण वह पसीनों से तर हो गयी है। उसके (श्रीकृष्णके) होंठ आरक्त चन्द्रिका जैसी मुसकानों में सन गये हैं। मृगनेत्रा गोपियों में वह हुलास भर देती है। (मृगनेत्रा गोपियों को जीत के पीछे जीत दिलाकर उन्हें उन्मत्त बनाती है) ॥५६॥

राधाकेलिकटाक्षवीक्षितमहावक्षःस्थलीमण्डना–
ज्जीयासुः पुलकाङ्कुरास्त्रिभुवनस्वादीयस स्वेजसः
क्रीडान्तप्रतिसुप्तदुग्धतनयामुग्धावबोधक्षण—
त्रासारूढदृढोपगूहनमहासाम्राज्यसान्द्राश्रियः ॥५७॥

तीनों लोकों के लिए जो रुचिपूर्ण है, ऐसी दिव्य प्रभा धारण करनेवाले श्रीकृष्ण के रोमाँच जयशाली हों। वे रोमांच उस बड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चौड़ी छातीपर प्रकट हुए थे, जिसे राधा ने अपनी रसीली चितवनों से देखा था। कामक्रीड़ा के बाद सोकर लक्ष्मी जब (या रुक्मिणी) जग गई, तब उसने डरके मार उस कृष्ण को जो गाढ़ आलिगन दिया था। उस समय उस परसुखदायी आलिंगन के कारण उन रोमांचों से एक एक चिकनी शोभा झलक रही थी ॥५७॥

स्मितस्नुतसुधाधरा मदशिखण्डिबर्हाङ्किता
विशालनयनाम्बुजा व्रजविलासिनीवासिताः।
मनोज्ञमुखपङ्कजा मधुरवेणुनादद्रवा
जयन्ति मम चेतस श्चिरमुपासिता वासनाः ॥५८॥

मेरे मनमें दीर्घ काल तक संजोए हुए वे संस्कार विजयी हैं। (उनका मूर्तस्वरूप श्री कृष्ण है)। उनके अधरों से मंदहासरूपी अमृत झरता है। वे मत्तमयूरके पंखों से अलंकृत हैं। उनके नेत्र कमल बहुत लंबे हैं। वे गोकुल की गोपियों के साथ प्रणय क्रीडा करते हैं। उनका मुख कमल मनोहर है और उनके मुरली से निकलने वाले सुर बहुत ही मीठे हैं ॥५८॥

जीयादसौ शिखिशिखण्डकृतावतंसा
सांसिद्धिकी सरसकान्तिसुधासमृद्धिः।
यद्बिन्दुलेशकणिकापरिणामभाग्यः
सौभाग्यसीमपदमश्नुते पञ्चबाणः ॥५९॥

यह जो मोरपंखों से भूषित श्रीकृष्ण का देह है, वह मोहक सुषमाका सुधाकर ही है। उसने एक स्वस्थ मानवाकार धारण किया है। उससे छोटासा बूंद पाने का अहोभाग्य मदन को प्राप्त हुआ, जिसके कारण उसने चारुताकी चरम सीमा प्राप्त की है। वह दिव्याकार नित्य विजयी रहे ॥५९॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आयामेन दृशोर्विशालतरयोरक्ष्य्यमार्द्रस्मित-
च्छायाधर्षितशारदेन्दुललितं चापल्यमात्रं शिशोः ।
आयासानपरान्विधूय रसिकैरास्वाद्यमानं मुहुः
जीयादुन्मदवल्लवीकुचभराधारं किशोरं महः ॥६०॥

वह बालाकार अद्भुत तेज:पुंज विजयी हो, जिसकी दो लम्बी आँखो से मोहक मुसकान नित्य छिटकती रहती है; जिसने अपनी कान्ति से शारदीय चंद्र की मधुरता को भी तिरस्कृत किया है; जो कोमल (मूर्तरुप में) एक चंचल बालक जैसे दिखाई पड़ता है, जिसे रसज्ञ लोग और सब बातों को व्यर्थ समझकर छोड़ देते हैं और केवल उसी के रसपान में बार बार लगे रहते हैं; और जो मदभरी गोपियों के पुष्ट स्तनों पर विलसता है। (यानी उनके स्तनों का अवलंब होता है) ॥६०॥

स्कन्धावारसदो व्रजः कतिपये गोपाः सहायादयः
स्कन्धालम्बिनि वत्सदाम्नि धनदा गोपाङ्गनाः स्वाङ्गनाः ।
शृङ्गारा गिरिगैरिकं शिव शिव श्रीमन्ति बर्हाणि च
शृङ्गग्राहिकया तथापि तदिमं प्राहुस्त्रिलोकेश्वरम् ॥६१॥

उसका शिविर (आस्थान भवन) गोकुल है। उसके मंत्री तो ग्वाले ही ठहरे जो अपने कंधों पर बछडों को ढोकर उन्हें ही कररुप में श्रीकृष्ण को अर्पण करते थे। उसका अंत:पुर, बस, गोपियाँ ही। उसका प्रसाधन तो पूछो मत-पर्वतों की गेरु की मिट्टी और चमकदार मोरपंख ! कितनी सादगी है और सहजता है उसके राजापन में। फिर भी, आश्चर्य, उसी को विज्ञ लोग यूँही त्रिभुवन का स्वामी कहते हैं ॥६१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीमद्बर्हिशिखण्डमण्डनजुषे श्यामाभिरामत्विषे
लावण्यैकरसावसिक्तवपुषे लक्ष्मीसरः प्रावृषे ।
लीलाकृष्टरसज्ञधर्ममनसे लीलामृतस्रोतसे
के वा न स्पृहयन्ति हन्त महसे गोपीजनप्रेयसे ॥६२॥

जो तेज (अर्थात् तेजस्वी कृष्ण) गोपियों का दुलारा है उसकी अभिलाषा किसको नही होगी। उसका सर मोहक मोरपंखों से सुहावना हो गया है। उसकी साँबली प्रभा बहुत ही चमचमाती है। उसका शरीर मानों सौंदर्य के दिव्य रस से सींचा गया है। लक्ष्मीरूपी सरसी को वह वर्षाकाल जैसा है। रसिकता ही जिनका प्रमुख वैशिष्ट्य है, ऐसे लोगों के मनों को वह अपनी मुग्ध क्रीड़ाओं से मोहित करता है। वह मानों ललित क्रीड़ारूपी अमृत का प्रवाह ही है ॥६२॥

आपाटलाधरमधीरविलोलनेत्र-
मामोदनिर्भरितमद्भुतकान्तिपूरम् ।
आविस्मितामृतमनुस्मृतिलोभनीय-
मामुद्रितानमहो मधुरं मुरारेः ॥६३॥

ओ हो ! मुरारिका मुख कितना मनोज्ञ है। उसके होंठ कुछ कुछ लाली लिए हुए हैं। उसकी आँखें चंचल और नटखटी हैं। वह अपनी मस्ती में झूमता है और उसमें एक अनूठी छबि की भरमार है। उसके चेहरे पर अमृत जैसा मंद हास झलकता है। बार बार स्मरण करने पर तो वह बहुत आकर्षक भाता है। उसकी एक अमिट छाप मेरे मन में पड़ गयी है ॥६३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जागृहि जागृहि चेत—
श्चिराय चरितार्थता भवतः।
अनुभूयतामिदमिदं
पुरः स्थितं पूर्णनिर्वाणम् ॥६४॥

जागो, मेरे मन, जागो। तुम्हारी बहुत दिनों की आस अब पूर्ण हो गयी है। तुम्हारे सामने, देखो, साक्षात् मूर्तिमान ब्रह्मानंद आ खड़ा है। लूट लो उसका स्वाद।।६४।।

चरणयोररुणं करुणार्द्रयोः
कचभरे बहुलं विपुलं दृशोः।
वपुषि मञ्जुलमञ्जनमेचके
वयसि बालमहो मधुरं महः ॥६५॥

लाल लाल दयापूर्ण पादकमल, विपुल केश संभार, बिशाल नयन, कमनीय काया, नीलांजन जैसा चिकना शरीर, और बाल आयु—क्या ही मोहक है यह तेज (तेजोमय कृष्ण)।।६५।।

मालाबर्हमनोजकुन्तलभरां वन्यप्रसूनेक्षितां
शैलेयद्रवक्लृप्तचित्रतिलकां लावण्यलक्ष्मीमयम्।
लीलावेणुरवामृतैकरसिकां लावण्यलक्ष्मीमयीं
बालां बालतमालनीलवपुषं वन्दे परां देवताम् ॥६६॥

मैं उस बाल रूप धारण करने वाले श्रेष्ठ देवता को प्रणाम करता हूँ। उसका शरीर तमाल के कोंपलों जैसा नीला है। उसके बाल फूलमालाएँ और मोर पंखों से अलंकृत होने के कारण बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही सुंदर लगते हैं। उसके ऊपर अरण्य के फूलों की वर्षा होती है। पर्वत की गेरु मिट्टी का उसके भालपर एक सुंदर तिलक लगाया है। वह सौंदर्य का साक्षात् देवता है। उसको मुरली से सुधामधुर सुर छेड़ने की बड़ी (टेव) चाव है ॥६६॥

गुरुमृदुपदे गूढं गुल्फे घनं जघनस्थले
नलिनमुदरे दीर्घं बाह्वोर्विशालमुरःस्थले।
मधुरमधरे मुग्धं वक्त्रे विलासि विलोचने
बहु कचभरे वन्यं वेषे मनोज्ञमहो महः ॥६७॥

उसके शरीर की आभा क्या ही लुभावनी है। वह पाँवों में अति कोमलता जैसी प्रकट होती है। एड़ी के ऊपर बहुत गहरी, तो नितंबों में बहुत ठोस है। पेट के पास कमल जैसी, भुजाओं में लम्बी और छाती पर चौड़ी प्रतीत होती है। वही होठों पर आकर्षक, मुँहपर लालित्य लिए हुए और आँखों में मस्ती के साथ दीख पड़ती है। वही आभा बालों में विपुलता और भेष में जंगली दीखती है ॥६७॥

जिहानं जिहानं सुजानेन मौग्ध्यं
दुहानं दुहानं सुधां वेणुनादैः
लिहानं लिहानं सुदीर्घैरपाङ्गै-
र्महानन्दसर्वस्व मेतन्नमस्तात् ॥६८॥

यह जो नन्दका सुख निधान है (या परमानंद का सार है) उसे मैं प्रणाम करता हूँ। वह अपने तारुण्य से सौंदर्य को और बढ़िया बनाता है। वह मुरली के स्वरों से नित्य अमृत चुलाता है और अपनी विशाल चितवनों से (देखने वालों के हृदय) बार बार खींच लेता है ॥६८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लसद्बर्हापीडं ललितललितस्मेरवदनं
भ्रमत्क्रीडापाङ्गं प्रणतजनतानिर्वृतिपदम् ।
नवाम्भोदश्यामं निजमधुरिमामोदभरितं
परं देवं वन्दे परिमिलितकैशोरकरसम् ॥६९॥

शैशवी रमणीयता की जो मानों एकमेव मूर्ति है, उस सुरोत्तम (श्रीकृष्ण) को मैं नमस्कार करता हूँ। उसके सरपर मोरपंख चमकते हैं। उसका मुख मुसकुराहटों से बहुत ही कमनीय हो गया है। उसके घूमनेवाले कटाक्ष बहुत चुलबुले रहते हैं। वह शरणागतों का एक मात्र आनंदनिधान है। उसका वर्ण नवीन बादलों जैसा काला है और वह अपने मोद और मोहकता में मस्त है ॥६९॥

सारस्यसामग्र्यमिवाननेन
माधुर्यचातुर्यमिव स्मितेन ।
कारुण्यतारुण्यमिवेक्षितेन
चापल्यसाफल्यमिदं दृशोर्मे ॥७०॥

अपने वदनसे कान्ति सर्वस्व, मंदहासों से नटखटी रम्यता और दृष्टि से दयामय तरुणाई प्रकट करनेवाले इस श्रीकृष्णने मेरी आँखों की (चंचलता को सफल बनाया है ॥७०॥

यत्र वा तत्र वा देव
यदि विश्वसिमस्त्वयि ।
निर्वाणमपि दुर्वार—
मर्वाचीनानि किं पुनः ॥७१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जहाँ कहीं हों, यदि हमने आपपर पूरी श्रद्धा रखी, तो क्या मोक्ष दुर्लभ होगा ? फिर अवांतर बातों का क्या कहना ? ।७१।।

रागान्धगोपीजनवन्दिताभ्यां
योगीन्द्रभृङ्गेन्द्रनिषेविताभ्याम् ।
आताम्रपङ्केरुहविभ्रमाभ्यां
स्वामिन् पदाभ्यामयमञ्जलिस्ते ।।७२।।

प्रभो, तुम्हारे उन पाँवों को मैं नमस्कार करता हूँ (उन पाँवों पर मैं हाथ जोड़ता हूँ) जिन्हें प्रणयविह्वल गोपियाँ प्रणाम करती हैं, जिन (चरणकमलों) का आश्रय मुनिवररूपी भ्रमर करते हैं और जो लाल कमल जैसी मोहक ललाई लिए हुए हैं ।।७२।।

अर्थानुलापान्व्रजसुन्दरीणा —
मकृत्रिमाणां च सरस्वतीनाम् ।
आर्द्राशयेन श्रवणाञ्चलेन
संभावयन्तं तरुणं गृणीमः ।।७३।।

मैं उस युवा श्रीकृष्ण की कीर्ति गाता हूँ, जो गोकुल सुन्दरियों की साभिप्राय भोली प्रार्थनाओं को, अपने प्यारभरे कानों से सुनता है ।७३।।

मनसि मम सन्निधत्तां
मधुरमुखा मन्थरापाङ्गा ।
करकलितललितवंशा
कापि किशोरकृता लहरी ।।७४।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वह बालरूप अद्भुत एवं ललित कान्तिवाला तरङ्ग, वह कृष्ण, मेरे मन से कभी ओझल न होने पाए, जिसका मुँह सुंदर है, जिसके कटाक्ष चुलबुले हैं और जिसके हाथ में मधुर (ध्वनिवाली) मुरली है। ।।७४।।

रक्षन्तु नः शिक्षितपाशुपाल्या
बाल्यावृता बर्हिशिखावतंसाः ।
प्राणप्रियाः प्रस्तुतवेणुगीताः
शीताद्दशोः शीतलगोपकन्याः ।।७५।।

शीतल अर्थात् प्रसन्न गोपियाँ हमारी रक्षा करें। उन्होंने पशुपालन की विद्या (श्रीकृष्ण से) सीख ली थी। वे गोपियाँ नित्य बालरूपधारी कृष्ण के पास रहती थीं। वे मोर पंखों से अपनी चोटियों को सजाती थीं ।।७५।।

स्मितस्तबकिताधरं शिशिरवेणुनादामृतं
मुहुस्तरलोचनं मदकटाक्षमालाकुलम् ।
उरःस्थलविलीनया कमलया समालिङ्गितं
भुवस्तलमुपागतं भवनदैवतं पातु नः ।।७६।।

इस भूमिपर अवतार लेनेवाला वह त्रिभुवन का देवता हमारी रक्षा करे। उसके होंठ मानों मंदहासों के पुंज हैं। उसकी मुरली की सुधारस जैसी ध्वनि सबको शांति देती है। उसके नयन नित्य चंचल रहते हैं। उसने मदभरे कटाक्षों का हार धारण किया है। छातीपर विलास करनेवाली लक्ष्मी ने उसे गाढ़ आलिगन दिय है ।।७६।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नयनाम्बुजे भजत कामदुघं
हृदयाम्बुजे किमपि कारुणिकम् ।
चरणाम्बुजे मुनिकुलैकधनं
वदनाम्बुजे व्रजवधूविभवम् ।।७७।।

तुम उस श्रीकृष्ण की भक्ति करो जो अपने नेत्र कमलों से सब अभिलाषाएँ पूर्ण करता है, जिसका हृदयरूपी नीरज अपार दया से ओतप्रोत है, जिसके चरणपद्म मुनिजनोंका एकमात्र निधि है और जिसका मुख कमल गोकुल की स्त्रियों का मानों निर्वाणपद है ।।७७।।

निर्वासनं हन्त रसान्तराणां
निर्वाणसाम्राज्यमिवावतीर्णम् ।
अव्याजमाधुर्यमहानिधान—
मव्याद्व्रजानामधिदैवतं नः ।।७८।।

अन्य सब आनन्दों को परास्त करनेवाला, परम मुक्ति का अवतार ही प्रतीत होनेवाला. सहज सुंदरता की निरूपम राशि–वह गोकुल का प्रधान देवता, कृष्ण हमारी रक्षा करे ।७८।।

गोपीनामभिमतगीतवेषहर्षा—
दापीनस्तनभरनिर्भरोपगूढम् ।
केलीनां भवतु रसैरुपास्यमानं
कालिन्दीपुलिनचरं परं महो नः ।।७९।।

उस कृष्णके मोहक वेष और मधुर गीतों से गोपियों बहुत आह्लादित होकर उसे अपने पुष्ट स्तनों से गाढ़ आलिंगन देती हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम अपनी मधुर क्रीड़ाओं से उस श्रीकृष्ण की उपासना करें, जो यमुना के रेतीले मैदानोंपर विहार करनेवाला एक महान्, दिव्य, प्रकाश है ।।७९।।

खेलतां मनसि खेचराङ्गना-
माननीयमृदुवेणुनिस्वनैः ।
कानने किमपि नः कृतास्पदं
कालमेघकलहोद्वहं महः ॥८०॥

वह तेजो लहरी, (अर्थात् तेजस्वी श्रीकृष्ण) जिसने अपने मुरली की मीठी-मीठी लहरियों से देवांगनाओं को भी मुग्ध किया है, जो वनों में संचार करता है और जिसकी कान्ति काले बादल जैसी है, हमारे मनमें लहराती रहे ।।८०।।

एणीशावविलोचनाभिरलसश्रोणीभरप्रौढिभि-
र्वेणीभूतरसक्रमाभिरभितःश्रेणीकृताभिर्वृतः ।
पाणी द्वौ च विनोदयन् रतिपतेस्तूणीशयैः सायकै-
र्वाणीनामपदं परं व्रजजनक्षोणीपतिः पातु नः ॥८१॥

व्रज के लोगों का राजा, वह श्रीकृष्ण, हमारी रक्षा करे। वह उन गोपियों से घिरा हुआ रहता है जिनकी आँखें हिरनों की छौनों की आँखों के समान हैं, जो अपने नितंबों के भारके कारण मन्द और सुडौल गति से चलती हैं, और जिनमें अनुराग की भावना उमड़ती रहती है। वह श्रीकृष्ण मदनके हाथों को तरकससे बाण निकालने के काम में ही लगाता है। उस श्रीकृष्ण का वर्णन शब्दों से कभी नहीं किया जा सकता ।।८१।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कालिन्दीपुलिने तमालनिबिडच्छाये पुरःसंचरा-
त्तोये तोयजपत्रपात्रनिहितं दध्यन्नमश्नाति यः ।
वामे पाणितले निधाय मधुरं वेणु विषाणं कटि-
प्रान्ते गाश्चविलोकयन्प्रतिकलं तं बालमालोकये ॥८२॥

मैं उस बालकृष्ण को (अपने ध्यान में) देखता हूँ, जो सामने कलकल बहनेवाली यमुना के किनारे एक तमाल वृक्ष की घनी छाँह में बैठकर कमल पत्रों के दोने में रखा हुआ दही भात खा रहा हैं । उसने बायें हाथ में बाँसुरी रखी है, कमर के पास, बाजू में, सींग रखा है और (चरनेवाली) गायों पर वह हर क्षण नज़र रखता है ॥८२॥

यद्गोपीवदनेन्दुमण्डनमभूत्कस्तूरिकापत्रकं
यल्लक्ष्मीकुचशातकुम्भकलशव्याकोशमिन्दीवरम् ।
यन्निर्वाणनिधानसाधनविधौ सिद्धाञ्जनं योगिनां
तन्नः श्यामलमाविरस्तु हृदये कृष्णाभिधानं महः ॥८३॥

जो गोपियों के चन्द्रमुखों पर कस्तूरि के तिलक जैसे सोहता है जो लक्ष्मी के सुवर्णकुंभ जैसे स्तनों पर प्रफुल्ल कमल जैसे इठलाता है, और जो गोपियों को मोक्ष प्राप्ति के प्रयोगों में सिद्धांजन जैसे लगता है, वह श्रीकृष्ण नामक साँवला प्रकाश हमारे हृदयको आलोकित करे ॥८३॥

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुनादनिरतं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥८४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं अप्रतिम शरीरसौष्ठववाले और नित्य बाँसुरी बजानेवाले गोविन्द की भक्ति करता हूँ। उसके मुखचंद्र पर विकसित कमल की सुषमा चमकती है। सरपर मोरपंख खोंसना उसको बहुत पसन्द है। वह श्रीवत्स चिह्न और सुंदर कौस्तुभमणि धारण करता है। वह चमकदार पीला वस्त्र पहनता है। गोपियाँ अपने नेत्रपद्मों से ही उसकी पूजा करती हैं और वह नित्य गायों के झुण्डों और गोपों के समूहों से घिरा रहता है ॥८४॥

यन्नाभीसरसीरुहान्तरपुटे भृङ्गायमाणो विधि–
र्यद्वक्षः कमलाविलाससदनं यच्चक्षुषी चन्द्रिनौ।
यत्पादाब्जविनिःसृता सुरनदी शम्भोः शिरोभूषणं
यन्नामस्मरणं धुनोति दुरितं पायात्स नः केशवः ॥८५॥

जिसके नाभिरूपी सरोज के अंदर ब्रह्मा भ्रमर जैसे दीखता है, जिसकी छाती लक्ष्मीका केलिस्थल है, जिसकी दो आँखें चंद्र और सूर्य जैसी प्रकाशमय हैं, जिसके चरणकमलों से निकली हुई गंगा शिवके मस्तक को अलंकृत करती है और जिसके नाम का स्मरण करते ही सब पाप धुल जाते हैं, वह केशव हमारी रक्षा करे ॥८५॥

रक्षन्तु त्वामसितजलजैरञ्जलिः पादमूले
मीना नाभीसरसि हृदये मारबाणा मुरारेः।
हाराः कण्ठे हरिमणिमया वक्त्रपद्मे द्विरेफाः
पिञ्छाचूडाश्चिकुरनिचये घोषयोषित्कटाक्षाः ॥८६॥

गोपललनाओं की वे चितवनें, तुम्हारी रक्षा करें, जो मुरारि के पाँवोंपर दोनों हथेलियों से अर्पित कृष्णकमलों जैसी भाती हैं, जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी नाभिरूपी पुष्करिणी में मछलियाँ जैसी चमकती हैं, जो उसके छातीपर मदनशर जैसे चुभती हैं, जो उसके गले में नीलमणि की माला जैसी लिपटी रहती हैं, जो उसके मुखकमलपर भ्रमर जैसी प्रतीत होती हैं और जो (चितवनें) उसके केश संभार को मोर पंख जैसे विभूषित करती हैं ॥८६॥

दधिमथननिनादैस्त्यक्तनिद्रः प्रभाते
निभृतपदमगारं वल्लवीनां प्रविष्टः।
मुखकमलसमीरैराशु निर्वाप्य दीपान्
कवलितनवनीतः पातु गोपालबालः ॥८७॥

भोर के समय दही के मथन की आवाज़ से वह गोपबालक (बालकृष्ण) उनींद हुआ और चुपके से गोपियों के सदनों में घुस गया। वहाँ अपने मुखपद्म की फूँक से जल्दी-जल्दी दिये बुझाकर माखन के लच्छे खाने लगा। वह बालकृष्ण हमारी रक्षा करे ॥७८॥

प्रातः स्मरामि दधिघोषविनीतनिंद्र
निद्रावसानरमणीयमुखारविंदम्।
हृद्यानवद्यवपुषं नयनाभिराम-
मुन्निद्रपद्मनयनं नवनीतचोरम् ॥८८॥

मैं प्रभात में उस माखनचोर का स्मरण करता हूँ जो दही के मथने की आवाज़ से जगता है। नींद से जगते ही उसका कमल जैसा मुख बहुत ही मनोहर लगता है। उसका शरीर बेदाग और खूबसूरत है, उसकी आँखें विकसित कमलों जैसी एवं (देखनेवालों की) आँखों को अघानेवाली हैं ॥८८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फुल्लहल्लकवतंसकोल्लस-
द्वल्लमागमगवीगवेषितम् ।
वल्लवीचिकुरवासिताङ्गुली-
पल्लवं कमपि वल्लवं भजे ॥८९॥

उस अनूठे गोपबालक की मैं भक्ति करता हूँ, जिसके गाल कानों-पर से लटकनेवाले लाल कमलों से सुशोभित हुए हैं, पवित्र वेदों के मंत्र जिसे नित्य खोजते हैं और जिसकी कोंपलों जैसी कोमल उँगलियाँ गोपियों के बालों पर अठखेलियाँ करती हैं ॥८९॥

स्तेयं हरेर्हरति यन्नवनीतचौर्यं
जारत्वमस्य गुरुतल्पकृतापराधम् ।
हत्यां दशाननहतिर्मधुपानदोषं
यत्पूतनास्तनपयः स पुनातु कृष्णः ॥९०॥

वह श्री कृष्ण हमारी रक्षा करे, जिसकी माखनचोरी का स्मरण करते हुए चोरी का पाप धुल जाता है। गोपियों के साथ किए हुए उसके व्यभिचार का स्मरण करनेवालों का गुरु पत्नी गमन का दोष नष्ट होता है। उसके रावण वध के पराक्रम को स्मरण करनेवाले का हत्या पाप दूर होता है और उसकी पूतना के स्तन्यपान करने की कथा स्मरण कर मदिरा पान का अपराधी भी उस दोष से विमुक्त होता है ॥९०॥

मार मा वस मदीयमानसे
माधवैकनिलये यदृच्छया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्रीरमापतिरिहागमेदसौ
क: सहेत निजवेश्मलङ्घनम् ॥९१॥

रे मदन, तुम मेरे मनमें मनमाने ढंग से मत आ बसो। वहाँ तो अकेले माधव को ही स्थान है। जब लक्ष्मी का नाथ, श्रीकृष्ण, यहाँ आ जाएगा, तब वह अपने घरपर का यह अतिक्रमण कैसे सह सकेगा? ॥६१॥

आकुञ्चितं जानु करं च वामं
न्यस्य क्षितौ दक्षिणहस्तपद्मे।
आलोकयन्तं नवनीतखण्डं
बालं भजे कृष्णमुपानताङ्गम् ॥९२॥

किंचित् सिकुड़े हुए अपने बाये पाँव और घुटने को ज़मीनपर रखकर, दाहिने करकमल में रखे हुए माखन के गोले को देखते हुए जिसका पूरा शरीर झुक गया है, उस बालकृष्ण की उपासना मैं करता हूँ ।६२॥

जानुभ्यामभिधावन्तं
पाणिभ्यामतिसुन्दरम्।
सुकुण्डलालकं बालं
गोपालं चिन्तयेदुषः ॥९३॥

प्रातः काल में उस गोपशिशु का स्मरण करना चाहिये, जो अपने कान के आभूषणों और घुंघराले बालों के कारण बहुत ही सुंदर भाता है। घुटनों और हाथों के बल जब वह रेंगता है, तब तो वह मन को बरबस खींच लेता है ॥६३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विहाय कोदण्डशरौ मुहुर्तं
गृहाण पाणौ मणिचारुवेणुम् ।
मायूरबर्हं च निजोत्तमाङ्गे
सीतापते त्वां प्रणमामि पश्चात् ॥९४॥

थोड़ी देर के लिए धनुष्य और बाण तज कर तुम हाथ में रत्न जड़ित बाँसुरी थाम लो और अपने सर में मोर पंख लगाओ। उसके बाद, हे जानकीनाथ, मैं तुम्हें प्रणाम करूँगा ॥९४॥

अयं क्षीराम्भोधः पतिरिति गवां पालक इति
श्रितोऽस्माभिः क्षीरोपनयननाधिया गोपतनयः ।
अनेन प्रत्यूहो व्यरचि सततं येन जननी–
स्तनादप्यस्माकं सकृदपि पयो दुर्लभमभूत् ॥९५॥

यह समझकर कि यह क्षीरसागर का देवता है या गायों का पालन-हारा है– हमने उसका सहारा लिया, क्योंकि उससे हमें दूध लेना था। परंतु उसने अभिलाषा की पूर्ति में हमेशा के लिए एक विघ्न डाल रखा है। क्यों कि उसकी भक्ति के कारण अपनी माता का स्तन्य हमारे लिए एक बार भी मिलना मुश्किल हो गया। (पुनर्जन्म उसकी भक्ति से कभी नहीं प्राप्त होगा।) ॥९५॥

हस्तमाक्षिप्य यातोऽस्मि
बलात्कृष्ण किमद्भुतम् ।
हृदयाद्यदि निर्यासि
पौरुषं गणयामि ते ॥९६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अरे कन्हैया, मेरे हाथ को झटका देकर तुम तेजी से निकल गये। इसमें क्या बड़ी बात है। हाँ, तुम मेरे अन्तः करण से छुटकारा पा सको, तो तुम्हारी उस करतूतको पराक्रम समझूँगी ॥९६॥

तमसि रविरिवोद्यन्मज्जतामम्बुराशौ
प्लव इव तृषितानां स्वादुवर्षीव मेघः ।
निधिरिव विधनानां दीर्घतीव्रामयानां
भिषगिव कुशलं नो दातुमायातु शौरिः ॥९७॥

वह तमः सागर में यानी अज्ञानान्धकार में डूबे हुए लोगों को उदीयमान भास्कर जैसे भाता है। संसार समुद्र में गोते खानेवालोंका वह नौका जैसा है। जो (मोक्ष के) प्यासे हैं, उनको वह मधुर धाराओं की वर्षा करनेवाला बादल जैसा है। वह निर्धन लोगों के लिए धनकोश जैसा है। और चिरकाल तक घोर रोगों से पीडित जनों को वह एक कुशल वैद्य जैसे है। वह शूरसेनका पुत्र, कृष्ण, हमें क्षेम प्रदान करने के लिए यहाँ आ जाए ॥९७॥

कोदण्डं मसृणं सुगन्धि विशिखं चक्राब्जपाशाङ्कुशं
हैमीं वेणुलतां करैश्च दधतं सिन्दूरपुञ्जारुणम् ।
कन्दर्पाधिकसुन्दरं स्मितमुखं गोपाङ्गनावेष्टितं
गोपालं मदनाधिपं तमभजं त्रैलोक्यरक्षामणिम् ॥९८॥

त्रिभुवन का रक्षण करनेवाले दिव्य रत्न-श्रीकृष्ण–की मैंने उपासना की है। हाथों में वह कोमल धनु, सुवासित बाण, सुदर्शनचक्र, शंख, डोरी, अंकुश और सुनहरी बाँसुरी धारण करता है। उसका वर्ण कुंकुम के चूर्ण जैसा लाल है। वह मदनसे भी खूबसुरत है। उसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुखपर मुसकानें विलसती हैं, उसके इर्दगिर्द गोपियाँ रहती हैं और वह मदन का भी स्वामी है।९८।।

सायङ्काले वनान्ते कुसुमितसमये सैकते चन्द्रिकायां
त्रैलोक्याकर्षणाङ्गं सुरनरगणिकामोहनापाङ्गमूर्तिम् ।
सेव्यं शृङ्गारभावैर्नवरसभरितैर्गोपकन्यासहस्रै-
र्वन्देऽहं रासकेलीरतमतिसुभगं वश्यगोपालकृष्णम् ।।९९।।

त्रिभुवन को भी मोहित करनेवाले शरीर को धारण करनेवाला, देवों, मनुष्यों तथा वेश्याओं को अपने कटाक्षों से मुग्ध करनेवाला वह कृष्ण, बहार के दिनों में, वनप्रदेश के एक रेतीले मैदान में, चाँदनी-वाली शाम के समय, खड़ा रहता है। तब गोपियाँ नवरसों में विभोर होकर, प्रणय मधुर भावों से उस कृष्ण का आश्रय करती हैं। मैं उस बालकृष्ण को प्रणाम करता हूँ जो अतिमनोहर है, नित्य रासक्रीड़ा में मग्न रहता और भक्तों को (सुलभता से) वश होता है।।९९।।

कदम्बमूले क्रीडन्तं
बृन्दावननिवेशितम् ।
पद्मासनस्थितं वन्दे
वेणुं गायन्तमच्युतम् ।।१००।।

मैं उस अच्युत को प्रणाम करता हूँ, जो वृन्दावन में प्रवेश करके कदम्बवृक्ष के नीचे खेल खेलता है और वहाँ पद्मासन लगाकर मुरली बजाता है ।।१००।।

बालं नीलाम्बुदाभं नवमणिविलसत्किङ्किणीजालबद्ध-
श्रोणीजङ्घान्तयुग्मं विपुलरुरुनखप्रोल्लसत्कण्ठभूषन् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फुल्लाम्भोजाभवक्त्रं हतशकटमरुत्पूतनाद्यं प्रसन्नं
गोविन्दं वन्दितेन्द्राद्यमरवरमजं पूजयेद्वासरादौ ॥१०१॥

उस जन्मरहित किशोर गोविंद का, प्रभातकाल में भजन करना चाहिए। उसकी शोभा कृष्ण घन जैसी है। उसके दोनों नितम्बों और कमरके बीच सुंदर रत्नों से जड़ित और करधनियों से रुनझुननेवाली मेखला बांधी हुई है। उसके गलेमें रुरुके नखों की एक बड़ी माला है। उसके वदनपर विकसित कमलकी प्रसन्नता है। उसने शकट, वायु, पूतना इत्यादि राक्षस-राक्षसियों का वध किया है। वह नित्य आनंदी रहता है। इन्द्र आदि प्रमुखदेवता भी उसको प्रणाम करते हैं ॥१०१॥

वन्द्यं देवैर्मुकुन्दं विकसितकुरुविन्दाभमिन्दीवराक्षं
गोगोपीवृन्दवीतं जितरिपुनिवहं कुन्दमन्दारहासम्।
नीलग्रीवाग्र्यपिञ्छग्रथनसुविलसत्कुन्तलं भानुमन्तं
देवं पीताम्बराढ्यं यज यज दिनशो मध्यमाह्ने रमाय ॥१०२॥

मध्याह्न में उस पीतवसनधारी मुकुन्द की पूजा करो, यदि तुम सच्चा धन चाहते हो। उस मुकुन्द को सर्व देव आदरणीय मानते हैं। उसके मुख की शोभा प्रफुल्ल कमलों जैसी सुंदर लगती है। उसके नेत्र कमल समान प्रसन्न हैं। वह गोप और गायों के समूहों से घिरा रहता है और उसका हास्य कुन्द और मंदारके फूलों जैसे प्रसन्न रहता है। नीलमणि जैसे चमकीले मोर पंखों के कारण, उसके बाल बहुत ही चमकते हैं। उसका देह बहुत ही दीप्तिमान् है ॥१०२॥

चक्रान्तध्वस्तवैरिव्रजमजितमपास्तावनीभारमाद्यै-
रावीतं नारदाद्यैर्मुनिभिरभिनुतं तत्त्वनिर्णीतिहेतोः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सायाह्ने निर्मलाङ्गं निरुपमरुचिरं चिन्तयेन्नीलभासं
मन्त्री विश्वोदयस्थित्यपहरणपदं मुक्तिदं वासुदेवम् ॥१०३॥

वसुदेवपुत्र ने अपने सुदर्शन चक्र से अरिगणों का संहार किया और स्वयं अजेय बन गया। उसने पापियों का वध करके भूमि का बोझ कम कर दिया। सब देव उसके आसपास रहते हैं और परम सत्य के निर्णय के लिए नारद इत्यादि ऋषिवर उसकी कीर्ति गाते हैं। संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश इन तीनों का कारण, वही है। संसार के बंधनों से छुड़ानेवाले, पवित्र शरीर तथा नीलकान्ति धारण करनेवाले और असामान्य सौन्दर्यशाली, उस वासुदेव का भजन, शाम के समय करना चाहिए ॥१०३॥

कोदण्डमैक्षवमखण्डमिषुं च पौष्पं
चक्राब्जपाशसृणिकाञ्चनवंशनालम्।
बिभ्राणमष्टविधबाहुभिरर्कवर्णं
ध्यायेद्धरिं मदनगोपविलासवेषम् ॥१०४॥

गोप के समान विलोभनीय वेष धारण करनेवाले, मदन समान हरि का सदैव ध्यान करना चाहिए। उसका शरीर सूर्य जैसा तेजस्वी है। उसने अपनी आठ भुजाओं में—गन्नेका अटूट धनुष्य, कुसुमशर, सुदर्शनचक्र, शंख, पाश, रस्सी और सुनहरी मुरली—इतनी चीजें थाम रखी हैं ॥१०४॥

अङ्गुल्या कः कवाटं प्रहरति? कुटिले माधवः, किं वसन्तो?
नो चक्री, किं कुलालो? नहि धरणिधरः, किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः?।
नाहं घोराहिमर्दी, किमसि खगपतिर्नो हरिः, किं कपीन्द्रः?
इत्येवं गोपकन्याप्रतिवचनजितः पातु वश्चक्रपाणिः ॥१०५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

"कौन उंगलियों से दरवाज़ा खटखटा रहा है ?"

"अरी छली, मैं माधव हूँ !"

" तो क्या तुम वसन्त हो ?"

"जी नहीं । मैं चक्र धारण करता हूँ ।"

अच्छा, तो क्या तुम कुम्हार हो ?" "नहीं नहीं। मैं पृथ्वी को धारण करनेवाला हूँ ।

तुम क्या नागेंद्र हो ?"

"ना, ना, मैं तो भयंकर सर्पका (कालियाका) का दमन करने-वाला हूँ ।"

"तो तुम ज़रूर गरुड हो ।"

"नहीं जी, मैं हरि हूँ ।"

"क्या तुम वानरों के राजा हो ?"

इस तरह् गोपी की चुटीली बातों से हार पानेवाला, वह सुदर्शन चक्रवाला कृष्ण, आप की रक्षा करे ॥१०४।

राधामोहनमन्दिरादुपगतश्चन्द्रावलीमूचिवान्
राधे क्षेममयेऽस्ति तस्य वचनं श्रुत्वाऽह चन्द्रावली।
कंस क्षेममये विमुग्धहृदये कंसः क्व दृष्टस्त्वया
राधा क्वेति विलज्जितो नतमुखः स्मेरो हरिः पातु वः ॥१०६॥

एक दिन राधा के शानदार सदन से श्रीकृष्ण बाहर आ रहा था, कि चंद्रावली उसको दीख पड़ी। उससे कृष्ण ने पूछा, 'प्यारी राधे, कहो तो कुशल है न ?" उसका प्रश्न सुनकर चन्द्रावलीने पूछा-- क्यों कंस, कहिये ठीक है न ?" तब उसने (तपाक से) कहा—अरी पगली, कहाँ देखा कंस तुमने (वह तो कभीका मर गया है ।)?" उसने फिर पूछा–

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तो बोलो, राधा कहाँ देखी तुमने ?" तब शरमिंदा होकर उसने मुँह नीचे किया। उसके मुँह पर कुछ मुसकुराहट भी आ गयी। वह हरि तुम्हारी रक्षा करे ॥१०६॥

या प्रीतिर्विदुरार्पिते मुररिपो कुन्त्यर्पिते यादृशी
या गोवर्धनमूर्ध्नि या च पृथुके स्तन्ये यशोदार्पिते।
भारद्वाजसमर्पिते शबरिकादत्तेऽधरे योषितां
या प्रीतिर्मुनिपत्निभक्तिरचितेऽप्यत्रापि तां तां कुरु ॥१०७॥

हे मुरारि, विदुर और कुन्ती को जिस प्रकार तुमने प्रेम दिखाया, और जो प्रीत तुमने गोवर्धन के शिखर, सुदामा के चिडुओं या यशोदा के स्तन्य पान से जतलाई, या जो लगन तुमने भारद्वाज ऋषि, शबरी के उपहार, तथा गोपियों से लगाई और जो कृपा तुमने मुनि पत्नियों द्वारा भक्तिपूर्वक चढ़ाये हुए पदार्थोंपर दिखाई, वही कृपा इधर, मेरे ऊपर भी, दिखाओ न ? ।१०७।

कृष्णानुस्मरणादेव पापसङ्घातपञ्जरः।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्राहतो यथा ॥१०८॥

वज्र गिरते ही जैसे पर्वत के सैंकड़ो टुकड़े होते हैं, वैसे ही कृष्ण के बार बार स्मरण करने से भी पापों से भरा हुआ पिंजड़ा टूकटूक हों जाता है ॥१०८॥

॥ श्रीकृष्णकर्णामृतम् ॥

— तृतीय आश्वास समाप्त —

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाथाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

—: समाप्त :—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कृष्णकर्णामृत के श्लोकों की सूची

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
अ		
अखण्डनिर्वाण	१	९८
अखिलभुवनैक	१	८९
अग्रे दीर्घतरोऽयं	२	४३
अग्रे समग्रयति	१	६०
अङ्कुरितस्मेरदशा	३	४५
अङ्गनामङ्गना	२	३५
अङ्गुल्यग्रैररुण	२	५
अङ्गुल्या कः कवाटं	३	१०५
अञ्चितपिञ्छा	२	७७
अतन्द्रितत्रिजगदपि	३	४
अतिभूमिमभूमि	३	३३
अत्यन्त बालमतसी	२	१९
अधरबिम्बविडम्बित	२	१३
अधरे विनिवेश्य वंश–	२	१४
अधीर बिम्बाधर–	१	३६
अधीरमालोकितं	१	२७
अनन्यसाधारण	३	३२
अनुगतममरीणां	३	५१
अनुचुम्बतामविचलेन	३	४१
अन्तर्गृहे कृष्णं	२	५१
अपहसितसुधा	३	४१
अपाङ्गरेखाभि–	१	१०
अपि जनुषि परस्मिन्	२	९
अभिनवनवनीत	२	१
अमुनाऽखिलगोप	२	१६९
अमून्यधन्यानि	१	४१
अंसालम्बितवान–	२	१०४
अयं क्षीराम्भोधेः	३	६५
अयि परिचिनु चेतः	२	१०
अयि मुरलिमुकुन्द	२	११
अरण्यानामार्द्र	२	४६
अरुणाधरामृत–	३	१७
अर्थानुलापान्व्रज–	३	७३
अलसविलसन्मुग्ध–	३	५६
अवताराः सन्त्वन्ये	२	८४
अव्याजमञ्जुल	१	१५
अश्रान्तस्मितमरुणा	१	४४
अस्तिस्वस्तरुणी	१	२
अस्तिस्वस्त्ययनं	३	१
अस्तोकस्मितभर	१	२८
अहिमकरकरनिकर	१	५१
आ		
आकुञ्चितं जानु…	३	९२
आकृष्टे वसनाञ्चले	२	१०४
आचिन्वानमहन्यह	१	८६
आताम्रपाणि	२	४५
आताम्रायत	३	२९
आनन्देन यशोदया	२	५३
आनम्रामसितभ्रुवो	१	५४
आन्दोलिताग्रभुज	१	७०
आपटलाधरमधीर	३	६३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
आपादमाचूडं	३	५२
आभ्यां विलोचनाभ्यां	१	४३
आमुक्तमानुष	३	६
आमुग्धमर्धनाभ्यां	१	१९
अमूलपल्लवित	३	४७
आयामेन दृशोः	३	६०
आरूढवेणुतरुणा	३	३१
आर्द्रावलोकितदया	१	६७
आलोललोचनविलोकित	१	३६
इ		
इत्थं व्याहृतपूर्व	२	६६
ई		
ईशानदेवचरणा	१	११०
उ		
उत्तुङ्गस्तनमंडल	२	६३
उदारमृदुलस्मित	३	११
उपासतामात्म–	२	५४
ऊ		
ऊर्व्यां कोपि महींधरो	२	१०५
उलूखलं वा यमिनां	२	५६
ए		
एणीशावविलोचना	३	८१
एते लक्ष्मणजानकी	२	६९
एषु प्रवाहेषु स एव	३	३४
ओ		
ओष्ठं जिघ्रन्	२	६८
ओष्ठं मुञ्च हरे	२	७०
क		
कदम्बमूले क्रीडन्	३	१००
कदा नु कस्यां नु	१	६३

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
कदा वा कालिन्दी	१	२६
कन्दर्पकण्डूलकटाक्ष	३	२१
कन्दर्पप्रतिमल्ल	३	५
कमनीयकिशोर	१	७
करकमलदरदलित	१	५२
कराविन्देन	२	५७
करिणामलङ्घ्यगति	३	३
करौ शरदुदञ्चिता	१	८५
कर्णलम्बितकदम्ब	२	३१
कलक्वणितकङ्कण	१	२०
कलशनवनीत	२	८०
कस्तूरीतिलकं	२	१०८
कस्त्वं बालबला–	२	८१
कान्ताकुचग्रहण	१	९०
कामं सन्तु सहस्रशः	१	९९
कारुण्यकर्बुरकटाक्ष	१	२५
कालिन्दीपुलिने तमाल	३	८२
कालिन्दीपुलिनोदरेषु	२	६०
किङ्किणी किणीकिणी	२	७५
किञ्चित्कुञ्चित	२	६२
किमिव शृणुमः कस्य	१	४२
किशोरवेषेण	३	४२
कुरु मृदु पदे गूढं	३	६७
कुसुमशरशरसमर	१	५२
कृष्णानमेतत्पुनरुक्त	१	८३
कृष्णानुस्मरणादेव	३	१०८
कृष्णेनाम्ब गतेन	२	६४
कृष्णे हृत्वा सिचय	२	८
केकिकेकादृता	२	३६
केयं कान्तिः	१	९४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
कलासो नवनीतति	२	६१
कोदण्डं मसृणं	३	९८
कोदण्डमैक्षवमखण्ड	३	१०४
क्वापि वीणाभि :—	२	३७
ख		
खेलतां मनसि	३	८०
ग		
गलद्व्रीडा लोला	१	१०१
गायन्ति क्षणदा	२	१००
गोधूलिधूसरित कोमल-कुन्तलाग्रं	२	२६
गोधूलिधूसरितकोमल-गोपवेषं	२	४४
गोपालाजिरकर्दमे	२	८२
गोपीनामभिमत—	३	७९
घ		
घोषप्रघोषशमनाय	२	२३
घोषयोषिदनुगीत	३	१३
च		
चक्रान्तध्वस्तवैरि	३	१०३
चरणयोररुणं	३	६५
चातुर्यैकनिधान	१	३
चापल्यसीम चपला—	१	७३
चारुचन्द्रावली	२	३८
चारुचामीकरा	२	४०
चिकुरं बहुलं विरलं	१	६१
चित्रं तदेच्चरणा	१	८८
चिन्तामणिर्जयति	१	१
ज		
जगत्त्रयैकान्त	३	२४
जगदादरणीयजार	२	१७

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
जनगान्तरेऽपि जगदेक	३	३९
जयजयजयदेव	६	१०८
जयति गृहशिखीन्द्र	३	५४
जागृहि जागृहि	३	६४
जानुभ्यामभि	३	९३
जिहानं जिहानं	३	९३
जियादसौ शिखी	३	५९
त		
तत्कैशोरं तच्चवक्त्रं	१	५५
तत्त्वन्मुखं	१	९६
तदिदमुपनतं तमाल—	१	७२
तदेतदाताम्र	१	८४
तमसि रविरिवोद्य—	३	६७
तरुणारुणकरुणामय	१	१८
तुभ्यं निर्भरहर्ष	१	१०९
तृष्णातुरे चेतसि	३	९
तेजसेऽस्तु नमो	१	७५
ततो भावाः सकल	३	७
त्रिभुवनसरसाभ्यां	१	८०
त्वच्छैशवं त्रिभुवनाद्भुत	१	३२
त्वयि प्रसन्ने	२	९९
द		
दधिमथननिनादैः	३	८७
दिष्ट्या वृन्दावन	३	५३
दूराद्विलोकयति	१	७९
देवकीतनय	२	२९
देवक्या जठरा	२	९६
देवः पायात्पयसि	२	३
देवस्त्रिलोकसौभाग्य	१	१०३
धेनुपालदयिता	१	७६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
न		
नखनियमितकण्डू	२	४७
नमस्तस्मै यशोदाया:	२	८३
नयनाम्बुजे भजत	३	७७
नाद्यापि पश्यति	१	९३
निखिलभुवनलक्ष्मी	१	१२
निखिलागममौलि	३	१०
निधिं लावण्यानां	२	४५
निबद्धमुग्धाञ्जलि	१	३०
निर्वासनं हन्त	३	७८
निसर्गसरसाधरं	३	३५
नृत्यन्तमत्यन्त	२	६६
प		
परामृश्यं दूरे	१	४८
परिपालय न: कृपा	१	६२
पर्याकुलेन नयना	३	२०
पर्याचितामृतरसानि	१	३३
पल्लवारुणपाणि	१	९
पशुपालबाल	१	७१
प्रह्लादभागधेयं	२	७८
पाणौ पायस	२	७४
पाणौ वेणु: प्रकृति	३	३०
पादौ पादविनिर्जिता	१	५८
पारिजातं समद्धृत्य	२	४२
पिञ्छावतंसरचनोचित	१	३१
पीठे पीठनिषण्ण	२	९७
पुर: प्रसन्नेन मुखेन्दु	१	३४
प्रकृतिरवतु नो	३	४३
प्रणयपरिणता	१	१३
प्रात: स्मरामि	३	८८
प्रेमदं च मे कामदं	१	१०४
फ		
फुल्लहल्लकवतंस	३	८९
फुल्लेन्दीवरकान्ति	३	८४
ब		
बहुलचिकुरभारं	१	४०
बहुलजलदछाया	१	४७
बर्हं नाम विभूषणं	१	५९
बर्होत्तसविलासि	१	४
बालं नीलाम्बुदाभं	३	१०१
बालिकातालिका	२	४१
बालोऽपिनील	२	७३
बालोऽपिशैलोद्धरण	२	७२
बालोऽयमालोल	१	६९
बृन्दावनद्रुमतलेषु	२	२१
भ		
भक्तिस्त्वयि स्थिर-	१	१०७
भवनं भुवनं	१	१०२
भालेन मुग्धचपलेन	१	३५
भासतां भवभयैक	२	३०
म		
मणिनूपुरवाचालं	१	१६
मदमयमदमय	२	६१
मदशिखण्डिशिखण्ड	१	८
मधुरतरस्मितामृत	१	५
मधुरं मधुरं वपु	१	९१
मधुरमधरबिम्बे	१	६४
मधुरमन्दशुचि	३	५५
मधुरिमभरिते	३	२७
मधुरैकरसं वपु:	३	१९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
मध्ये गोकुल	२	८५
मनसि मनः सन्निधत्तां	३	७४
मन्दं मन्दं मधुर	२	६
मन्दार मूले मदना	१	१००
मम चेतसि स्फुरतु	१	१७
मयि प्रयाणाभिमुखे	३	३७
मयि प्रसादं मधुरैः	१	२९
मल्लैः शैलेन्द्र	२	१०२
मातः किं यदुनाथ	२	५६
मातर्नातः परमनुचितं	२	४
माधुर्यवारिधि मदा	१	१४
माधुर्यादपि मधुरं	१	६५
माधुर्येण द्विगुणशिशिरं	१	७४
माधुर्येण विजृम्भन्तां	१	१०५
मा यात पान्थाः	२	३४
मार मा वस मदीय	३	९१
मारः स्वयं नु मधुर	१	६८
माला बर्हमनोज्ञ–	३	६६
मुकुलायमाननयना	१	६
मुखारविन्दे	३	२८
मुनिश्रेणीवन्द्यं	३	४०
मुरलीनिनद	२	८८
मुरारिणा वारि	२	६३
मृगमदपङ्क	३	१६
मृदु क्वणन्नूपुर	१	७७
मौलिमालामिलत–	२	३६
मौलिश्चन्द्रकभूषणा	१	५७
मौलौ मायूर	२	९२
य		
यज्ञैरीजिमहे	२	६८

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
यत्र वा तत्र वा	३	७१
यद्गोपीवदनेन्दु	३	८३
यद्रोमरन्ध्र	२	२७
यद्वेणुश्रेणि	२	६५
यन्नाभीसरसीरुहा	३	८५
यस्मिन्नृत्यति यस्य	३	१६
यस्यात्मभूतस्य	२	११०
यानित्वच्चरितामृतानि	१	१०६
या प्रीतिर्विदुरार्पिते	३	१०७
यावन्न मे निखिल	१	३७
यावन्न मे नरदशा	१	३८
यासां गोपाङ्गनानां	२	६४
या शेखरे श्रुतिगिरां	२	१८
यां दृष्ट्वा यमुनां	२	२
र		
रक्षन्तु त्वामसित	३	८६
रक्षन्तु नः शिक्षित	३	७५
रत्नस्थले जानुचरः	२	५२
रागान्धगोपीजन	३	७२
राधाकेलिकटाक्ष	३	५७
राधा पुनातु जगद–	२	२५
राधामोहनमन्दिरा	३	१०६
राधाराधित	३	२
रामो नाम बभूव	२	७१
ल		
लग्नं मुहुर्मनसि	१	५०
लसद्बर्हापीडं	३	६९
लक्ष्मी कलत्रं ललिता	२	०
लावण्यवीचिरचिता	३	१८
लीलया ललितया	३	१४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
ल.लाटोप कटाक्ष	३	२२
लीलाननाम्बुज	१	४९
लीलायताभ्यां रस	१	४५
लोकानुन्मदयन्	२	१०९
व		
वक्षः स्थले च विपुलं	१	६६
विचित्र पत्रांङ्कुर	१	२२
वत्स जागृहि	२	६७
वत्सपालचरः	३	२६
वदने नवनीत	२	१५
वदनेन्दुविनिर्जितः	१	९५
वन्दे मुरारेश्चरणा	२	१५
वन्द्यं देवैर्मुकुन्दं	३	१०२
वयमेते विश्वसिमः	३	२५
वरमियमुपदेश	२	२८
विक्रेतुकामा किल	२	५५
विदग्धगोपाल	२	५०
विरणन्मणिनूपुरं	३	४८
विश्वोपप्लवशमनैक	१	५६
विहाय कोदण्डशरौ	३	६४
वेणीमूले विरचित	२	७
व्यत्यस्तपादमवतंसित	२	२२
व्रजजनमदयोजिन्	३	१२
व्रजयुवतिसहाये	२	४८
श		
शम्भो स्वागतं	२	५८
शरणमशरणानां	३	४९
शरणागत व्रज	३	२३
शिशिरीकुरुते कदा नु	१	२८
शुश्रूषसे यदि वचः	१	९७
शृङ्गाररससर्वस्वं	१	९२
शैवा वयं न खलु	२	२४
श्रीमन्दर्वर्हिशिखण्ड	३	६२
स		
स कोपि बालः	३	३६
सजलजलदनीलं	२	१२
सजल जलद नीलंदर्शितो	२	८६
सन्ध्यावन्दन भद्रमस्तु	२	१०६
समुच्छ्वसितयौवने	१	८७
सम्बाधे सुरभीणां	२	७६
सरसगुणनिकायं	२	८९
सर्वज्ञत्वे च मौग्ध्ये	१	८२
साचिसञ्चलित	२	३२
सारस्यसामग्र्यामिव	३	७०
सार्थं समृद्धैरमृता	१	२३
सायङ्काले वनान्ते	३	६९
साष्टाङ्गपातमभि	३	३३
सुकृतिभिरादृते	३	८
सुव्यक्तकान्तिभर	३	५०
सोऽयं मुनीन्द्रजन	१	८१
सोऽयं विलासमुरली	१	७८
स्कन्धावारसदो	३	६१
स्तेयं हरेर्हरति	३	६०
स्तोकस्तोकनिरुध्यमान	१	२१
स्मितललितकपोलं	२	८७
स्मितस्तबकिताधरं	३	७६
स्मितस्नुतवसुधा	३	५८
स्यन्दने गरुड	२	३३
स्वाती सपत्नी	२	६५
संविष्टो मणि	२	१०३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्लोकारंभ	आश्वास	श्लोक
संसारे किं सारं	२	७९
ह		
हस्तमाक्षिप्य	३	९६
हस्ताङ्घ्रिनिक्वणित	२	२०
हृदये मम हृद्यविभ्रमा	१	११
हे गोपालक	२	१०७
हे देव हे दयित	१	४०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ŚRĪ KṚṢṆA KARṆĀMṚTAM

Hindi Translation By :

Pramod Ganesh Lalye
40, Zeera, Secunderabad.

Price : 3-50

Printed at : Dakshina Bharath Press, Hyderabad-4.